संक्षेप

साहित्य अकादेमी की त्रिमासिक समाचार पत्रिका

जनवरी-फ़रवरी 2017

झलकियाँ

साहित्योत्सव
•
पुरस्कार अर्पण समारोह
•
संगोष्ठी
•
परिसंवाद
•
अनुवाद कार्यशाला
•
कविसंधि
•
कथासंधि
•
ग्रामालोक
•
लेखक से भेंट
•
अस्मिता
•
नारी चेतना
•
लेखक सम्मिलन
•
मेरे झरोखे से
•
साहित्य मंच

सचिव की क़लम से...

हर नया वर्ष हमारे लिए कुछ न कुछ नया ज़रूर लेकर आता है और हम भी उसका सहर्ष स्वागत करते हैं। 21—26 फ़रवरी 2017 अकादेमी के साहित्योत्सव का सप्ताह था। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी की वार्षिक प्रदर्शनी लगाई गई थी, जिसका उद्घाटन प्रख्यात संस्कृत विद्वान तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. सत्यव्रत शास्त्री ने किया। प्रदर्शनी में अकादेमी की वर्ष भर की गतिविधियों को चित्रों एवं प्रकाशनों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया था।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 अर्पण समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात भौतिक विज्ञानी और मराठी लेखक डॉ. विष्णु नार्लीकर थे। भव्य पुरस्कार अर्पण समारोह के उपरांत प्रसिद्ध नृत्यांगना सुश्री संध्या पुरेचा द्वारा भरत नाट्यम की प्रस्तुति मुख्य आकर्षण रहा। साहित्योत्सव के दौरान पहली बार अकादेमी के भाषा सम्मान अर्पण समारोह का भी आयोजन किया गया। भाषा सम्मान हल्बी, कुडुख एवं लद्दाखी भाषाओं के चार विद्वानों सर्वश्री हरिहर वैष्णव, निर्मल मिंज, लेजङ जमस्पल एवं थुप्सटन पालदन को प्रदान किया गया।

साहित्योत्सव के दौरान अकादेमी का वार्षिक संवत्सर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस बार का संवत्सर व्याख्यान 'ऐतिहासिक जीवनी का शिल्प' विषय पर प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. रामचंद्र गुहा ने दिया। अकादेमी से पुरस्कृत रचनाकारों ने लेखक सम्मिलन में अपनी रचना-प्रक्रिया को श्रोताओं के साथ साझा किया। 'युवा साहिती : नई फ़सल' शीर्षक से युवा रचनाकारों के एक सम्मिलन का आयोजन भी किया गया, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भाषाओं के रचनाकारों को एक मंच प्रदान किया गया।

साहित्योत्सव में 'आमने-सामने' कार्यक्रम के अंतर्गत अकादेमी पुरस्कार 2016 से पुरस्कृत लेखकों की प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों के बीच संवाद आयोजित किया जाता है। साहित्योत्सव के दौरान 'लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन', 'मातृभाषा संरक्षण', 'अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' विषयक संगोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिसमें देशभर की विभिन्न भाषाविदों एवं लेखकों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। साहित्योत्सव के दौरान आदिवासी लेखक सम्मिलन का भी आयोजन किया गया जिसमें पंद्रह भाषाओं के आदिवासी कवियों तथा लेखकों ने भाग लिया।

अकादेमी की कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी के अनुवाद पुरस्कार 2016 की घोषणा की गई। पुरस्कृत अनुवादकों की सूची अंदर के पृष्ठों पर प्रस्तुत है। 'भारत की अलिखित भाषाएँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन भी साहित्योत्सव के दौरान किया गया। साहित्योत्सव में बाल पाठकों के लिए 'आओ कहानी बुनें' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न स्कूलों के सैकड़ों बच्चों ने उत्साह से भाग लिया। साहित्योत्सव के दौरान हर शाम सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता रहा, जिसमें संताली आदिवासी नृत्य, बाउल गान, कच्छी संगीत की प्रस्तुति तथा पूर्वोत्तर के कलाकारों द्वारा लाई हारोबा, माव और काबुई नृत्यों की प्रस्तुति प्रमुख रही।

साहित्य अकादेमी की सामान्य सभा की बैठक में हिंदी के प्रख्यात साहित्यालोचक डॉ. नामवर सिंह को अकादेमी का महत्तर सदस्य चुना गया। साहित्य अकादेमी का यह सम्मान विशिष्ट साहित्यकारों के लिए सुरक्षित है और एक समय में इसके कुल 21 महत्तर सदस्य ही हो सकते हैं। हमें यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि अकादेमी द्वारा गत वर्ष पूरे देश में विभिन्न भाषाओं में 580 कार्यक्रम आयोजित किए गए तथा विभिन्न भाषाओं में 482 पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

इनके अतिरिक्त अकादेमी के नियमित कार्यक्रम समय-समय पर होते रहते हैं। उन सभी की संक्षिप्त एवं सचित्र झलक 'संक्षेप' के इस अंक में प्रस्तुत है।

हम अपने सभी लेखकों, विद्वानों, अनुवादकों, प्रतिभागियों और शुभचिंतकों के प्रति आभारी हैं।

शुभकामनाओं सहित,

— डॉ. के. श्रीनिवासराव

ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

संपादक की ओर से...

हमारे यहाँ ठीक से यह समझा ही नहीं गया कि लेखक/कवि की समाज में क्या भूमिका है?हमारे यहाँ तो अभी तक यही नहीं समझा गया कि लेखक या कवि होना मात्र बौद्धिक या प्रतिभावान होने से कहीं अधिक श्रेष्ठ है और उसकी ज़िम्मेदारियाँ एक निरपेक्ष बुद्धिजीवी से कहीं ज़्यादा हैं। समाज में लेखक और कवि की भूमिका आम लोगों की अपेक्षा कहीं पेचीदा ढंग की होती है। विशेषरूप से ऐसे देशों में जहाँ साक्षरता और आर्थिकता का ग्राफ़ नीचे हो, किताबें ख़रीदने और पढ़ने का रुझान कम होने के बावजूद प्रकाशक और धनवान तथा लेखक और ग़रीबतर हो और शे'र व अदब को समझने समझाने का मामला सिर्फ़ अदब लिखनेवालों तक सीमित हो, वहाँ उसके रचनाकार की वास्तविक भूमिका का निर्धारण इतना आसान नहीं। यहाँ एक और सवाल भी बहुत दिलचस्प है कि क्या हर रचना और हर साहित्य लेखन का कोई उद्देश्य होना ज़रूरी है?क्या शे'र व अदब और आर्ट की रचना स्वयं एक उद्देश्य नहीं?कार्ल युंग ने अपनी पुस्तक 'माडर्न मेन इन सर्च ऑफ़ सोल' में लिखा है कि शायर का काम है कि वह समाज की आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करे। यदि हम आध्यात्मिक आवश्यकता को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह साबित होता है कि किसी भी राष्ट्र की मनःस्थिति का दारोमदार उस राष्ट्र के कवियों, लेखकों और कलाकारों की सच्चाई और सामाजिक न्याय से संबद्धता पर है। रूहानियत, आध्यात्मिकता का पासवर्ड ही सच्चाई है। लेखक के पास सबसे बड़ा हथियार उसका लेखन है, जिससे वह अपनी जंग लड़ता है। यह जंग उसे एक समय में कई सीमाओं पर लड़नी पड़ती है। अब अगर उसका यह हथियार ही ज़ंगआलूद और खोखला होगा, पाखंड और झूठ से दूषित होगा तो वह अपनी भूमिका का निर्वाह सही ढंग से कैसे कर सकेगा?

अब एक सीधा और सादा-सा प्रश्न है कि क्या हमारे शायर व अदीब समाज में अपनी सही और सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं?इसका जवाब एक साधारण-सा 'ना' है। सच तो यह है कि हमारे अधिकतर लेखक अदब और अदबी राह के बजाए अपने लेखन के बलबूते पर छोटे छोटे व्यक्तिगत लाभ, पुरस्कार, शोहरत व नामवरी और झूठी प्रशंसा प्राप्त करने में एक दूसरे से आगे निकलने की कोशिश में व्यस्त हैं। कुछ तो अपना मूल छोड़कर ज़िंदगी में ही अपना इतिहास लिखने लिखवाने में लगे हुए हैं। प्रतियोगिता की जगह ईष्या ने ले ली है और यथाशीघ्र परिणाम प्राप्त करने की दौड़ ने समय से पहले रचनाकारों को पस्त कर दिया है। पहले किसी अदीब या शायर की पुस्तक का प्रकाशन लेखक के जीवन का एक वाक़या होता था। अब पुस्तक प्रकाशित होती है तो उसका लोकार्पण, प्रशंसा, पत्र-पत्रिकाओं और टीवी पर ख़बरें आते-आते साहिबे किताब तो कुछ दिन नज़र आते हैं, किंतु किताब का पाठ हमेशा के लिए गुम हो जाता है। कुछ को अगर छोड़ दिया जाए तो ज़्यादातर कवियों/लेखकों का सारा ज़ोर ज़िंदगी में प्राइड ऑफ़ परफ़ारमेंस लेने, नौकरियाँ पक्की करने, कला और साहित्य की सरकारी संस्थाओं के पद प्राप्त करने, साहित्यिक संगोष्ठियों और मुशायरों, कवि सम्मेलनों के द्वारा अपनी महानता का बखान करवाने, सिफ़ारिशों द्वारा विदेशी दौरों, समारोहों की अध्यक्षता और लोकार्पण जैसी गतिविधियों में बीत जाता है। ऐसे में साहित्य क्या और समाज में साहित्यकार की भूमिका क्या और कुछ वास्तव में लिखने वालों की क्या बिसात रह जाती है?

●

उर्दू के प्रसिद्ध प्रगतिवादी शायर फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ 13 फ़रवरी 1911 को सियालकोट में पैदा हुए। उन्होंने आरंभिक शिक्षा मौलवी इब्राहीम मीर सियालकोटी से प्राप्त की। तत्पश्चात् 1921 में स्काच मिशन स्कूल सियालकोट में दाख़िला लिया। मैट्रिक की परीक्षा मरे स्कूल सियालकोट से उत्तीर्ण की और फिर एफ़.ए. की परीक्षा भी वहीं से उत्तीर्ण की। बी.ए. और अंग्रेज़ी में एम.ए. गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से किया। बाद में ओरियंटल कॉलेज लाहौर से अरबी में भी एम.ए. किया। 1930 में एलिस फ़ैज़ से शादी की। 1942 में फ़ौज में कैप्टन की हैसियत से शामिल हो गए। 1943 में मेजर और फिर 1944 में लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर तरक़्क़ी पा गए। 1947 में फ़ौज से त्यागपत्र देकर वापस लाहौर आ गए। 1936 में सज्जाद ज़हीर और साहबज़ादा मसूद उल ज़फ़र के साथ मिलकर प्रगतिशील लेखक संघ के आंदोलन की बुनियाद डाली। मार्च 1951 को फ़ैज़ को रावलपिंडी साज़िश केस में सहयोग के आरोप में गिरफ़्तार किया गया। उन्होंने चार साल सरगोधा, साहिवाल, हैदराबाद और कराची की जेलों में गुज़ारे। फ़ैज़ के अनुसार –

वो लोग बहुत ख़ुशक़िस्मत थे, जो इश्क़ को काम समझते थे
या काम से आशिक़ी करते थे
हम जीते जी मसरूफ़ रहे, कुछ इश्क़ किया, कुछ काम किया
काम इश्क़ के आड़े आता रहा और इश्क़ से काम उलझता रहा
फिर आजिज़ आकर हमने, दोनों को अधूरा छोड़ दिया!!

2 अप्रैल 1955 को फ़ैज़ को रिहा कर दिया गया। काव्य-संग्रह 'ज़िंदाँ नामा' की ज़्यादातर नज़्में इसी अर्से में लिखी गईं। रिहा होने के बाद आपने परिवार सहित लंदन में रिहाइश अख़्तियार कर ली। 1984 में उनका देहांत हुआ। फ़ैज़ को सलाम।

अकादेमी की समाचार पत्रिका 'संक्षेप' के संपादन का दायित्व मुझे सितंबर 2014 में सौंपा गया था। तब से अब तक समाचार पत्रिका के नियमित संपादन एवं प्रकाशन का दायित्व कार्यालय के दूसरे नियमित कार्यों के साथ करता रहा हूँ। 30 जून 2017 को सेवानिवृत्त हो रहा हूँ, अतः मेरे शुभचिंतकों के हाथों में मेरे द्वारा संपादित यह अंतिम अंक है।

आप सभी को शुभकामनाओं सहित,

संपादक : डॉ. ख़ुर्शीद आलम
ई-मेल : khursheed_anam@yahoo.co.in

साहित्योत्सव 2017 का शुभारंभ

साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी 2016

21 फ़रवरी 2017

साहित्य अकादेमी के वार्षिक साहित्योत्सव का आरंभ अकादेमी की वार्षिक प्रदर्शनी से हुआ। प्रख्यात संस्कृत विद्वान तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. सत्यव्रत शास्त्री ने साहित्य अकादेमी की वार्षिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए संस्कृत आचार्यों द्वारा साहित्य के बारे में दी गई परिभाषाओं को उद्धृत करते हुए कहा कि साहित्यकार काव्य रचना करते हुए अपने लिए एक अलग संसार की रचना करते हैं, जो साहित्यिक रचना का रूप प्राप्त कर अजर-अमर हो जाता है। साहित्य अकादेमी को उन्होंने लेखकों की संस्था बताते हुए कहा कि देश में इसने अनुकरणीय मानक स्थापित किए हैं। इससे पहले अपने संक्षिप्त उद्गार में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अकादेमी की वर्ष 2016 की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए अकादेमी परिवार को बधाई दी।

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते प्रो. सत्यव्रत शास्त्री। साथ में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सचिव

अकादेमी प्रदर्शनी से पारंपरिक रूप से अकादेमी के वार्षिक आयोजन साहित्योत्सव का आरंभ होता है।

अकादेमी प्रदर्शनी में विगत वर्ष के दौरान अकादेमी की उपलब्धियों को रेखांकित किया जाता है, जिसके अंतर्गत छायाचित्रों के माध्यम से अकादेमी द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोहों, संगोष्ठियों, परिसंवादों, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों तथा विभिन्न कार्यक्रम शृंखलाओं में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ प्रस्तुत की जाती हैं। इसके अंतर्गत अकादेमी पुरस्कार प्राप्त लेखकों के छायाचित्र और उनसे संबंधित सूचनाओं का विशेष रूप से प्रदर्शित किया जाता है। कुल मिलाकर प्रदर्शनी को देखकर कोई भी अकादेमी के उद्देश्यों, कार्यों, गतिविधियों और अन्य संबंधित जानकारियों से परिचित हो सकता है।

द्वीप प्रज्वलित करते डॉ. के. श्रीनिवासराव एवं अन्य गणमान्य

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने वर्ष 2016 की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए बताया कि अकादेमी ने पिछले वर्ष 580 कार्यक्रम किए यानी हर 15 घंटे में एक कार्यक्रम, 482 पुस्तकें प्रकाशित कीं अर्थात् हर अठारह घंटे में एक पुस्तक का प्रकाशन। अकादेमी ने देशभर के 178 पुस्तक मेलों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

इस अवसर पर भारी संख्या में लेखक, कवि, पत्रकार, विद्वान तथा नगर के मणमान्य एवं मीडियाकर्मी उपस्थित थे। प्रदर्शनी का उद्घाटन अकादेमी के प्रांगण में किया गया था तथा प्रदर्शनी 21-26 फ़रवरी 2017 तक थी।

'मातृभाषा संरक्षण' विषयक संगोष्ठी

21-22 फ़रवरी 2017

साहित्योत्सव के पहले दिन अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 'मातृभाषा संरक्षण' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रतिष्ठित कन्नड लेखक एवं अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. एस. एल. भैरप्पा ने किया। उन्होंने कहा कि सभी शोध पत्र मातृभाषा में ही लिखे जाने चाहिए, और उनका अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होना चाहिए। इस अवसर पर प्रख्यात असमिया लेखक डॉ. ध्रुवज्योति बोरा ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि भारत की मातृभाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं की सुरक्षा, संरक्षण और विकास के लिए मजबूत राष्ट्रीय नीति की तत्काल आवश्यकता है, तभी भारतीय संस्कृति संरक्षित रह पाएगी। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए जीवन में मातृभाषा के महत्त्व और इसकी वर्तमान स्थिति पर संक्षिप्त चर्चा करते हुए लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण के लिए आगे आने का आह्वान किया। अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि मातृभाषा मनुष्य की सबसे प्राचीन स्मृति है। प्रो. तिवारी ने आधुनिक समय में उन 30 कारणों का सविस्तार उल्लेख किया जिनके माध्यम से हम अपनी भाषाओं को खोते जा रहे हैं। सत्रांत में अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया। संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित ओड़िया लेखक एवं अकादेमी के महत्तर सदस्य डॉ. सीताकांत महापात्र ने की। इस सत्र में सर्वश्री पलाश बरन पाल, उदय नारायण सिंह एवं मिशल सुल्तानपुरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री महापात्र ने कहा कि सृजनात्मक लेखकों के लिए मातृभाषा उनकी कल्पना शक्ति तथा उनके विचारों को तीव्रता प्रदान करती है। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा की अनिवार्यता पर ज़ोर दिया।

बीज वक्तव्य देते हुए डॉ. ध्रुवज्योति बोरा

ग्रामालोक

श्रेष्ठ साहित्य को देश के कोने-कोने में पहुँचाने की दृष्टि से 'ग्रामालोक' नामक कार्यक्रम शृंखला की परिकल्पना की गई है। यद्यपि अकादेमी द्वारा वर्षों से देश के ग्रामीण क्षेत्रों में भी साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है, लेकिन अकादेमी ने २०१६ की गाँधी जयंती (२ अक्तूबर) को चपलगाँव, सोलापुर, महाराष्ट्र में 'ग्रामालोक' के अंतर्गत प्रथम कार्यक्रम का आयोजन कर भारत के गाँवों में साहित्य पहुँचाने का विशेष संकल्प लिया है। 'ग्रामालोक' गाँवों में रहनेवाले उन लेखकों/ कवियों/ विद्वानों के लिए भी एक मंच का काम करेगा, जिन्हें पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते। आम जनता के बीच पढ़ने की आदत विकसित करने और साहित्यिक आस्वाद के प्रोत्साहन की अपनी प्रतिबद्धता के तहत अकादेमी २०१७ में अधिकाधिक गाँवों में कार्यक्रमों के आयोजन की योजना बना रही है।

भाषा सम्मान अर्पण समारोह

21 फ़रवरी 2017

साहित्योत्सव के दौरान पहली बार आयोजित अकादेमी के भाषा सम्मान अर्पण समारोह में हल्बी, कुड़ुख एवं लद्दाखी भाषाओं के चार विद्वानों सर्वश्री हरिहर वैष्णव, निर्मल मिंज, लोजङ जमस्पल एवं थुप्सटन पालदन को सम्मानित किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव के संक्षिप्त स्वागत भाषण के पश्चात् उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने सम्मानित विद्वानों का पुष्पगुच्छ और शॉल से अभिनंदन किया। ताम्रफलक एवं पुरस्कार राशि का चेक अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा प्रदान किए गए। प्रशस्ति पाठ अकादेमी के सचिव ने किए। समारोह में स्वीकृति वक्तव्य देने के क्रम में विद्वानों ने अपनी सृजन-यात्रा के अनुभव साझा किए तथा संक्षेप में अपनी भाषाओं की वर्तमान स्थिति और अपने द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया। स्वास्थ्यगत कारणों से श्री हरिहर वैष्णव तथा लोजङ जमस्पल समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। भाषा सम्मान अर्पण समारोह का आयोजन 21 फ़रवरी 2017 को किया गया।

हल्बी 'हल्बा' या 'हल्बी' आदिवासी समुदाय की भाषा है, जो मुख्यतः मध्य भारत का निवासी है। यह पूर्व भारोपीय परिवार की भाषा है। हल्बी पर हिंदी, छत्तीसगढ़ी, ओड़िया और मराठी का गहरा प्रभाव है। हल्बी बोलने वालों की संख्या 5 लाख से भी अधिक है। हल्बी भाषा मे अपने योगदान के लिए भाषा सम्मान से विभूषित श्री हरिहर वैष्णव (1955) सुपरिचित हल्बी अध्येता लेखक एवं अनुवादक हैं। पिछले 30 वर्षों से हल्बी लोक साहित्य को संरक्षित करते हुए उन्होंने हिंदी अंग्रेजी में उनका अनुवाद भी किया है।

श्री थुप्सटन पालदन को भाषा सम्मान से सम्मानित करते अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

लद्दाखी भाषा को भोटी के नाम से भी जाना जाता है, जो लद्दाख, भारत के लेह ज़िले की भाषा है। यह चीनी-तिब्बती परिवार की भाषा है, जो तिब्बती भाषा का प्रभाव लिये हुए है, लेकिन मानक तिब्बती से भिन्न है। भारत में इसके बोलनेवालों की संख्या एक लाख से ज़्यादा है। लद्दाखी भाषा में अपने योगदान के लिए भाषा सम्मान से विभूषित श्री थुप्सटन पालदन (1941) प्रतिष्ठित लेखक और विद्वान हैं। लद्दाखी भाषा एवं साहित्य के विकास के लिए चार दशकों से सक्रिय हैं। श्री लोजङ जम्सपल (1936) लद्दाखी, संस्कृत और तिब्बती भाषाओं के विद्वान हैं। पिछले पाँच दशकों से उनकी सक्रियता अनुकरणीय है।

कुड़ुख द्रविड़ भाषा परिवार की भाषा है, जो ओराँव एवं किसन आदिवासी समुदाय द्वारा बोली जाती है। मुख्य रूप से झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में इस समुदाय के लोगों का निवास है। बाङ्लादेश, नेपाल और भूटान में भी इस भाषा के बोलनेवाले बड़ी संख्या में रहते हैं। भारत में इसके बोलनेवालों की संख्या लगभग बीस लाख है। कुड़ुख भाषा के लिए भाषा सम्मान से विभूषित श्री निर्मल मिंज (1927) भाषा साहित्य तथा संस्कृति के विकास के लिए निरंतर सक्रिय हैं।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2016 की घोषणा

21 फ़रवरी 2017

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में मंगलवार, 21 फ़रवरी 2017 को आयोजित अकादेमी के कार्यकारी मंडल की बैठक में 22 पुस्तकों को साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2016 के लिए अनुमोदित किया गया। मलयाळम् और अंग्रेज़ी भाषाओं के पुरस्कार बाद में घोषित किए जाएँगे। पुस्तकों का चयन नियमानुसार गठित संबंधित भाषाओं की त्रिसदस्यीय निर्णायक समितियों की संस्तुतियों के आधार पर किया गया। पुरस्कार, पुरस्कार वर्ष के तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष के पहले के पाँच वर्षों (1 जनवरी 2010 से 31 दिसंबर 2014) के दौरान प्रथम प्रकाशित अनुवादों को प्रदान किए गए हैं।

भाषा	अनुवाद पुस्तक	अनुवादक
असमिया	उपनिषद-पद्यानुवाद	तपेश्वर शर्मा
बाङ्ला	सत्येर अन्वेषण	गीता चौधुरी
बोडो	थैंफाखि तहसिलदारनि थामानि थुंग्रि	बीरहास गिरि बसुमातारी
डोगरी	काले कां ते काला पानी	कृष्ण शर्मा
गुजराती	गीत गोविंद	वसंत परीख
हिन्दी	संत वाणी, खंड 3 एवं 4	पी. जयरामन
कन्नड	ए.के. रामानुजन आयद प्रबंधगळु	ओ.एल. नागभूषण स्वामी
क़श्मीरी	अख़ ख़्वाब अख़ तस्वीर	क़ाज़ी हिलाल दलनवी
कोंकणी	सांवळ्यां रेगो	मीना काकोडकार
मैथिली	मिथिलाक लोक साहित्यक भूमिका	रेवती मिश्र
मणिपुरी	ईबा लोईशिनखिद्रवा पूंसि वारी	अनीता निङ्गोबम
मराठी	लोकशाहीवादी अम्मीस दीर्घपत्र	मिलिंद चंपानेरकर
नेपाली	खोजी	ज्ञानबहादुर छेत्री
ओड़िया	आशीर्वादर रंग	मोनालिसा जेना
पंजाबी	औरत मेरे अंदर	अमरजीत कौंके
राजस्थानी	जीवो म्हारा साँवरा	रवि पुरोहित
संस्कृत	विविक्तपुष्पकरण्डः	रानी सदाशिव मूर्ति
संताली	भोग्नडी रेयाक दहिरे	गणेश ठाकुर हांसदा
सिंधी	भरत नाट्य शास्त्र	मोहन गेहाणी
तमिळ	पोरुप्पुमिक्क मणितर्कळ	पूर्ण चंद्रन
तेलुगु	वल्लभभाई पटेल	तंकशाला अशोक
उर्दू	आंगलियात	हक़्क़ानी-अल क़ासमी

डॉ. नामवर सिंह चुने गए साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य

22 फ़रवरी 2017

एक भारतीय लेखक के लिए साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता है। यह सम्मान विशिष्ट साहित्यकारों के लिए सुरक्षित है और एक समय में कुल 21 महत्तर सदस्य हो सकते हैं। साहित्य अकादेमी की सामान्य सभा की 22 फ़रवरी 2017 की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार हिंदी के प्रख्यात लेखक डॉ. नामवर सिंह को अकादेमी का महत्तर सदस्य चुना गया।

डॉ. नामवर सिंह हिंदी के प्रख्यात लेखक, आलोचक और विद्वान हैं तथा अनेक वर्षों से हिंदी में अग्रणी आलोचना-स्वर बने हुए हैं। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। वे *जनयुग* (साप्ताहिक) और *आलोचना* पत्रिका के संपादन से जुड़े रहे। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, सागर विश्वविद्यालय, जोधपुर विश्वविद्यालय एवं जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में हिंदी का अध्यापन किया है। दो बार महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी रहे। उन्हें अनेक प्रतिष्ठित सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें प्रमुख हैं : साहित्य अकादेमी पुरस्कार, हिंदी अकादमी, दिल्ली का शलाका सम्मान, हिंदुस्तानी अकादमी सम्मान, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का साहित्य भूषण सम्मान आदि। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं : *बक़लम ख़ुद, आधुनिक हिंदी की प्रवृत्तियाँ, छायावाद, पृथ्वीराज रासो की भाषा, इतिहास और आलोचना, वाद विवाद संवाद, दूसरी परंपरा की खोज, कहानी-नयी कहानी, हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योगदान, कविता के नये प्रतिमान* आदि।

लेखक से भेंट
रूपा बाजवा

22 फ़रवरी 2017

साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी पुरस्कृत भारतीय अंग्रेज़ी लेखिका रूपा बाजवा के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सुश्री बाजवा को उनके उपन्यास 'द सारी शॉप' के लिए 2004 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार दिया गया था।

सुश्री बाजवा ने अपनी रचना प्रक्रिया को साझा करते हुए बताया कि चेख़व और मंटो उनके प्रिय लेखक हैं। उन्होंने बताया कि वह इंजिनियरिंग की छात्रा रही हैं और उन्होंने 18 वर्ष की अवस्था में अमृतसर छोड़ दिया था और विभिन्न शहरों में शिक्षा ग्रहण एवं कार्य करती रहीं हैं।

श्रोताओं द्वारा उनकी रचना प्रक्रिया के बारे में बहुत से सवाल किए गए जिनके उत्तर सुश्री बाजवा ने बहुत सहजता से दिए।

सुश्री रूपा बाजवा

अकादेमी पुरस्कार 2016 अर्पण समारोह

22 फ़रवरी 2017

22 फ़रवरी 2017 की शाम को कमानी सभागार, नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 के विजेता लेखकों को अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अकादेमी पुरस्कार से विभूषित किया। ये पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यताप्राप्त 24 भारतीय भाषाओं के लिए दिसंबर 2015 में घोषित किए गए थे। पुरस्कार समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात भौतिक विज्ञानी और मराठी लेखक डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर थे। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने सभी पुरस्कृत लेखकों का माल्यार्पण कर उनका अभिनंदन किया तथा प्रशस्ति पाठ अकादेमी के सचिव द्वारा किया गया। अकादेमी के अध्यक्ष ने पुरस्कारप्राप्त 20 लेखकों को अंगवस्त्रम्, ताम्र फलक और एक लाख रुपए की पुरस्कार राशि का चेक प्रदान किए। डोगरी, अंग्रेज़ी, संस्कृत और सिंधी भाषाओं के पुरस्कृत लेखक किन्हीं कारणों से पुरस्कार ग्रहण करने के लिए उपस्थित नहीं हो सके।

बाएँ से : डॉ. विष्णु नार्लीकर, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं डॉ. चंद्रशेखर कंबार

समारोह का आरंभ वंदना से हुआ। तत्पश्चात् अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की उपलब्धियों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया तथा कहा की अकादेमी लेखकों का घर है। इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि अकादेमी के इस मंच और सभागार में पूरा देश उपस्थित है, जो इसकी विशिष्टता है। उन्होंने पुरस्कृत लेखकों को बधाई देते हुए कहा कि मैं पुरस्कार की बजाय सम्मान कहना पसंद करता हूँ, क्योंकि पुरस्कार में धन की गंध आती है, जो एक सच्चे साहित्यकार के लिए तुच्छ है। डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर ने कहा कि समाज के मूल्यों और संस्कृति को साहित्य ही संप्रेषित कर सकता है, तकनीकी नहीं; लेकिन साहित्य को तकनीकी की सहायता से बेहतर ढंग से संप्रेषित किया जा सकता है। ज्ञान के प्रभाव को भी केवल साहित्य और साहित्यकारों के द्वारा अभिव्यक्त किया जाना संभव है। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने पुरस्कृत लेखकों को बधाई दी और सभी का आभार व्यक्त किया।

पुरस्कार अर्पण समारोह के बाद सुश्री संध्या पुरेचा द्वारा नाट्य की प्रस्तुति की गई। पुरस्कार अर्पण समारोह में भारी संख्या में लेखक, कवि, अनुवादक, पत्रकार तथा मणमान्य उपस्थित थे।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 के विजेता

असमिया

ज्ञान पुजारी प्रख्यात असमिया कवि, अनुवादक तथा नाटककार हैं। पुरस्कृत कृति मेघमालार भ्रमण असमिया काव्य-संग्रह है। यह कृति विचारोत्तेजक, अर्थपूर्ण तथा रोज़मर्रा के जीवन की कठोर वास्तविकताओं का यथार्थवादी किंतु नियंत्रित शैली में चित्रण करती है।

बाङ्ला

नृसिंह प्रसाद भादुड़ी बाङ्ला तथा संस्कृत भाषा के प्रख्यात विद्वान हैं। पैंतीस से अधिक पुस्तकों के प्रणयन के अलावा कई आलेख, निबंध तथा शोधालेख भी लिखे हैं। पुरस्कृत कृति महाभारतेर अष्टादशी बाङ्ला निबंध-संग्रह है। इस संकलन के निबंध यह प्रदर्शित करते हैं कि किसी भी स्त्री चरित्र को महत्त्वहीनता अथवा 'नारीवाद' या 'पितृसत्ता' की आधुनिक समझ के आलोक में से किसी भी आधार पर अलग नहीं किया जा सकता।

बोडो

अंजली बसुमतारी प्रख्यात बोडो कवयित्री तथा लेखिका हैं। पाँच कविता-संग्रह के अलावा आपकी दो संपादित कृतियाँ प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति आं माबोरै दं दासों बोडो काव्य-संग्रह है, जो संसार में महिलाओं की दुर्दशा एवं उनके साथ हो रहे अन्याय से सरोकार रखता है।

डोगरी

छत्रपाल (जे.पी. सर्राफ़) प्रतिष्ठित डोगरी कथाकार, अनुवादक तथा पटकथा लेखक हैं। पुरस्कृत कृति चेता डोगरी कहानी-संग्रह है, जो विभिन्न सामाजिक मुद्दों से सरोकार रखता है तथा साधारण लोगों के दैनंदिन जीवन के विविध रंगों का निरूपण करता है। प्रत्येक कहानी मन को छूती है तथा भाषा प्रवाहमय, सरल है तथा प्रत्येक कहानी की शैली एवं कथा-वृत्तांत विभिन्न कथानकों एवं विन्यास पर आधारित है।

अंग्रेज़ी

जेरी पिंटो प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक, पत्रकार, अनुवादक, संपादक तथा पटकथा लेखक हैं। आपने कई कृतियों का लेखन, अनुवाद एवं संपादन किया है। पुरस्कृत कृति एम एंड द बिग हूम अंग्रेज़ी उपन्यास है, जो एक ही परिवार के चार सदस्यों के बारे में है, जिनमें माँ अत्यधिक अस्थिर मानसिक स्थिति से गुज़र रही है।

गुजराती

कमल वोरा प्रख्यात गुजराती कवि तथा लेखक हैं। संप्रति, आप एक प्रतिष्ठित त्रैमासिक पत्रिका एतद के सह-संपादक हैं। आपके तीन कविता-संग्रह प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति अनेकएक विविध भावभूमियों पर आधारित गुजराती काव्य-संग्रह है। संग्रह की सभी कविताएँ अत्यधिक सांकेतिक हैं तथा कवि ने संवेदनशील ढंग से छवियों को बुनते हुए इनके मध्य पर्याप्त अवकाश रखा है।

हिंदी

नासिरा शर्मा प्रख्यात हिंदी कथाकार, संपादिका, अनुवादिका एवं पटकथा लेखिका हैं। आपके अब तक दस उपन्यास, नौ कहानी-संग्रह, एक संस्मरण कृति, कई अनूदित एवं संपादित रचनाएँ, बाल साहित्य पुस्तकें प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति पारिजात इलाहाबाद की गंगा-जमुनी सम्मिश्रित संस्कृति की पृष्ठभूमि में मानवीय संबंधों की जटिलता एवं प्रासंगिकता को उजागर करनेवाला हिंदी उपन्यास है।

कन्नड

बोलवार महमद कुंञि प्रख्यात कन्नड कहानीकार एवं उपन्यासकार हैं। पुरस्कृत कृति स्वतंत्रायदा ओटा कन्नड उपन्यास है, जो आधुनिक भारत अर्थात् विभाजन के समय से लेकर समसामयिक भारत के ग्रामीण जीवन से सरोकार रखता है।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 के विजेता

कश्मीरी

अज़ीज़ हाजिनी प्रख्यात कश्मीरी लेखक तथा आलोचक हैं। आपकी अब तक पंद्रह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। पुरस्कृत कृति आने ख़ानः आलोचनात्मक निबंध-संग्रह है, जिसमें लाल वख़ से लेकर शेख़-ए-श्रुकी, ग़ज़ल, कश्मीरी नाटक, सूफ़ी शायरी, धार्मिक गद्य, समसामयिक कश्मीरी लेखन तक की कश्मीरी साहित्यिक परंपरा की विस्तृत शृंखला को समाविष्ट किया गया है।

कोंकणी

एड्वीन जे.एफ़. डिसोजा प्रख्यात कोंकणी कथाकार एवं आलोचक हैं। आपके तैंतीस उपन्यास, सौ कहानियाँ, सौ से अधिक आलोचनात्मक निबंध एवं आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। पुरस्कृत कृति काळें भांगार खाड़ी तेल आक्रमण के बीच फँसे मध्यमवर्गीय परिवार तथा इराकी हमले के दौरान मंगळूरु एवं कुवैत में बसे लोगों के जीवन पर आधारित कोंकणी उपन्यास है।

मैथिली

श्याम दरिहरे प्रख्यात मैथिली कथाकार एवं कवि हैं। आपकी उल्लेखनीय कृतियों में सरिसोमे भूत (कहानी-संग्रह); घुरी आउ मान्या (उपन्यास); क्षमा करब हे महाकवि (काव्य-संग्रह) शामिल हैं। पुरस्कृत कृति बड़की काकी एट हॉटमेल डॉट कॉम विविध भावभूमियों पर आधारित मैथिली कहानियों का संग्रह है, जो साधारण लोगों की ज़िंदगियों से सरोकार रखता है।

मलयाळम्

प्रभा वर्मा प्रख्यात मलयाळम् कवि, साहित्यकार, पत्रकार, गीतकार तथा संपादक हैं। पुरस्कृत कृति श्याममाधवम पंद्रह अध्यायों में विभक्त काव्योपन्यास है। यह कृति भगवान कृष्ण तथा उनके सांसारिक निवास के दौरान उनके प्रभाव में आनेवाले मनुष्यों के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है।

मणिपुरी

मोइराङ्थेम राजेन सुपरिचित मणिपुरी कहानीकार तथा कवि हैं। आपकी तीन कृतियाँ प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति चेपथरबा इशिङ्पुन मणिपुरी कहानी-संग्रह है। स्थानीय विषय उठाने के बावजूद लेखक ने कुशलतापूर्वक सरल शब्दों के प्रयोग द्वारा सार्वभौमिक तत्त्वों तथा सक्रियतावाद के संदेश को प्रतिपादित किया है।

मराठी

आसाराम मारोतराव लोमटे सुपरिचित मराठी लेखक हैं। संप्रति, आप *लोकसत्ता* में पत्रकार के रूप में कार्यरत हैं। आपके तीन कहानी-संग्रह इडा पिडा टळो, आलोक तथा धूळपेर प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति आलोक मराठी कहानी-संग्रह है। यह ग्रामीण स्थानों पर रहनेवाले आम आदमी के जीवन को उनकी समस्त जटिलता एवं विस्तार के साथ प्रस्तुत करनेवाली सशक्त कृति है।

नेपाली

गीता उपाध्याय प्रख्यात द्विभाषी लेखिका तथा अनुवादिका हैं। नेपाली तथा असमिया में आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति जन्मभूमि मेरो स्वदेश उत्तर-पूर्व में हुए स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि को लेकर लिखा गया नेपाली उपन्यास है। मनोरंजक कहानी, मुहावरेदार अभिव्यक्तियों के दक्ष परिनियोजन तथा भाषा के कुशल प्रयोग ने इस रचना को दिलचस्प बना दिया है।

ओड़िया

पारमिता शतपथी प्रख्यात ओड़िया लेखिका एवं अनुवादिका हैं। आपकी महत्त्वपूर्ण कृतियों में विविध अस्वप्न, कुरेइ फूल तथा नारीकबि ओ अन्यमने (कहानी-संग्रह) अपथचारिनि एवं अभिप्रेत कला (उपन्यास) शामिल हैं। पुरस्कृत कृति प्राप्ति ओड़िया कहानी-संग्रह है, जो मानवीय प्रारब्ध, विशेषरूप से महिलाओं से जुड़ी संभाव्य घटनाओं से संबद्ध है।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 के विजेता

पंजाबी

स्वराजबीर प्रख्यात पंजाबी कवि एवं नाटककार हैं। आपकी उल्लेखनीय कृतियों में अपनी अपनी रात, साहां थानी एवं 23 मार्च (कविता-संग्रह) तथा धर्म गुरु, कृष्ण, तस्वीरां, हक़ एवं अग्निकुंड (नाटक) शामिल हैं। पुरस्कृत कृति मस्सया दी रात पंजाबी नाटक है, जो पुत्र को जन्म देने के लिए एक स्त्री पर पड़नेवाले सामाजिक दबाव पर आधारित है। लेखक ने कुशलतापूर्वक इस समस्या के विभिन्न आयामों को दर्शाया है।

राजस्थानी

बुलाकी शर्मा प्रख्यात राजस्थानी कथाकार हैं। आपने अल्पवय से लिखना प्रारंभ किया तथा विभिन्न विधाओं में आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति मरदजात अर दूजी कहाणियाँ राजस्थानी कहानी-संग्रह है, जो राजस्थान के साधारण लोगों की पीड़ा एवं संघर्ष से सरोकार रखता है। अधिकांश कहानियाँ पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की स्थिति तथा उनके कष्टों एवं विलाप का यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करती हैं।

संस्कृत

सीतानाथ आचार्य प्रख्यात संस्कृत विद्वान एवं लेखक हैं। आपकी कई कृतियाँ प्रकाशित हैं तथा आपने सौ से अधिक शोध आलेख लिखे हैं। पुरस्कृत कृति काव्यनिर्झरी संस्कृत कविताओं का संग्रह है, जो विषयों की व्यापक शृंखला से संबद्ध तथा अपनी प्रतिभा एवं तीव्रता के कारण उल्लेखनीय है।

संताली

गोबिंद चंद्र माझी लब्धप्रतिष्ठ संताली कवि एवं लेखक हैं। संप्रति, आप सावँहेद आड़ंग के संपादक हैं। आपकी दो कृतियाँ प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति नाल्हा संताली कविता-संग्रह है, जो समकालीन संताल समाज में प्रचलित व्यापक मुद्दों को दर्शाता है। ये कविताएँ संताली समाज की अति सूक्ष्म समझ, संताली समाज के लोगों के मूल्यों तथा रीति-रिवाजों को चित्रित करती हैं।

सिंधी

नंदलाल जवेरी प्रतिष्ठित सिंधी कवि एवं लेखक हैं। आपकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति अखर कया सिंधी कविता-संग्रह है, जिसकी कविताएँ जीवन की व्यापकता तथा अंतर्विरोधों को दर्शाती हैं। संग्रह की कविताएँ विविध विषयों पर आधारित हैं, जो मानव अस्तित्व के कई मुद्दों से जुड़ी हैं तथा मानव जीवन की विशिष्टता और क्षुद्रता को एकसाथ चित्रित करती हैं।

तमिऴ

वन्नदासन (एस. कल्याणसुंदरम) प्रख्यात तमिऴ कवि, लेखक एवं समालोचक हैं। आपने तेरह कहानी-संग्रह, तेरह कविता-संग्रह, एक समालोचना पर आधारित पुस्तक, एक उपन्यास तथा आलेखों के दो खंडों का प्रणयन किया। पुरस्कृत कृति ओरु सिरु इसै तमिऴ कहानियों का संग्रह है, जो मानवता तथा पारस्परिक रिश्तों के गहरे भावों को प्रतिबिंबित करता है। इसकी कहानियाँ सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों तथा सरोकारों से भी पगी हुई हैं।

तेलुगु

पापिनेनि शिवशंकर प्रख्यात तेलुगु कवि, लेखक तथा समालोचक हैं। आपकी उल्लेखनीय कृतियों में स्तब्धता चलानम, आकुपच्चनि लोकंलो एवं रजनीगंधा (कविता-संग्रह), मुट्टी गुंडे एवं सागं तेरिचिन तलुपु (कहानी संग्रह), निशांता तथा द्रवाधुनिकता (समालोचना) शामिल हैं। पुरस्कृत कृति रजनीगंधा तेलुगु कविता-संग्रह है, जो वास्तविक जीवन की स्थितियों तथा भावनाओं को उजागर करता है।

उर्दू

निज़ाम सिद्दीक़ी प्रख्यात उर्दू आलोचक, लेखक तथा अनुवादक हैं। आपकी उर्दू में दस, अंग्रेज़ी में तीन तथा फ्रांसीसी में दो पुस्तकें प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति माबाद-ए-जदीदियत से नये अहद की तख़लीक़ियत तक उर्दू समालोचना है, जो साहित्यिक तथा सांस्कृतिक मुद्दों से संबद्ध है। इस कृति में साहित्यिक विधाओं में नए युग की सृजनात्मकता का उत्तर-आधुनिकता के व्यापक नज़रिए से समावेश किया गया है।

युवा साहिती : युवा लेखक सम्मिलन

23 फ़रवरी 2017

साहित्योत्सव के तीसरे दिन का आरंभ पूरे देश के युवा रचनाकारों की सृजनात्मकता को एक मंच पर प्रस्तुत करने के कार्यक्रम 'युवा साहिती : नई फ़सल' के साथ हुआ। प्रख्यात तमिळ लेखक बी. जयमोहन ने उद्घाटन भाषण प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रख्यात तेलुगु लेखक और लोकगीतकार गोरेटी वेनकन्ना उपस्थित थे। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए युवा लेखकों के लिए अकादेमी द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया। बी. जयमोहन ने उद्घाटन भाषण में पिछले सौ वर्षों में आधुनिक तमिळ काव्य में धर्म और संस्कृति की उपस्थिति पर अपनी बात प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि हमारे आधुनिक साहित्य में धर्म और संस्कृति के प्रतीक पश्चिमी दबाव के कारण लुप्त होते जा रहे हैं। जब कि नई पीढ़ी को भी धर्म और संस्कृति से वर्तमान को पहचानने की दृष्टि मिलनी चाहिए। तेलुगु गायक और लेखक गोरेटी वेनकन्ना ने दो गीत प्रस्तुत किए। सस्वर गाए गए इन गीतों ने श्रोताओं को बेहद प्रभावित किया। इसके बाद अविनुयो किरे (अंग्रेज़ी), प्रतिष्ठा पंड्या (गुजराती), निशांत (हिंदी), बी. रघुनंदन (कन्नड), समप्रीथा केश्वन (मलयाळम्) और मोइन शादाब (उर्दू) ने अपनी-अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। सभी कवियों ने एक कविता अपनी मातृभाषा में प्रस्तुत की तथा शेष कविताओं के अंग्रेज़ी/हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किए।

युवा साहिती के पहले सत्र में प्रख्यात लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास से युवा लेखकों का संवाद कराया गया। युवाओं ने उनकी रचना-प्रक्रिया तथा वर्तमान में विभिन्न दबावों के बीच उत्कृष्ट रचनाओं का सृजन कैसे हो पर उनकी राय जानी। मनोज दास ने युवा लेखकों को मिथकीय कहानियों का पुनर्लेखन करते हुए अथवा मिथकीय चरित्रों को पुनर्परिभाषित करते हुए विशेष ध्यान देना चाहिए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता अंतरा देव सेन ने

बाएँ से : बिपाशा बोरा, देवदान चौधुरी, अंतरा देव सेन एवं राजमणिखम

उद्घाटन भाषण देते हुए बी. जयमोहन

की और इसमें बिपाशा बोरा (असमिया), देवदान चौधुरी (अंग्रेज़ी) और एस. राजमणिखम (तमिळ) ने 'लेखन : जुनून या व्यवसाय' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र में वक्ताओं ने श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए। विमर्श में यह बात उभर कर सामने आयी की लेखन व्यवसाय की अपेक्षा जुनून ही ज्यादा है।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता कवि ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने की, जिसमें सायंतनि पुतातुंडा (बाङ्ला), परगत सिंह सतौज (पंजाबी), पूदूरी राजी रेड्डी (तेलुगु) और कोमल दयालानी (सिंधी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

चतुर्थ एवं अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कवि बोधिसत्व ने की, जिसमें केवल कुमार केवल (डोगरी), मुज़फ़्फ़र हुसैन दिलबीर (कश्मीरी), इकनाथ गाउँकर (कोंकणी), चंदन कुमार झा (मैथिली), सुशील कुमार शिंदे (मराठी), बुद्धिचंद्र हेइसनाम्बा (मणिपुरी), अमर बानिया लोहोरू (नेपाली), इप्शिता षड़ंगी (ओड़िया), राजू राम बिजारणिया 'राज' (राजस्थानी) और महेश्वर सोरेन (संताली) ने अपनी-अपनी कविताएँ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़ीं।

संवत्सर व्याख्यान

23 फ़रवरी 2017

साहित्योत्सव के अंतर्गत 23 फ़रवरी 2017 की शाम को प्रख्यात विद्वान एवं इतिहासकार डॉ. रामचंद्र गुहा ने अकादेमी की प्रतिष्ठित संवत्सर व्याख्यानमाला के अंतर्गत 'ऐतिहासिक जीवनी का शिल्प' विषयक व्याख्यान दिया। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए डॉ. गुहा का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पुष्पगुच्छ और किताबें भेंटकर उनका अभिनंदन किया।

संवत्सर व्याख्यान देते हुए डॉ. रामचंद्र गुहा

डॉ. गुहा ने बताया कि कैसे वेरियन एल्विन के जीवन एवं कृतित्व ने उन्हें एवं उनके दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल दिया। उन्होंने उनकी जीवनी लेखन के अपने प्रयत्न को संदर्भित करते हुए जीवनी लेखन की चुनौतियों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक जीवनी इतिहास का वह हिस्सा है, जो साहित्य से सबसे ज़्यादा जुड़ा हुआ है। इतिहास समाजशास्त्र और साहित्य के बीच डोलती है। इतिहासकारों द्वारा जीवनी लेखन से दूर रहने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने इसका पहला कारण धार्मिक विरासत को बताया। हिंदुत्व जैसे धर्म कर्म एवं पुनर्जन्म आधारित व्यवस्था पर अपने पारंपरिक विश्वास के नाते जीवनी लेखन के विरोधी हैं। दूसरा कारण वैचारिक विरासत है, विशेषकर मार्क्सवाद, चूँकि मार्क्सवाद व्यक्ति को कम महत्त्व देता है। तीसरा कारण इतिहास का समाजशास्त्र के प्रति झुकाव है, यद्यपि इतिहास साहित्य की शाखा के रूप में शुरू हुआ। चौथा कारण भारतीयों द्वारा अभिलेख की भिन्नताएँ हैं। देश के केंद्रीय एवं राज्य अभिलेखागार पूरी तरह अव्यवस्थित हैं। पाँचवा कारण यह है कि भारतीय जीवनी लेखन में प्रतिष्ठित व्यक्तियों के दोषों के उल्लेख में संकोची हैं। छठा कारण यह है कि जीवनी लेखन चुनौतीपूर्ण साहित्यिक विधा है। सातवाँ कारण यह है कि जीवनी लेखन में एक लेखक को अपने अहं को दबाकर दूसरे अहंकारी लेखक के बारे में लिखना होता है। मुख्यतः यही वे कारण हैं, जिनके कारण ऐतिहासिक जीवनियों को व्यापक स्वीकृति कभी नहीं मिली। उन्होंने जीवनी लेखन के चार केंद्रीय सिद्धांत बताए : (क) द्वितीयक चरित्र भी कहानी के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं, (ख) जीवनी लेखक को केंद्रीय चरित्र के अलावा भी अन्य स्रोतों को भी देखना चाहिए, (ग) जीवनी लेखक को पूर्वाग्रही नहीं होना चाहिए; तथा (घ) जीवनी लेखक दूसरी जीवनियों से प्रभावित नहीं होना चाहिए। व्याख्यान के बाद डॉ. गुहा ने सुधी श्रोताओं द्वारा की गई जिज्ञासाओं का भी शमन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लेखक, विद्वान और साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

साहित्य अकादेमी की पत्रिका के ग्राहक बनें

समकालीन भारतीय साहित्य (हिंदी द्वैमासिक)

(अतिथि संपादक : रणजीत साहा)

एक प्रति : 25 रु.

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 125 रु., त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क : 350 रु.

लेखक सम्मिलन

23 फ़रवरी 2017

23 फ़रवरी 2017 को 'लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 से पुरस्कृत लेखकों ने अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए, जिसकी अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष डॉ चंद्रशेखर कंबार ने की। सम्मिलन में उपस्थित 20 लेखकों ने संक्षेप में अपने विचार व्यक्त किए।

हिंदी के लिए पुरस्कृत नासिरा शर्मा ने कहा, "कभी जन्नत तो कभी दोज़ख़" यह वाक्य दरअसल मेरी ज़िंदगी का निचोड़ है और उसी स्वर्ग-नर्क को झेलते हुए मेरे किरदार मेरे लेखन के दायरे में साँस लेते नज़र आते हैं। ज़मीन पर बसी जन्नत व दोज़ख़ मेरी काया में प्रवेश कर मुझे अपनी सैर पर ले जाती है चाहे वह इलाहाद की गलियाँ हों या फिर पश्चिमी एशिया के सुलगते देश। जो आग आपको जला न रही हो मगर उसकी तपिश को आप दूर से महसूस करते हैं उसकी आँच आपको पिघलाती और पन्ने रंगवा लेती है।" ज्ञात हो कि उन्हें उनके उपन्यास 'पारिजात' पर यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

मैथिली में पुरस्कृत श्याम दरिहरे ने कहा, "जहाँ तक मैथिली कहानी लेखन का प्रश्न है तो वह मिथिला की विशिष्ट संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती आज भी दिखलाई देती है। पैदल यात्रा की आदी मैथिली कथा आज गगनगामी और अंतरिक्षचारी हो गई है। वह कथानक संबंधी सभी विषयों को अपने में यथोचित स्थान दे रही है। इतनी विविधता के बाद भी मैथिली कहानी एक अघोषित, अदृश्य और अपरिभाषित सांस्कृतिक सीमा रेखा के अंदर अपनी मैथिली मिठास को बचाए हुए है।"

मराठी में पुरस्कृत आसाराम लोमटे ने कहा, "बाज़ार में स्वास्थ्यकारक जीने के उत्पादनों की चाहे जैसी भरमार हो, लेखक को लेकिन स्वास्थ्यहारक लेखन ही करना चाहिए। मैं ऐसा लेखन करने की कोशिश में हूँ कि जिसके पढ़ने पर सवाल खड़े हों, नींद उड़ जाए, अनगिनत भौरों का छत्ता फूट पड़े और पढ़नेवालों को वे दंश करे। मैंने देखा है कि पैरों में काँटा चुभने पर होनेवाली पीड़ा को दूर करने के लिए उस जगह पर मोम लगाकर आग से दागा जाता है। लिखने को मैं इसी तरह की दागने की बात मानता हूँ।"

राजस्थानी में पुरस्कृत बुलाकी शर्मा ने अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बोलते हुए कहा कि आधुनिकता के इस दौर में भी किसी रचनात्मकता का उत्पादन नहीं किया जा सकता है। इसके लिए लेखक और रचनाकार का निर्मल-निश्छल मन आवश्यक होता है। सुधी पाठक ही किसी रचना के सच्चे आलोचक होते हैं। मैं अपने पाठकों और आलोचकों से सीखता और कुछ ग्रहण करता रहा हूँ।

कश्मीरी लेखक अज़ीज़ हाजिनी ने कहा कि कवि और लेखक कोई देवदूत या किसी दूसरी दुनिया के लोग नहीं होते वो ही आम आदमी की तरह होते हैं जिनकी सृजनात्मक क्षमताएँ कुछ अलग होती हैं। समाज की विभिन्न गतिविधियों में शामिल होते हुए लिखते समय वे उनसे अलग होकर कुछ बेहतर कह पाते हैं।

इस अवसर पर ज्ञान पुजारी (असमिया), नृसिंह प्रसाद भादुड़ी (बाङ्ला), अंजली बसुमतारी (बोडो), कमल वोरा (गुजराती), बोलवार महमद कुंञि (कन्नड), एड्वीन जे.एफ़ डिसोजा (कोंकणी), प्रभा वर्मा (मलयाळम्), मोइराङ्थेम राजेन (मणिपुरी), गीता उपाध्याय (नेपाली), पारमिता शतपथी (ओड़िया), स्वराजबीर (पंजाबी), गोविंद चंद्र माझी (संताली), वन्नदासन (तमिळ), पापिनेनी शिवशंकर (तेलुगु) एवं निज़ाम सिद्दीकी (उर्दू) ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

अपने विचार व्यक्त करते उर्दू के पुरस्कृत लेखक निज़ाम सिद्दीक़ी
साथ में अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए

आमने-सामने : पुरस्कृत लेखकों से साक्षात्कार

24 फ़रवरी 2017

24 फ़रवरी 2017 को साहित्योत्सव के चौथे दिन की शुरुआत 'आमने-सामने' कार्यक्रम से हुई, जिसमें साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 से पुरस्कृत लेखकों की प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों से बातचीत करवाई जाती है। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कार्यक्रम आरंभ करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य लेखकों को सीधे पाठकों से रू-ब-रू कराना है।

सर्वप्रथम हिंदी लेखिका नासिरा शर्मा से अशोक तिवारी ने बातचीत की। विभाजन को लेकर पूछे गए एक सवाल के बारे में जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि इसमें एक हिंसा लोगों ने प्रत्यक्ष झेली तो दूसरे लोगों ने मानसिक हिंसा झेली है। उन्होंने लेखन को किसी विशेष खाने में बाँटने पर नाराज़गी जताते हुए कहा कि मैं पूरी दुनिया के लिए लिखती हूँ आधी दुनिया के लिए नहीं।

कमल वोरा से बात करते हुए
दिलीप झावेरी

नासिरा शर्मा से बात करते हुए अशोक तिवारी

मराठी भाषा के पुरस्कृत लेखक श्री आशाराम लोमटे से डॉ. रणधीर शिंदे ने साक्षात्कार किया। अपनी कहानियों को लेकर किए गए सवालों के जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि ग्रामीण जीवन पर आधारित पहले की कहानियाँ शायद ही मनोरंजक होती थीं। उन्होंने गाँवों की बदलती राजनीति और जीवन-मूल्यों के विघटन पर चिंता ज़ाहिर की।

गुजराती के पुरस्कृत लेखक श्री कमल वोरा से डॉ. दिलीप झवेरी ने बातचीत की। उन्होंने कहा कि कविता उनके लिए स्वयं के आविष्कार का ही माध्यम नहीं है, बल्कि यह भाषा को उसकी संपूर्ण प्रभावान्वितियों के साथ खोजने का प्रयत्न है। उनका मानना है कि संपूर्ण कविता कभी भी संभव नहीं, यदि कभी ऐसा हुआ तो कविता लिखने की कोई ज़रूरत ही नहीं रह जाएगी।

तेलुगु के पुरस्कृत लेखक डॉ. पापिनेनी शिवशंकर से श्री अमरेंद्र दासारी ने साक्षात्कार लिया। डॉ. शिवशंकर ने अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में बताया और कहा कि गहन भावनात्मक अनुभूतियों के लिए वे कविताएँ लिखते हैं, जबकि विवरणात्मक अभिव्यक्तियों के लिए कहानी अथवा निबंध का सहारा लेते हैं।

ओड़िया की पुरस्कृत लेखिका श्रीमती पारमिता सतपथी से डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने बातचीत की। श्रीमती सतपथी ने कहा कि महिलाओं की विनम्रता को उनकी कमज़ोरी नहीं मानना चाहिए। वास्तव में प्रत्येक स्त्री किसी भी प्रकार की कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम है। मेरा लेखन स्त्रीत्व की खोज और स्त्री की पहचान से जुड़ा हुआ है।

कश्मीरी के पुरस्कृत लेखक श्री अज़ीज़ हाजिनी से श्री फ़ारूक़ फ़ैयाज़ ने साक्षात्कार लिया। सवालों के जवाब देते हुए उन्होंने अपनी रचनात्मक यात्रा और अपने ऊपर पड़े प्रभावों का ज़िक्र किया। भूमंडलीकरण के दुष्प्रभावों के प्रति उन्होंने चिंता जताई और कहा कि मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है।

साक्षात्कार के दौरान श्रोताओं ने भी निस्संकोच अपने प्रिय लेखकों से सवाल पूछे, जिनके उन्होंने संतोषजनक जवाब दिए।

पारमिता शतपथी से बात करते हुए
राजेंद्र प्रसाद मिश्र

'लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन' विषयक संगोष्ठी

24-26 फ़रवरी 2017

साहित्योत्सव के दौरान 24 फ़रवरी 2017 को 'लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन' विषयक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। संगोष्ठी का उद्घाटन वक्तव्य प्रतिष्ठित लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. मनोज दास ने दिया। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए लोकसाहित्य के महत्त्व और प्रासंगिकता पर संक्षेप में प्रकाश डाला और कहा कि इनमें समाज की सांस्कृतिक परंपराएँ ही नहीं, वरन् ऐतिहासिक साक्ष्य भी अभिलेखित हैं।

अपने उद्घाटन भाषण में प्रो. मनोज दास ने कहा कि लोकसाहित्य हमारे साहित्य का व्यापक हिस्सा है तथा प्रायः मिथक एवं किंवदंतियों से इन्हें अलग करना मुश्किल होता है। महाकाव्यों को स्थानीय परंपराओं में तो अपनाया ही गया है, महाकाव्यों ने भी अपने लोक परंपराओं को समाहित किया है। उन्होंने लेखकों से अपील की कि वे लोकशैलियों में रचनाएँ करें, ताकि इन्हें लुप्त होने से बचाया जा सके।

बीज-वक्तव्य देते हुए प्रख्यात लोक साहित्य अध्येता प्रो. जवाहरलाल हांडू ने कहा कि वाचिकता लोकसाहित्य की ताक़त है, कमज़ोरी नहीं। हमारे देश की वाचिक परंपराएँ हज़ारों वर्षों से सफलतापूर्वक संरक्षित देशज ज्ञान व्यवस्था का प्रमाण हैं। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि अंग्रेज़ी लेखक प्रो. ताबिश खेर ने कहा कि हमारे देश के महाकाव्यों की कथाएँ बार-बार कही गई हैं, कही जा रही हैं और आगे भी कही जाती रहेंगी।

अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भारतीय लोकसाहित्य की देश-देशांतर तक की यात्रा को संदर्भित किया तथा कहा कि भारत के लोकसाहित्य को अभिलेखित करने का प्रारंभिक काम विदेशियों ने किया। उन्होंने यह भी कहा कि हमें यह ग़लतफ़हमी नहीं पालनी चाहिए कि लोकसाहित्य केवल वाचिक ही होता है, हमारे लिखित साहित्य का बहुत बड़ा हिस्सा भी लोकसाहित्य ही है।

समापन वक्तव्य देते अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार

सत्रांत में समाहार वक्तव्य देते हुए अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि लोकसाहित्य संकट से गुज़र रहा है, जो लगातार गहराता ही जा रहा है। उन्होंने कहा कि ख़तरा औद्योगीकरण अथवा संचार-क्रांति का नहीं है, क्योंकि लोकसाहित्य इनका सामना कर सकता है। ख़तरा आत्म-सजगता की कमी को लेकर है।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र डॉ. प्रतिभा राय की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री प्रकाश प्रेमी, प्रो. एच. एस. शिवप्रकाश और श्री हासु याज्ञिक ने क्रमशः डोगरी, कन्नड और गुजराती के आधुनिक साहित्य में लोकसाहित्य के पुनर्कथन पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. पी. राजा ने की, जिसमें प्रो. सूर्य धनंजय, प्रो. ए. अच्युतन और डॉ. रतन हेंब्रम ने क्रमशः तेलुगु, मलयाळम् एवं संताली साहित्य में लोकसाहित्य के आधुनिक पुनर्कथन पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

त्रिदिवसीय संगोष्ठी के दूसरे दिन तीसरा सत्र प्रो. जेंसी जेम्स की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो 'लोकसाहित्य एवं धार्मिक प्रथाएँ' पर केंद्रित था। इस सत्र में सर्वश्री मनजीत महंत, टी. धर्मराज और बलवंत जानी ने क्रमशः 'पारंपरिक ओराँव समाज में लोक विश्वास और धार्मिक प्रथाओं के कुछ आयाम', 'तमिळ समाज में साहित्य की वाचिकता' एवं 'लोकज्ञान और धार्मिक लोक गतिविधियाँ' शीर्षक अपने आलेख पढ़े। प्रो. जेम्स ने कहा कि लोकसाहित्य का कथन एवं पुनर्कथन दोनों ही चुनौतीपूर्ण हैं तथा महाकाव्यों के संदर्भ में कालजयी पाठ का पूरक विमर्श भी।

चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. मालाश्री लाल

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. भालचंद्र नेमाड़े
साथ में बाएँ से : प्रो. प्रदीप ज्योति महंत, डॉ. काशीनाथ वी. बरहटे एवं डॉ. अनिल बोरो

ने की, जो 'लोक साहित्य एवं कहानी सुनाने की कला' पर केंद्रित था। इस सत्र में श्रीमती तानाश्री रेड्डी, डॉ. पी. राजा एवं श्रीमती फ़ातिमा सिद्दीकी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. लाल ने अभिलेखित लोकसाहित्य और जीवंत लोकसाहित्य के अंतर को स्पष्ट किया और चंबा आदिवासी समाज से जुड़े अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि वाचिक परंपराएँ प्रायः पुरानी पीढ़ी द्वारा ही याद की जाती हैं। अन्य विद्वानों ने विभिन्न संदर्भों और उदाहरणों के माध्यम से भारतीय भाषाओं में कहानी कहने की कला के आरंभ, विकास और वर्तमान स्थिति पर अपने विचार व्यक्त किए।

'इक्कीसवीं शताब्दी में लोक साहित्य की प्रासंगिकता' पर केंद्रित पाँचवें सत्र की अध्यक्षता प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने की, जिसमें सर्वश्री अरविंद पटनायक, डॉ. राघवन पय्यनाड एवं एच. सी. बोरलिंगय्या ने अपने आलेखों का पाठ किया। प्रो. सिंह ने कहा कि लोकसाहित्य मानवीय ज्ञान का अजस्र स्रोत है। इक्कीसवीं सदी में उच्च तकनीक की उपलब्धता और आवागमन के तीव्र साधनों के कारण संपूर्ण दुनिया के लोकसाहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के अवसर सामने हैं। अन्य वक्ताओं ने अपने आलेखों के माध्यम से यह बात उजागर की कि लोकसाहित्य अपने गहरे सरोकारों के कारण आज भी प्रासंगिक है।

छठा सत्र 'प्रदर्शनकारी लोकसाहित्य' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। इस सत्र में श्री एच. ननी कुमार ने मणिपुर की प्रदर्शनकारी लोककलाओं पर केंद्रित अपना आलेख पढ़ा, जबकि श्री जेठो लालवाणी ने सिंधी भगत के प्रदर्शन पर अपने विचार रखे। डॉ. कंबार ने कहा कि लोकसाहित्य किसी भी समुदाय, समाज और देश का प्राथमिक स्वर है और इसे बहुत संयम और सावधानी से सुना जाना चाहिए।

इस त्रिदिवसीय संगोष्ठी के अंतिम दिन सातवाँ सत्र प्रो. भालचंद्र नेमाड़े की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो 'लोक साहित्य : बहुभाषी परिप्रेक्ष्य' पर केंद्रित था, जिसमें डॉ. अनिल बोरो, डॉ. काशीनाथ वी. बरहटे एवं प्रो. प्रदीप ज्योति महंत ने अपने आलेख पढ़े। डॉ. अनिल बोरो ने कहा कि लोकसाहित्य पूर्वोत्तर भारत जैसे बहुभाषी समाज में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परंपराभिमुखी जिस समाज में हम हैं, वह लोकसाहित्य से भरपूर है, चाहे वह गीत हो, कहानियाँ हों अथवा प्रथाएँ। डॉ. काशीनाथ वी. बरहटे ने कहा कि भारतीय संस्कृति की विशिष्टता इसकी बहुभाषिकता और संस्कृति बहुलता में ही है। उनका आलेख 'कोर्कू उप-जनजाति और कोर्कू भाषा' पर केंद्रित था, जिसमें उन्होंने विस्तार से इसके इतिहास और क्षेत्र का वर्णन किया। डॉ. प्रदीप ज्योति महंत ने असम स्थित वैष्णव सत्रों की विशिष्ट परंपराओं पर अपना आलेख पाठ किया। उन्होंने संत गुरुओं से संबंधित आख्यानों के हवाले से अपनी बात कही।

आठवें सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रदीप ज्योति महंत ने की, जो 'लोक आख्यान' पर केंद्रित था। इस सत्र में श्री रमेंद्र कुमार, डॉ. वरुण चक्रवर्ती और डॉ. सुरजीत सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री रमेंद्र कुमार ने लोककथाओं और मिथकों के अंतर्संबंधों पर अपना आलेख पाठ करते हुए कहा कि कभी-कभी ये एक-दूसरे से इतना अधिक प्रभावित रहते हैं कि इन्हें अलग करना मुश्किल हो जाता है। डॉ. वरुण चक्रवर्ती ने कहा कि लोककथाएँ सर्वाधिक आकर्षक होती हैं। ये सहजता से हर उम्र के लोगों को मोह लेती हैं। डॉ. सुरजीत सिंह ने कहा कि लोक आख्यान सांस्कृतिक निर्माण की प्रक्रिया में ऐतिहासिक ज्ञान की कुंजी होते हैं।

'लोकसाहित्य एवं संस्कृति' पर केंद्रित नवें सत्र की अध्यक्षता प्रो. एच. एस. शिवप्रकाश ने की, जिसमें डॉ. सीमा शर्मा और सुश्री अपराजिता शुक्ला ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. शर्मा ने लोकप्रिय माध्यमों द्वारा प्रस्तुत किए जा रहे लोकसाहित्य के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए कहा कि इस पुनः प्रस्तुति की प्रक्रिया में बहुत कुछ हाशिए पर छूट जाता है। सुश्री अपराजिता ने उत्तराखंड के 'जगार' पर केंद्रित अपने आलेख का पाठ किया।

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखकों द्वारा रचना-पाठ

24 फ़रवरी 2017

साहित्योत्सव के दौरान 24 फ़रवरी 2017 को पूर्वोत्तरी कार्यक्रम के अंतर्गत उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उद्घाटन भाषण के लिए आए प्रख्यात अंग्रेज़ी कवि रॉबिन नांगोम का स्वागत करते हुए उत्तर-पूर्व की विविधता का ज़िक्र किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों का और विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता करने वाले लेखकों का स्वागत करते हुए कहा कि यह मंच अवश्य उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखकों की संवेदनाओं को एक दूसरे तक प्रेषित करेगा। अपने उद्घाटन भाषण में रॉबिन नांगोम ने कहा कि उत्तर-पूर्व का साहित्य जीवंत है और लंबे समय से पाठकों को प्रभावित करता रहा है। इसके अंदर कोई डर या आतंक नहीं है बल्कि प्रकृति, सौहार्द एवं शांति है। विभिन्न भाषाओं, संस्कृति और धर्म के होते हुए भी यहाँ का लेखन लोक की महत्ता को स्वीकार करता है और उसने हिंसा के प्रतिरोध में कई आश्चर्यजनक बिंब तैयार कर लिए हैं। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी जो आधुनिक शहरों में रह रही है की कविताओं का स्वर विस्थापन के दर्द को प्रतिबिंबित कर रहा है।

कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध असमिया लेखक श्री कुल सैकिया ने की, जिसमें सर्वश्री बेग अहसास (उर्दू), चमन अरोड़ा (डोगरी), अनो ब्रह्म (बोडो) और ऋषि वशिष्ठ (मैथिली) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

'मेरी रचना मेरा संसार' विषय केंद्रित सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका श्रीमती उमा वासुदेव ने की। इसमें श्रीप्रकाश मिश्र (हिंदी), महाराज कृष्ण संतोषी (कश्मीरी), क्षेत्री राजेन (मणिपुरी) और देवकांत रामचियारी (बोडो) ने अपनी रचना-प्रक्रिया, परिवेश और रचना-संसार पर विचार व्यक्त किए। श्रीप्रकाश मिश्र ने कहा कि लेखक अपनी स्मृति को ही लिखता है। मुझे विजातीय संस्कृति को निकट से देखने जानने का अवसर मिला जिस कारण मैं उसकी जीवन-संवेदना को पकड़ सका। महाराज

बाएँ से : अनो ब्रह्म, बेग एहसास, कुल सैकिया, चमन अरोड़ा एवं ऋषि वशिष्ठ

उद्घाटन भाषण देते रॉबिन नांगोम

कृष्ण संतोषी ने कश्मीर के विस्थापन की संवेदना पर कुछ मार्मिक उदाहरण देते हुए कहा कि हर रचनाकार का संघर्ष इस दुःख और पीड़ा से ही जिजीविषा पाता है। देवकांत रामचियारी ने कहा कि वे स्थानीय समस्याओं को देशकाल के साथ जोड़कर अपनी रचना-प्रक्रिया तैयार करते हैं। सुविधाओं का अभाव या आपकी आकांक्षाओं का अभाव ये दो ऐसे बिंदु हैं जिन पर रचनाकार को बहुत संतुलित होकर लिखना पड़ता है। उमा वासुदेव ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी वक्तव्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी करते हुए कहा कि रचना-प्रक्रिया हमारे सांसारिक अनुभवों का ही प्रतिबिंब होती है जिसे प्रत्येक लेखक अपने-अपने तरीके से अपनी रचना में प्रस्तुत करता है।

सुपरिचित डोगरी कवि श्री दर्शन दर्शी की अध्यक्षता में कविता-पाठ सत्र हुआ जिसमें मधु आचार्य आशावादी (राजस्थानी), युयुत्सु शर्मा (अंग्रेज़ी), इरशाद मगामी (कश्मीरी), सुधा एम. राई (नेपाली), मदन मोहन सोरेन (संताली), ब्रजेश कुमार शुक्ल (संस्कृत), तूलिका चेतिया एन (असमिया), रमेश (मैथिली), ज्योतिष पायेङ (हिंदी), नरेंद्र देबबर्मन (कोकबॅराक), हिरम्य चकमा (चकमा) और घनश्याम भद्र (हो) ने अपनी काव्य रचना प्रस्तुत की।

आदिवासी लेखक सम्मिलन

25 फ़रवरी 2017

साहित्योत्सव के दौरान 25 फ़रवरी 2017 को 'आदिवासी लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम के अंतर्गत 'सृजन की आदिवासी कहानियाँ' विषय पर आदिवासी सृजन कथाओं का पाठ हुआ। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा आदिवासी भाषाओं के साहित्य पर की जा रही गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया तथा संपूर्ण देश के आदिवासी लेखकों से इसके लिए सहयोग की अपील की।

कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए अकादेमी के जनजातीय एवं वाचिक साहित्य केंद्र, दिल्ली की निदेशक प्रो. अन्विता अब्बी ने कहा कि यह पहली बार है, जब आदिवासी सृजन कथा साहित्य अकादेमी के धरोहर में शामिल होगा। उन्होंने बताया कि सृजन कहानियाँ मानव को प्रकृति से जोड़ती हैं। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं आदिवासी पत्रिका 'अखरा' के संपादक श्री अश्विनी कुमार पंकज ने कहा कि भारत की आज़ादी के 70 वर्ष बाद असुर भाषा का व्याकरण लिखा जा रहा है और इसे झारखंड के सेमुअल बिरजिया लिख रहे हैं। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि पूरे देश के आदिवासी की सृजन कथा एक ही है, लेकिन ये सृजन कथा आदिवासी की पुरखा कथा है, जो वैज्ञानिकता पर आधारित है। आदिवासी समुदाय सिंधु सभ्यता के नष्ट होने की कथा बता सकता है, यह धरती की कथा के प्रारंभिक साक्ष्य हैं और ज़िंदा हैं। आदिवासी लोकगीत सृजन की व्यापक व्याख्या करता है। इसमें झारखंड के छह आदिवासी भाषाओं के लेखकों ने अपनी भाषाओं में सृजन कहानियाँ सुनाईं। इस क्रम में सबसे पहले श्री रेमिस कंडुलाना ने मुंडा समुदाय की उत्पत्ति और सृजन की कहानी लोग गीत के माध्यम से प्रस्तुत की। श्रीमती ग्लोरिया सोरेंग ने कहा कि हमारी कथा पुरखा कथा है, हमारी सृजन कथा प्रकृति से सीधा संवाद की कथा है। श्री सैमुअल बिरजिया ने बिरजिया भाषा की सृजन कथा सुनाई। श्री सरन ओराँव ने मानव उत्पत्ति की कथा को कुड़ुख गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि धरती को बनाने में केंचुआ का सबसे ज़्यादा योगदान रहा। 'हो' भाषा के लेखक 'डोबरो' बिरुली ने हो समुदाय के मिथ पर प्रकाश डाला। श्री सुंदर मनोज हेम्ब्रम ने संताली सृजन मिथ को संताली एवं हिंदी में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संताल ने आज तक अपनी परंपरा को सुरक्षित रखा है तथा आदिवासी स्वयं ही अपनी सभ्यता, संस्कृति और भाषा का संरक्षण कर सकते हैं।

लेखक सम्मिलन का दूसरा सत्र कविता-पाठ को समर्पित था, जिसमें पंद्रह भाषाओं के आदिवासी कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ मूल भाषा के साथ-साथ हिंदी एवं अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रस्तुत किया। कविता-पाठ करनेवाले कवियों में प्राचीनतम आदिवासी असुर समुदाय के कवि श्री सैमुअल बिरजिया ने बिरजिया भाषा में हिंदी अनुवाद के साथ कविताएँ सुनाईं, वहीं श्रीमती वासमल्ली ने टोडा भाषा का गीत और अंग्रेजी अनुवाद के साथ कविता सुनाई। ध्यातव्य है कि यह भाषा बोलनेवाले मात्र 2000 लोग ही हैं। अन्य कवियों में सर्वश्री असीम राय (चकमा), जान मोहम्मद हकीम (गोजरी), जामिनीकांत तिरिया एवं साधुचरण देवगम (हो), वांसलन ई. धर (खासी), नीरदचंद्र कन्हार (कुई), थुप्सटन नॉर्बो (लद्दाखी), विद्येश्वर डोले (मिसिंग), जोएचिम टोप्नो (मुंडारी), संतोष पिचा पावरा (पावरी), गैगरिन सबर (सौरा) तथा श्रीमती फैमलिन के. मराक (गारो), वंदना टेटे (खरिया), फ्रांसिस्का कुजूर एवं शांति खाल्खो (कुड़ुख) ने अपनी भाषाओं में रचनाएँ सुनाईं। अंत में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्रीमती रमणिका गुप्ता ने कहा कि अकादेमी के ये आयोजन आदिवासी साहित्य का इतिहास गढ़ रहे हैं। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि आदिवासी भाषाओं को बचाया जाना ज़रूरी है, चाहे उन्हें किसी भी लिपि में लिखा जाए।

आदिवासी लेखक सम्मिलन के एक सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती रमणिका गुप्ता

आओ कहानी बुनें

25 फ़रवरी 2017

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव का पाँचवाँ दिन विभिन्न बाल गतिविधियों को समर्पित रहा। बच्चों के लिए विशेष रूप से तैयार कार्यक्रम 'आओ कहानी बुनें' का उद्घाटन प्रख्यात बाल साहित्यकार रश्मि नार्जरी ने किया। उन्होंने बच्चों के अंदर अच्छा साहित्य पढ़ने की आदत डालने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि वीडियो गेम्स, कंप्यूटर और मोबाइल के बदले पुस्तकें पढ़ना व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है। उन्होंने साहित्य अकादेमी से

प्रतियोगिता में भाग लेते बच्चे

पुरस्कृत कृति से एक कहानी बच्चों को सुनाई और उनके सवालों के उत्तर भी दिए। एक बच्चे के सवाल के उत्तर में उन्होंने कहा कि अच्छे लेखक होने के साथ-साथ अच्छा व्यक्ति होना भी ज़रूरी है।

इसके बाद प्रो. बी. कामेश ने अपनी मैजिक शो द्वारा बच्चों का भरपूर मनोरंजन किया। अपने मैजिक शो में उन्होंने हमारे देश के विभिन्न राष्ट्रीय चिह्नों, प्रतीकों आदि के बारे में बच्चों को रोचक तरीके से जानकारी दी। स्वच्छता अभियान और भारत की एकता, बंधुता और राष्ट्रीय गौरव के प्रति सभी को जागरूक किया। उन्होंने बच्चों को बहुत-से जादुई करतब सिखाए भी।

इसके बाद बच्चों के लिए संसप्तक नाट्यदल द्वारा कई कहानियों के नाट्य-पाठ प्रस्तुत किए। कहानी और कविता लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें सीनियर वर्ग में प्रथम पुरस्कार न्यू ग्रीन पब्लिक स्कूल की छात्र अस्मिता बाबूराज को तथा जूनियर वर्ग में ये पुरस्कार एस.के.वी. दयानंद स्कूल की छात्र शामिया को दिया गया। सीनियर वर्ग में द्वितीय पुरस्कार एंजेलिना पासा, तृतीय पुरस्कार वृंदा कौशिक तथा प्रोत्साहन पुरस्कार नव्या मयंक एवं गौरव पति को प्रदान किया गया, जबकि जूनियर वर्ग में द्वितीय पुरस्कार प्रियांशु मेहरा, तृतीय पुरस्कार जया प्रभा तथा प्रोत्साहन पुरस्कार यश्वी शर्मा एवं अबीर अब्बास को प्राप्त हुए। दिल्ली के कई विद्यालयों से आए छात्रों और उनके परिजनों तथा शिक्षक-शिक्षिकाओं का अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीवासराव ने कार्यक्रम के प्रारंभ में स्वागत किया और कहा कि बच्चों में सर्जनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए साहित्योत्सव के दौरान कार्यक्रमों को इस प्रकार संयोजित किया गया है कि बच्चों को रुचिकर लगे। उन्होंने कहा कि पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र हैं, क्योंकि ये हर समय हमारे साथ रह सकती हैं। अच्छी पुस्तकें पढ़कर हम अच्छी बातें सीखते हैं और हमारे भीतर अच्छे संस्कार विकसित होते हैं। उन्होंने कहा कि जिस देश में युवाओं की संख्या अधिक होती है वह देश अधिक मजबूत और युवा होता है। बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा कि बच्चों के लिए कविता और कहानी लिखने की कला को समझाने हेतु अकादेमी शीघ्र ही बाल कार्यशालाओं का आयोजन करने की इच्छा रखती है।

कार्यक्रम के अंत में सचिव ने विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किए।

संसप्तक नाट्य दल के एक सदस्य बच्चों को सम्बोधित करते हुए

'अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

26 फ़रवरी 2017

साहित्योत्सव के अंतिम दिन 'अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ के. श्रीनिवासराव ने संगोष्ठी के प्रारंभ में विद्वान अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि अकादेमी पिछले साहित्योत्सव से अनुवाद विषय पर केंद्रित विमर्श का आयोजन कर रही है। ये संगोष्ठी उसी क्रम में आयोजित की जा रही है। हम चाहते हैं कि अनुवाद क्षेत्र में लंबे समय से काम कर रहे विद्वान रचना के अनुवाद में आने वाली समस्याओं और सीमाओं पर अपने व्यावहारिक अनुभव से तैयार किए गए आलेख प्रस्तुत करेंगे, जो गरिष्ठ अकादेमिक चर्चा से मुक्त होगा। इस प्रकार अनुवाद के क्षेत्र में सक्रिय अनेक अनुवादक लाभान्वित हो सकेंगे, ऐसी आशा है।

प्रख्यात गुजराती लेखक एवं अनुवादक प्रो. सितांशु यशश्चंद्र ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि संगोष्ठी का शीर्षक 'अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' ही स्वयं इसका उद्घाटन कर चुका है। इस शीर्षक की द्वि-भाषिकता अनेक प्रश्नों का शमन करने के लिए पर्याप्त है। पुनर्कथन की अपनी एक यात्रा है। सत्रहवीं शताब्दी के प्रेमानंद ने पुराणों का पुनर्कथन किया था। अनुवाद का अनुवादक और अनुवाद के पाठक से सघन संबंध है। यह संगोष्ठी अनुवाद की राहों का वास्तविक अध्ययन है। उन्होंने कहा कि संस्कृत नाटकों में दो प्रकार की भाषा मिलती है। उनमें राजा संस्कृत बोलता है, जबकि रानी प्राकृत बोलती है। यह प्रतिपादन 'अनुवाद' नहीं, बल्कि 'छाया' है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि एक दिन ऐसा आएगा, जब मलयाळम् के सभी वाक्य गुजराती में और गुजराती के सभी वाक्य मलयाळम् में और अन्य सभी भारतीय भाषाओं में परस्पर अनूदित होकर उपलब्ध होंगे।

प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने अनुवाद शब्द के लिए हिंदी और संस्कृत साहित्य में पूर्व प्रचलित विभिन्न शब्दों—टीका, भाष्य, वार्तिक, वृत्ति, कारिका, अनुकथन, पुनर्कथन आदि का जिक्र किया और कहा कि पुनर्कथन की परंपरा भारतीय वाङ्मय में हज़ारों वर्ष पूर्व से मौजूद रही है। उन्होंने अनुवाद और पुनर्कथन के कई उदाहरण दिए। प्रो. तिवारी ने कहा कि रामायण और महाभारत के सबसे अधिक अनुवाद हुए हैं। उन्होंने कहा कि तुलसीदास ने शब्दशः अनुवाद भी किया और पुनर्कथन भी। इस प्रकार रचना का पुनर्सृजन किया है। प्रो. तिवारी ने कहा कि सभी भारतीय भाषाओं में 'राम कथा' मिलती है, जिसमें प्रत्येक क्षेत्र और संस्कृति ने अपनी तरह से उसका अनुवाद पुनर्कथन के रूप में किया है, वह भी वास्तविक है। इस प्रकार अनुवाद का कार्य सृजन भी है और पुनर्सृजन भी। यूरोप से 'ट्रांसलेशन' शब्द आने से पूर्व ही भारतीय भाषाओं में इसके अनेक प्रारूप उपलब्ध थे।

प्रतिष्ठित अंग्रेज़ी विद्वान और अनुवादक सुमन्यु सत्पथी ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि 'अनुवाद' एक स्त्री की तरह है, अगर वह सुंदर है तो विश्वनीय नहीं और यदि विश्वास के काबिल है तो सुंदर नहीं। उन्होंने कहा कि मेरे मतानुसार अनुवाद को सुंदर और विश्वनीय दोनों होना चाहिए। उन्होंने बताया कि सारला दास महाभारत का कभी तो अनुवाद करती हैं और कभी उसका सृजन, कभी-कभी वे इसे मूल रूप से लिखती हैं। उन्होंने 'एलिस इन वंडरलैंड' का ज़िक्र किया और कहा इसका विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनेक तरीकों से अनुवाद हुआ है। अनुवादक अपने काम में अभिनव परिवर्तनात्मक रहे हैं उन्होंने मूल टेक्स्ट के साथ विमर्श में पर्याप्त स्वतंत्रता भी ली है। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने सभी वक्ताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र 'भक्ति आंदोलन : अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री मिनि कृष्णन् ने

बाएँ से : डॉ. चंद्रशेखर कंबार, सुमन्यु सत्पथी, सितांशु यशश्चंद, के. श्रीनिवासराव एवं अध्यक्षीय वक्तव्य देते डॉ. विश्वनाथ तिवारी

बाएँ से : डॉ. जे. एल. रेड्डी, डॉ. चंद्रकांत पाटिल एवं सुश्री मिनी कृष्णन

की। सत्र में डॉ. चंद्रकांत पाटिल और डॉ. जे. एल. रेड्डी ने अपने आलेखों का पाठ किया। चर्चित अनुवादक चंद्रकांत पाटिल ने कहा कि मध्यकालीन कवियों ने 'अनुवाद' शब्द का भिन्न अर्थों में प्रयोग किया है। शब्द-व्युत्पत्तिशास्त्र के अनुसार, 'अनुवाद' 'अनु' और 'वद्' मूल शब्दों के योग से बना है। 'अनु' का अर्थ है—पूर्व के किसी का अनुसरण और 'वद्' का अर्थ है—कहना या बोलना। उन्होंने संत ध्यानेश्वर के कथन का उदाहरण देकर अनुवाद पुनर्कथन की विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि चंद्रकांत देवताले द्वारा तुकाराम के सौ चयनित अभंगों का अनुवाद पुनर्कथन का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। उन्होंने कहा कि मध्यकालीन भक्ति साहित्य का पुनर्कथन आज भी महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक बना हुआ है।

डॉ. जे. एल. रेड्डी ने कहा कि राम कथा के पात्र विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध राम कथाओं में अपना अलग-अलग चरित्र रखते हैं। उन्होंने कहा कि ये हमारी परंपरा है कि भारतीय लोक कथाओं और मिथकों का हम नए पाठ निर्मित करते हैं। सत्र के अध्यक्ष डॉ. मिनि कृष्णन ने कहा कि अनुवादक सिर्फ़ मूल कथा का अपनी भाषा में अनुवाद अथवा पुनर्कथन ही नहीं करता बल्कि नए सिरे से उस कथा को समझ भी रहा होता है।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र 'भारतीय साहित्यिक परंपरा में अनुवाद परंपरा : मौखिक एवं लिखित' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री ब्लांका क्नोतकोवा ने की। सत्र में डॉ. रख़शंदा जलील, डॉ. राणा नायर और रामशंकर द्विवेदी ने आलेख प्रस्तुत किए।

डॉ. रख़शंदा जलील ने ग़ालिब का एक शेर - 'कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीरे नीमकश को/ये ख़लिश कहाँ से होती जो जिगर के पार होता' - उद्धृत करते हुए अनुवाद की समस्या का ज़िक्र किया और कहा कि उर्दू शायरों ने 'जिगर' शब्द का प्रयोग दिल के अर्थ में किया है, बायोलॉजी में भले ही जिगर को 'लिवर' कहा जाता है। इसलिए भाषा की संस्कृति और कहन की ख़ासियत को समझना बहुत ज़रूरी है तभी सही अनुवाद हो सकता है। उन्होंने कहा कि मैं आम पाठकों के लिए अनुवाद करती हूँ। उन्होंने बताया कि अच्छे अनुवाद का मापदंड सुपाठ्य और मनोरंजक होना माना जा सकता है।

डॉ. राना नायर ने अनुवाद को मूल रचना के लिए 'कायाकल्प' माना। उन्होंने कहा कि अनुवादक त्रिशंकु या नारद के मिथकीय चरित्र की तरह मुझे लगते हैं, जो दो भाषा संस्कृतियों के बीच झूलते-गति करते एक तीसरी भाषा का आविष्कार करते हैं।

डॉ. राम शंकर द्विवेदी ने कहा कि हर भाषा के साहित्य में दो धाराएँ समानांतर रूप से चलती हुई दिखाई देती हैं - एक उसके अपने साहित्य की धारा, दूसरी अन्य साहित्य से अनूदित साहित्य की धारा। दोनों धाराएँ अजस्र, अगाध, और साथ-साथ चलने वाली होती हैं। इनके मूल में रहती है ज्ञानवर्द्धन के साथ दूसरी भाषा के साहित्य को जानने की उत्सुकता और अपनी भाषा के साहित्य में जो अभाव होता है उसे दूर करने की भावना। दोनों प्रखर, तीव्र और जब तक अक्षरों की सत्ता है तब तक चिरंतन रहेंगी।

सत्र की अध्यक्ष ब्लांका क्नोतकोवा ने कहा अनुवाद किसी भाषा संस्कृति का दूसरी भाषा संस्कृति में विस्तार है। इस तरह अनुवादक का कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण और उत्तरदायित्व से भरा होता है।

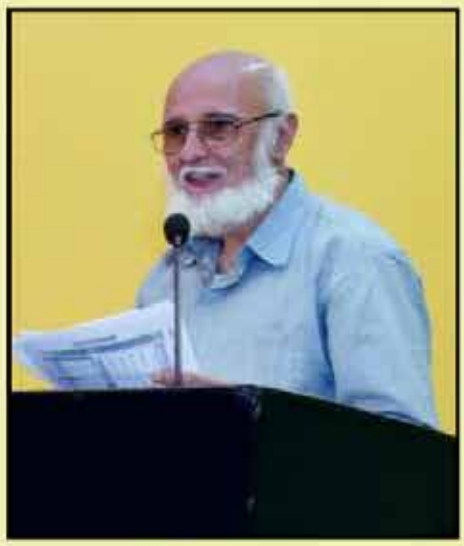

सितांशु यशश्चंद्र,

'भारत की अलिखित भाषाएँ' विषयक परिसंवाद

26 फ़रवरी 2017

साहित्योत्सव के अंतिम दिन 26 फ़रवरी 2017 को 'भारत की अलिखित भाषाएँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन तीन वैचारिक सत्रों में किया गया। प्रथम सत्र, अकादेमी के जनजातीय एवं वाचिक साहित्य केंद्र, नई दिल्ली की निदेशक प्रो. अन्विता अब्बी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा गैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं के लिए किए जा रहे कार्यों के बारे में संक्षेप में बताया। डॉ. अवधेश कुमार मिश्र ने पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं पर बात करते हुए कहा कि यह प्रसन्नता की बात है पूर्वोत्तर की सभी भाषाएँ किसी-न-किसी लिपि में लिखी जा रही हैं। विभिन्न क्षेत्रों की बोली या स्थानीय भाषाएँ प्रायः अपने क्षेत्र की प्रमुख भाषा लिपि को अपनाती हैं। लेकिन पूर्वोत्तर को अधिकांश भाषाओं को रोमन लिपि को विभिन्न संशोधनों के साथ अपनाया हुआ है। इंदिरा गाँधी अंतरराष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने कहा कि वाचिक और लिखित में वे वाचिक को ही अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इस सत्र में प्रो. पुरुषोत्तम बिलिमाले और डॉ. शैलेंद्र मोहन ने क्रमशः तुलु और निहाली भाषाओं के संदर्भ में अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए विस्तार से उनकी विशिष्टताओं के बारे में बताया। प्रो. अन्विता अब्बी ने कहा कि भारत एक भाषा समृद्ध देश है तथा यहाँ के वाचिक साहित्य एवं परंपराओं को लिखित रूप में लानें के साथ-साथ उन्हें उनके वाचिक रूप में भी बचाकर रखने की ज़रूरत है।

इस अवसर पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों *अनरिटेन लैंग्वेज़ेज़ ऑफ़ इंडिया* (संपा. : अन्विता अब्बी) तथा *कालाहांडी के वाचिक महाकाव्य* (ले. : महेंद्र कुमार मिश्र, अनु. : दिनेश मालवीय) का लोकार्पण अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा किया गया। पुस्तकों का लोकार्पण करते हुए उन्होंने कहा कि एक समय था जब वाचिक ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता था, लेकिन आज जब लिखित महत्त्वपूर्ण हो गया है तब इस तरह की पुस्तकों का प्रकाशित होना सुखदायी है।

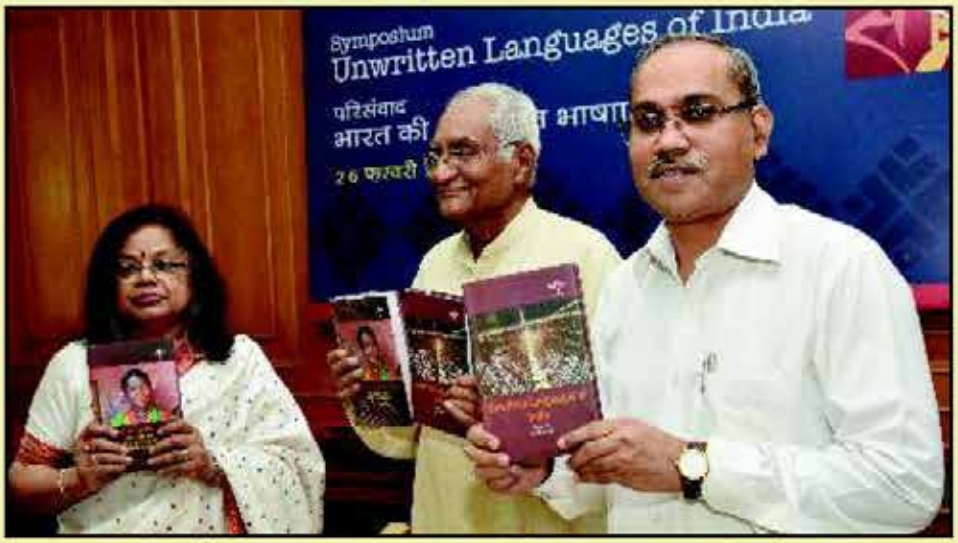

अनरिटेन लैंग्वेज़ेज़ ऑफ़ इंडिया एवं *काला हांडी के वाचिक महाकाव्य* का लोकार्पण करते विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, के. श्रीनिवासराव एवं अन्विता अब्बी

श्रीमती आयशा क़िदवई एवं प्रो. अवधेश कुमार सिंह

परिसंवाद का दूसरा वैचारिक सत्र प्रो. सुकृता पॉल कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें प्रो. आनंद महानंद, प्रो. भक्तवत्सला भारती और प्रो. सी. महेश्वरन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. महानंद ने विशिष्ट आदिवासी वाचिक परंपराओं और आधुनिकता के संदर्भ में अपनी पावर-प्वाइंट प्रस्तुति की। प्रो. भारती और प्रो. महेश्वरन ने क्रमशः नीलगिरि पर्वत शृंखला के मध्य रहने वाली टोडा और अलु कुनवा जनजातियों और उनकी भाषाओं पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद का तृतीय सत्र 'अलिखित भाषाओं का वजूद' विषयक परिचर्चा का था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने की। इस परिचर्चा में श्रीमती आयेशा क़िदवई, श्रीमती कीर्ति जैन, श्रीमती वासमल्ली, श्री जोसेफ़ बरा और श्री कार्तिक नारायणन ने सहभागिता की।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झलकियाँ

कला वारसो ट्रस्ट के कलाकारों द्वारा कच्छ लोक संगीत की प्रस्तुति

संध्या पुरेचा द्वारा भरतनाट्यम नृत्य की प्रस्तुति

जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस अकादमी के कलाकारों द्वारा लाई हारोबा, माव और कावुई नृत्यों की प्रस्तुति

राजा हसन, अगरतला, त्रिपुरा द्वारा बाउल गान की प्रस्तुति

बादोली संताली कल्चरल टीम, दुमका, झारखंड द्वारा
संताली आदिवासी नृत्य की प्रस्तुति

संगोष्ठी

तुलसीदास महोत्सव

3 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित 'तुलसीदास : एक पुनर्पाठ' विषयक संगोष्ठी में बीज भाषण देते हुए रामजी तिवारी ने कहा कि *रामचरितमानस* में तुलसीदास अपने समय और समाज को धुरी बनाते हैं। वे कंदाराओं में जाकर तपस्या करने को सार्थक जीवन नहीं बल्कि गृहस्थ आश्रम में रहकर एक ऐसे संतुलित और दायित्वपूर्ण समाज में वास करने को कहते हैं, जिसमें प्रजा और राजा में पिता और पुत्र की तरह का संबंध हो। उन्होंने आगे कहा कि तुलसीदास ने अपने साहित्य में सभी वादों का समन्वय किया है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। तुलसीदास अपने समय और समाज के विभिन्न विवादों और मतभेदों का उत्तर दे रहे थे। उन्होंने भारत की आम जनता को पुरुषोत्तम राम जैसा नायक दिया, जिससे जन-जन अपने को जुड़ा हुआ पाता है। सत्र के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि तुलसीदास का समय अकबर का शासन काल है, जिसमें पाँच बार भीषण अकाल पड़ा था। तुलसीदास ने अपने साहित्य में उन अकालों के दुखों का, कष्टों का मार्मिक वर्णन किया। प्रो. तिवारी ने कहा कि तुलसीदास का बीज शब्द 'कलि' है। यह 'कलि' तुलसीदास के समय का यथार्थ है। तुलसीदास ने अपने समय की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे आम जन-जीवन को बहुत महत्त्वपूर्ण ढंग से व्यक्त किया। उन्होंने आगे कहा कि महात्मा गाँधी ने भी तुलसीदास से रामराज्य और सर्वोदय की संकल्पना प्राप्त की। तुलसीदास अपने समय के अराजक और विभिन्न विवादों में घिरे समय में भी रामराज्य का स्वप्न देखते हैं, यह एक बड़ी बात है। इससे पहले साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि साहित्य अकादेमी कालजयी रचनाकारों पर पूरे देश में इस तरह के कार्यक्रम आयोजित कर रही है, जिससे देश की युवा पीढ़ी उन कालजयी संत रचनाकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व को भली-भाँति समझ सके।

संगोष्ठी का दूसरा सत्र 'रामकथा परंपरा और तुलसीदास' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता रमेश कुंतल मेघ ने की और श्रीभगवान सिंह और सूर्यप्रसाद दीक्षित ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में रमेश कुंतल मेघ ने कहा कि मिथक को इतिहास के रूप में समझने की ग़लती के कारण ही हम इतिहास और मिथक को एक-दूसरे के साथ गडमड कर देते हैं और सारी ग़लतफ़हमियाँ यहीं से शुरू होती हैं। तुलसीदास मिथकीय चरित्र राम पर लिखते तो ज़रूर हैं, लेकिन उनका बोध मध्यकालीन है, पौराणिक नहीं। तुलसीदास राम को राजा के रूप में नहीं बल्कि लोक नेता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। अगला सत्र 'तुलसीदास का युग और उनका काव्य' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी ने की। उन्होंने भक्ति आंदोलन में चारों वर्ण से ऊपर एक भक्ति का पंचम वर्ण पैदा किया, जिसमें भक्त एक जन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने तुलसीदास को इस मामले में उच्च कोटि का सर्जक कहा, जोकि अपने समय और समाज के अनुसार पात्रों की पुनः रचना करता है। तुलसीदास इस संदर्भ में विश्वकोटि के कवि हैं। गोपेश्वर सिंह, ब्रजकिशोर स्वैन और नीरजा माधव ने भी अपने सुचिंतित आलेख प्रस्तुत किए।

प्रो. रामजी तिवारी बीज भाषण देते हुए। साथ में के. श्रीनिवासराव, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं सूर्यप्रसाद दीक्षित

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित 'तुलसीदास : एक पुनर्पाठ' राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन के अंतिम सत्र की अध्यक्षता करते हुए संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष शेखर सेन ने कहा कि "गोस्वामी तुलसीदास ने *रामचरित मानस* में हर संभव सामाजिक संबंधों में श्रेष्ठता की ही परिकल्पना की है। राज्य के रूप में रामराज्य परिवार के लिए आदर्श पुत्र, भाई, पति आदि सभी के रूप में वे एक उच्चतम आदर्श की कल्पना करते हैं।" उन्होंने तुलसीदास को संसार का सर्वश्रेष्ठ कवि बताते हुए कहा कि अपने अराजक समय में वे हर क्षेत्र में समन्वय के ऐसे सूत्र गढ़ते हैं जो किसी भी समाज के लिए आदर्श हो सकते हैं। उन्होंने तुलसीदास द्वारा अपने समय में प्रारंभ की गई कई अभिनव परंपराओं के बारे में भी बताया। जैसे, रामलीला, व्यायामशाला तथा सत्संग इत्यादि।

इसी सत्र में अपना समापन वक्तव्य देते

हुए प्रख्यात संस्कृत विद्वान, राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि तुलसीदास हर किसी के साथ संवाद रचते हैं। वे चाहे आम जनता से संबंधित हों या फिर सत्ता के ख़िलाफ़ क्यों न हों। ये संवाद एक प्रकार से उनके अपने समय से भी है। मुग़लों के शासनकाल में फैली अराजकता तथा ख़ुद हिंदू समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों से भी वे संवाद कर रहे हैं। इस संवाद में वे लगातार समाज को बदलने के लिए उत्प्रेरित कर रहे हैं। उनके पूरे संवाद में कहीं भी इन समस्याओं से मुँह छिपाकर गेरुआ वस्त्र ओढ़कर रामभक्ति करने की आकांक्षा नहीं है।

पूर्व के सत्र में जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात संस्कृति विशेषज्ञ भगवान सिंह ने की, जिसका विषय तुलसीदास की लोक स्वीकृति था। इस सत्र में रंजना अरगड़े, अवनिजेश अवस्थी और इंदुव्रत दुआ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। भगवान सिंह ने तुलसीदास की साहसिकता की चर्चा करते हुए कहा कि पूरे मध्यकाल में उन जैसा साहसी कवि कोई नहीं हुआ। वे मुग़ल काल में रहते हुए भी अप्रत्यक्ष रूप से अकबर के राज्य की आलोचना करते हैं। उन्होंने अपने काव्य से लोक शिक्षण का बहुत बड़ा कार्य किया। हम आज के संदर्भ में देखते हुए उन्हें स्त्री और दलित विरोधी कहने लगते हैं लेकिन अगर हम उनके समाज में उस समय के दौर में जाकर देखें तो वे बातें बिल्कुल नए संदर्भ के साथ हमारे सामने आती हैं।

दिन का पहला सत्र भारतीय भाषाओं में तुलसीदास विषय पर केंद्रित था। इसकी अध्यक्षता प्रख्यात असमिया साहित्यकार नगेन शइकीया ने की और इसमें सुमन लता, सत्यभामा राजदान और एस. पट्टनशेट्टी ने अपने प्रदेशों की भाषाओं में तुलसीदास के महत्त्व को रेखांकित किया।

दो दिवसीय इस समारोह में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों और दोनों दिन भारी संख्या में आए लेखकों, विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं छात्रों, पत्रकारों और सुधी श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

बदलते समाज के संदर्भ में सिंधी साहित्य

14-15 जनवरी 2017, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 'बदलते समाज के संदर्भ में सिंधी साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 14-15 जनवरी 2017 को अकादेमी के सभागार में किया गया। अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होंने कहा कि समाज समय के साथ बदलता है। हमें इसका विस्तार करना है, मानव संस्कृति, प्रकृति और साहित्य के साथ उसके संबंध, यह क्यों बदल गया, इसके प्रभाव क्या हैं। इस संगोष्ठी का उद्देश्य इन परिवर्तनों का मूल्यांकन करना है। एक लेखक समाज का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि आम आदमी उसे व्यक्त नहीं कर पाता है। सिंधी साहित्य भी चरणबद्ध ढंग से बदल रहा है। प्रसिद्ध सिंधी लेखक श्री वासदेव मोही ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि साहित्य और समाज परस्पर जुड़े हुए हैं। ये एक दूसरे के पूरक हैं। साहित्य समाज को व्यापक धारणा देता है। यह समाज की असली तस्वीर प्रस्तुत करता है। प्रसिद्ध सिंधी लेखक हुंदराज बलवानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री विनोद आसुदानी ने की। श्री गोवर्धन शर्मा घायल और लक्ष्मण दूबे ने गत दस वर्षों के सिंधी ग़ज़ल पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने ग़ज़ल लेखन में महत्त्वपूर्ण बदलाव को बताया जो मुख्यतः भावनाओं पर आधारित था और अब वर्तमान परिस्थितियों का साथ बदल गया। श्रीमती सरिता शर्मा और श्री जगदीश लाच्छानी ने गत एक दशक की सिंधी कहानियों पर बात की। उनका कहना था कि समय के साथ कहानी की प्रस्तुति बदल गई है। समकालीन कहानी अधिक व्यावहारिक, यथार्थवादी और ग़लतफ़हमियों, धारणाओं व विश्वास के सामाजिक मुद्दों के इर्द-गिर्द घूम रही है, कथानक साधारण है।

दूसरा सत्र गत एक दशक के उपन्यास और जीवनियों पर आधारित था तथा इस सत्र की अध्यक्षता श्री हुंदराज बलवानी ने की। श्री हासो ददलानी और मोहन गेहाणी ने उपन्यास पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समकालीन उपन्यास दर्शन का संक्षिप्त रूप है। वे अधिक जटिल मुद्दों पर आधारित हैं और अधिक त्वरित है। डॉ. कमला गोकलाणी और श्रीमती आशा रंगवाणी ने आत्मकथाओं पर अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि इसमें कोई बदलाव नहीं आया है क्योंकि इसमें किसी भी भावना, घटना या प्रसार को प्रस्तुत नहीं किया जाता।

स्वागत वक्तव्य देते डॉ. प्रेम प्रकाश तथा साथ में वासदेव मोही

सायंकालीन सत्र 'विगत एक दशक के लोक साहित्य' पर आधारित था तथा इस सत्र की अध्यक्षता श्री गोवर्धन शर्मा घायल ने की। श्री जेठो लालवाणी और कलाधर मुतवा ने विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने दुख व्यक्त किया कि सिंधी भाषा का लोक साहित्य लुप्त हो रहा है, इसका मुख्य कारण सिंधी लोगों का छोटे छोटे टुकड़ों में विस्थापन है। ज़्यादातर सिंधी समाज शहरी क्षेत्रों में रहता है। उन्होंने पाश्चात्य संस्कृति को अपना लिया। अब लोकगीतों को फ़्यूजन में गाया जाता है। लाडा (सिंधी लोकगीत) और सिंधी भजनों का उन्नयन किया गया है। गुजरात का मात्र बानी क्षेत्र पूर्व परंपरा का निर्वाह कर रहा है।

चौथे सत्र की अध्यक्षता श्री वासदेव मोही ने की। सुश्री मीना रूपचंदानी ने विगत एक दशक की जीवनियों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्राचीन जीवनियाँ राष्ट्रीय एकता, समाज, स्वतंत्रता आंदोलन तथा भूगोल आदि को चित्रित करती थीं। जीवनी प्रायः समकालीन परिदृश्य में नहीं लिखी जाती हैं। उन्होंने नारायण श्याम, एम. कमल, सुंदरी उत्तमचंदानी, हेमू कलानी आदि की जीवनियों की समीक्षा प्रस्तुत की। विगत एक दशक की सिंधी कविताओं पर श्री मोहन हिमथानी और खीमण मुलाणी ने आलेख प्रस्तुत किए। उनका कहना था कि पूर्व में कविताएँ एक प्रवाह में लिखी जाती थीं लेकिन आज की कविता टुकड़ों में आती है। कल की कविता में भावनाएँ और संवेदनाएँ थी किंतु आज की कविता में निर्भरता और स्थिति की माँग आधारित होती है। यह कारोबारी हो गई है।

पाँचवें सत्र की अध्यक्षता श्री जेठो लालवाणी ने की जो गत दस वर्षों के सिंधी नाटक तथा बाल साहित्य पर आधारित था। श्री सुरेश बबलाणी और संध्या कुंदनानी ने नाटकों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि आजकल पौराणिक कथाएँ अनुपस्थित हैं। संवाद की भाषा पश्चिमी हो गई है। नाटक के शीर्षक से नाटकों की सामग्री का पता नहीं चलता है। श्री हुंदराज बलवानी ने गत एक दशक के बाल साहित्य पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। बाल साहित्य लेखन की कमी का वैश्विक मुद्दा सिंधी साहित्य में भी मौजूद है। यह परियों की कथाओं में उलझ गया है तथा लंबे समय से कहानी कहने की तकनीक भी भूल गए हैं।

छठे और अंतिम सत्र की अध्यक्षता डॉ. कमला गोकलाणी ने की तथा सुश्री जया जादवाणी और श्री विनोद आसुदाणी ने आलेख प्रस्तुत किए। इनका कहना था कि संचार की कमी के कारण समाज बदल रहा है। सिंधी पाठकों की संख्या तेज़ी से कम हो रही है। जटिल आलोचनाएँ जैसे पर्यावरण आलोचना, तकनीकी आलोचना और दिव्यांग विमर्श बहुत नुक़सान कर रहे हैं।

डॉ. प्रेम प्रकाश के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

भारतीय भाषाओं एवं साहित्य में शेक्सपियर

18-19 जनवरी 2017, कोलकाता

अंग्रेज़ी के महान रचनाकार विलियम शेक्सपियर के 450 वें जन्मदिन और 400 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि देने के लिए साहित्य अकादेमी द्वारा एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 18-19 जनवरी 2017 को अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सभागार में किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विभिन्न भारतीय भाषाओं और साहित्य में शेक्सपियर की रचनाओं के रूपांतरण एवं पुनर्रचनात्मकता में योगदान और शोध करने वाले उन विद्वानों को आगे लाने में संगठन की भूमिका पर ज़ोर दिया। कलकत्ता यूनिवर्सिटी के अंग्रेज़ी विभाग की प्रोफ़ेसर संयुक्ता दासगुप्ता ने अपने आरंभिक वक्तव्य में बताया कि उनकी पहली मुलाक़ात शेक्सपियर की *द कॉमेडी ऑफ़ ऐरर्स* देखकर हुई। उन्होंने आगे कहा कि बंगाल में आज भी शेक्सपियर के नाटकों का चित्रांकन एवं मंचन जारी है।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री भानु भारती ने अमृतराय के हेमलेट (हिंदी अनुवाद) के मंचन के व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि शेक्सपियर एक जीवित घटना है और ठंडे अकादमिक बहस का विषय नहीं है। हमें थियेटर कविता, और कला को औचित्य के लिए इसे स्वीकार करने की आवश्यकता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग की प्रोफ़ेसर शर्मिष्ठा पांजा ने अपने बीज वक्तव्य में हाल ही में बॉलीवुड के प्रोडक्शन 'हैदर' के संदर्भ में शेक्सपियर की रचनाओं के रूपांतरण की

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

आंतरिक पहचान पर विस्तार से चर्चा की। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध विद्वान प्रो. हरीश त्रिवेदी ने की। श्री त्रिवेदी ने अपने ओजपूर्ण भाषण का आरंभ 'एक एशियन शेक्सपियर' के विकास से करते हुए कहा कि किस प्रकार शेक्सपियर की सर्वव्यापकता ने उसे वैश्विक परिदृश्य के एक अंतरिक्ष में विलीन कर दिया है। अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. पूनम त्रिवेदी ने की। प्रो. राजीव वर्मा ने शेक्सपियर के 'ऑल इज़ वेल दैट एंड्स वेल' और 'ए फॉक स्टोरी' का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। प्रो. सुकांत चौधरी ने बाङ्ला भाषा में सोनेट के विकास में शेक्सपियर का प्रभाव पर तथा प्रो. महेश चंपकलाल ने दो रूपांतर मैकबेथ (बी. वी. कारंत का 'बरमन वाना' और लोकेंद्र अरंबम का 'स्टेज ऑफ़ ब्लड') पर आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. मालाश्री लाल ने की। प्रो. मुनमुन मजुमदार ने भारत के उत्तर-पूर्व में मैकबेथ के तीन रूपांतरण में सामाजिक विविधता और चुनौतियों के बारे में उपस्थित लोगों को जानकारी दी। डॉ. आशा देवी के नारीवादी अध्ययन ने शेक्सपियर में महिलाओं के चरित्र निर्माण की प्रक्रिया के बारे में बात की। प्रो. सुमन्यु सत्पथी ने शेक्सपियर के टेंपसेट का ओड़िया के रामशंकरदास बलवाला के अंत:विषय पाठ को प्रस्तुत किया।

तीसरे अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. राजीव वर्मा ने की। प्रो. जतिंद्र कुमार नायक ने 1960-1980 में ओड़िशा में शेक्सपियर की उपस्थिति के बारे में चर्चा की। प्रो. तेजवंत सिंह गिल ने थियेटर आलोचक, भारत में मंच प्रस्तुतियों की आलोचना को साझा किया। संगोष्ठी के दूसरे दिन चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. सुकांत चौधरी ने की। प्रो. पूनम त्रिवेदी ने भारतीय साहित्य में शेक्सपियर की त्रासदी पर टिप्पणी की। प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने शेक्सपियर के भारतेंदु व मोती बी.ए. द्वारा किए गए अनुवादों पर टिप्पणी की। प्रो. एम. नरेंद्र ने आधुनिक तेलुगु साहित्य पर शेक्सपियर के प्रभाव को रेखांकित किया।

पाँचवें सत्र की अध्यक्षता प्रो. शर्मिष्ठा पांजा ने की। प्रो. अमिताभ राय ने प्रो. अशीर वसु के नाटक 'कोलकाता हेमलेट' (हेमलेट) की प्रस्तुति के बारे में बात की। प्रो. सुप्रिया चौधरी ने शेक्सपियर के 'द टेम्पसेट' और बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के 'कपाल कुंडल' के माध्यम से शेक्सपियर और बंगाल के साहित्यिक संबंधों को स्थापित किया। प्रो. मालाश्री लाल ने राजस्थान के एक दूरदराज़ गाँव में बार्ड के प्रभाव की व्याख्या की।

अंतिम अकादमिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने दर्शकों को उनके वास्तविक जीवन के नाटकों और राजनीति के सहयोग पर समीक्षात्मक टिप्पणी की। इस सत्र में प्रो. विक्रम चोपड़ा ने शेक्सपियर के साहित्य में भारतीय तत्त्वों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। प्रो. अमिताभ राय और महेश चंपक लाल के दो शानदार प्रस्तुतियों से संगोष्ठी का समापन हुआ।

हरिदरियानी दिलगीर जन्मशतवार्षिकी

28-29 जनवरी 2017, आदीपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा हरिदरियानी दिलगीर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 28-29 जनवरी 2017 को इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ सिंधोलॉजी, आदीपुर में किया गया। वरिष्ठ सिंधी लेखक श्री लखमी खिलाणी ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। श्री खिलाणी ने 'दिलगीर' को एक कवि, दर्शनिक, घनिष्ठ मित्र एवं सलाहकार के रूप में याद किया। उद्घाटन वक्तव्य के बाद मोहन गेहानी द्वारा लिखित तथा अकादेमी द्वारा प्रकाशित हरिदरियानी दिलगीर पर विनिबंध का लोकार्पण किया गया।

डॉ. विम्मी सदारंगाणी एवं श्री कमल निहलाणी ने 'दिलगीर' की कुछ कविताओं का पाठ किया। अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि किशन चंद बेवस 'दिलगीर' के गुरु थे और दिलगीर का कविता संसार वृहत है। उन्होंने आगे कहा कि दिलगीर एक आशावादी कवि थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री प्रीतम वरियानी ने की। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ सिंधोलॉजी के निदेशक श्री कमल निहलानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री वासदेव मोही ने की। सुश्री सीमा गुरनानी, श्री मोहन गेहाणी तथा श्री मोहन हिमथानी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री मोहन गेहाणी ने की। डॉ. विनोद आसुदाणी, श्री कमल निहलानी, डॉ. विम्मी सदारंगाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. विनोद आसुदाणी ने की। श्री मुरली गोविंदानी, सुश्री वीना शृंगी एवं श्रीमती सरिता शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के चौथे सत्र की अध्यक्षता डॉ. राम दरियानी ने की। श्री वासदेव मोही, श्री सी. टी. ज्ञानचंदानी तथा सुश्री आशा रंगवाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पाँचवें सत्र की अध्यक्षता श्रीमती सरिता शर्मा ने की। श्री लक्ष्मण दूबे, श्री खीमण मुलाणी तथा डॉ. कमला गोकलाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अंतिम सत्र में डॉ. जेठो लालवाणी और डॉ. हुंदराज बलवाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सुश्री आशा रंगवाणी ने सत्र की अध्यक्षता की।

समापन सत्र में श्री साहब बीजानी एवं सुश्री सीमा गुरनानी ने 'दिलगीर' के साथ बिताए अपने दिनों को साझा किया तथा डॉ. प्रेम प्रकाश ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद

परमानंद मेवाराम जन्मशतवार्षिकी

1 जनवरी 2017, आदीपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ सिंधोलॉजी, आदीपुर के सहयोग से प्रसिद्ध सिंधी लेखक परमानंद मेवाराम के जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 1 जनवरी 2017 को एक परिसंवाद का आयोजन आदीपुर में किया गया।

प्रसिद्ध सिंधी लेखक श्री सतीश रोहरा ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री रोहरा ने कहा कि परमानंद मेवाराम, दयाराम गिडुमल, मिर्ज़ा क़लीचबेग, कोदूमल चंदन मल ने सिंधी साहित्य की आधारशिला रखी। श्री रोहरा ने मेवाराम के जीवन, साहित्यिक यात्रा तथा उनके हिंदी-अंग्रेज़ी व साहित्य के ज्ञान के बारे में जानकारी दी।

साहित्य अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने बीज वक्तव्य दिया तथा श्री लख्मी खिलाणी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। श्री खिलाणी ने श्री रोहरा के विचारों का समर्थन करते हुए मेवाराम के हास्य लेखन के महत्त्व को रेखांकित किया। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ सिंधोलॉजी के निदेशक श्री कमल निहलानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री वासदेव मोही ने की तथा श्री साहब बीजानी, श्री मुरली गोविंदानी, डॉ. विम्मी सदारंगाणी, सुश्री जिया साहनी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री बीजानी ने अपने आलेख में मेवाराम के व्यक्तित्व व साहित्य के बारे में, श्री गोविंदानी ने मेवाराम के गुलफुल खंड 1-2 के बारे में, डॉ. सदारंगाणी ने मेवाराम का दिलबहार खंड 1-4 का आलोचनात्मक विश्लेषण तथा सुश्री जिया ने मेवाराम के अन्य गद्य लेखन के बारे में आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र में डॉ. सदारंगाणी तथा श्री मुकेश तिलोकानी ने मेवाराम की कुछ कविताओं का भी पाठ किया।

प्रथम सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री वासदेव मोही

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री साहब बीजानी ने की। इस सत्र में श्री कमल निहानी ने मेवाराम की ज्योति पत्रिका, श्री सी. टी. ज्ञानचंदानी ने मेवाराम की शैली तथा श्री वासदेव मोही ने मेवाराम के शब्दाकोशों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

डॉ. प्रेम प्रकाश ने समापन वक्तव्य तथा धन्यवाद ज्ञापन किया।

के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नचिमुथु ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। कॉलेज के सचिव श्री के. त्यागराजन ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. ई. सुंदरमूर्ति ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि वेल्लै वारनानर एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे जिन्होंने तमिळ भाषा, व्याकरण, सावित्रीवाद और तमिळ शोध के लिए बहुत सेवा की। त्यागराज कॉलेज के तमिळ विभाग के प्रो. एम. करपागम ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता त्यागराज कॉलेज के तमिळ विभागाध्यक्ष श्री आई. पेचिमुथु ने की। उन्होंने संगम युग के तमिळों के जीवन का वर्णन किया जैसा कि वेल्लै वारनानर ने देखा और चित्रित किया था। उनके जीवन को अगम और पुरम के रूप में वर्गीकृत किया गया था, जिसमें अगम पुरुष-महिला रिश्ते का प्रतीक है जबकि पुरम द्वारा कवियों और राजाओं के बीच कूलीनता, युद्ध, उदारता और बिरादरी का चित्रण है। श्रीमती निर्मला मोहन ने वेल्लै वारनानर के शोध के बारे में कुछ संगीत नोट गाए जो अच्छी तरह से संगीत विज्ञान में निपुण थे। श्री एस. गाँधीदुरै ने 63 सैवीं संतों के जीवन के बारे में बात की जो बेहद पवित्र थे। वेल्लै वारनानर एक उत्साही भक्त थे जो पेरिया पुरानम से प्रेम करते थे और उनके आदर्शों को उत्साह के साथ आजीवन अपनाया था।

अगले सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध तमिळ विद्वान डॉ. आर. मोहन ने की। उन्होंने वेल्लै वारनानर के 'अरुत्पा' से संबंधित विद्वता के बारे में बात की जिसे महान संत रामलिंगा द्वारा गाया गया। डॉ. आर. कामारासु ने कहा कि वेल्लै वारनानर एक महान शोधक थे जिन्होंने थीलकपियम नानूल, परिया पुरानम एवं संगम साहित्य के शोध के लिए नई खिड़कियाँ खोलीं।

पुरानम से प्रेम करते थे और उनके आदर्शों को उत्साह के साथ आजीवन अपनाया था।

अगले सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध तमिळ विद्वान डॉ. आर. मोहन ने की। उन्होंने वेल्लै वारनानर के 'अरुत्पा' से संबंधित विद्वता के बारे में बात की जिसे महान संत रामलिंगा द्वारा गाया गया। डॉ. आर. कामारासु ने कहा कि वेल्लै वारनानर एक महान शोधक थे जिन्होंने थीलकपियम नानूल, परिया पुरानम एवं संगम साहित्य के शोध के लिए नई खिड़कियाँ खोलीं। सुश्री जी. सेलवरक्कू ने वारनानर के महाकाव्य 'कक्की विदु थुत्तु' के बारे में बात की जिसमें एक दूत के रूप में एक कौवे को रूपांतरित करने का वर्णन है। परिसंवाद में छात्र, शोधार्थी, अध्यापक, लेखक, कवि, मीडिया के लोग भारी संख्या में उपस्थित थे।

तमिलनाडु के ज़िला साहित्यिक गज़ेटियर की तैयारी

6 जनवरी 2017, डिंडिगुल

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा गाँधीग्राम रूरल इंस्टीट्यूट के सहयोग से 'तमिलनाडु के ज़िला साहित्यिक गज़ेटियर की तैयारी' विषयक परिसंवाद का अयोजन कॉलेज परिसर में 6 जनवरी 2017 को किया गया। साहित्य अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नचिमुथु ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि साहित्यिक इंसाइक्लोपीडिया/गज़ेटियर एक महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्ट था जो हर जनपद के साहित्य का इतिहास होता था। गाँधीग्राम रूरल इंस्टीट्यूट डिंडिगुल के कुलपति डॉ. एस. नटराजन ने महानगरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यक्रम आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना की। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. ई. सुंदरमूर्ति ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि 19वीं शताब्दी के कवियों ने आधुनिक पुनर्जागरण के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

श्री डी. सेलवराज ने अपने लेखन 'थोल' के बारे में बोलते हुए कहा कि यहाँ तक कि उनके अकादेमी पुरस्कृत उपन्यास डिंडिगुल क्षेत्र की पीड़ाओं और आकांक्षाओं का एक प्रलेखित इतिहास है। गाँधीग्राम रूरल इंस्टिट्यूट के तमिळ विभाग के अध्यक्ष पी. आनंद कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. आर. कामरासु ने की तथा वंडल क्षेत्र के साहित्यिक प्रवाह के बारे में बात की जिसे चोलराजा ने सबसे उपजाऊ कावेरी बेसिन विकसित किया था। श्री एस. सेलवाकुमारन ने कन्याकुमारी क्षेत्र के भारत का सबसे दक्षिणी सिरा जो कि लिमुरिया द्वीप का विस्तार है और जिसे क्लासिकल तमिळ भाषा से संबंधित माना जाता है, के साहित्यिक गज़ेटियर के बारे में बात की। प्रो. पी. आनंदकुमार ने कहा कि दक्षिण भारत का प्राचीन नगर मदुरै जिसका लगभग 3000 वर्षों का सतत साहित्यिक इतिहास था और उस साहित्यिक इतिहास का दस्तावेज़ीकरण महत्त्वपूर्ण था, एक यादगार प्रयास था। श्री एन. गुरुगेसा पंडियन ने अजाऊ थमिरबरनी नदी के बारे में बात की जिसने कृषि का पोषण किया और तिरुनेलवेली क्षेत्र के साहित्य को बढ़ावा दिया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. आर. संबथ ने की। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि स्वतंत्रता समानता और बिरादरी के फ्रांसीसी सिद्धांतों ने 20वीं सदी के दो महान कवियों, भारती और भारती दासन को पांडिचेरी में उभरने के लिए सक्षम किया और उन्होंने पांडिचेरी क्षेत्र में कवियों और लेखकों के एक बड़े समूह की शुरुआत की। डॉ. सी. सेतुपति ने रामनाथपुरम क्षेत्र के लेखकों और कवियों की साहित्यिक उपलब्धियों के बारे में बात की। श्री सुंदर मुरुगन ने चेन्नै क्षेत्र के साहित्यिक इतिहास पर अपना लेख प्रस्तुत किया और कहा कि हालाँकि पहली दृष्टि में चेन्नै को विरासत के साथ जोड़ा जा सकता है। श्री पी. वेलुसामी ने समापन वक्तव्य दिया तथा गाँधीग्राम रूरल इंस्टीट्यूट के श्री वी. राजरत्नम ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

विगत 25 वर्षों के मराठी साहित्य में प्रयोगों का मूल्यांकन

15 जनवरी 2017, सावंतवाड़ी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा श्रीराम वाचन मंदिर सिंधु दुर्ग और गोगट वाके कॉलेज, बांदा के सहयोग से 'विगत 25 वर्षों के मराठी साहित्य में प्रयोगों का मूल्यांकन' विषयक परिसंवाद का आयोजन 15 जनवरी 2017 को सावंतवाड़ी में किया गया। वरिष्ठ मराठी आलोचक प्रो. वसंत पाटंकर ने परिसंवाद का उद्घाटन किया।

क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने के स्वागत भाषण के बाद प्रो. पाटंकर ने कहा कि वे पिछले 25 वर्षों के मराठी साहित्य के संदर्भ में अवधारणाओं, प्रयोगों और प्रयोगात्मकता पर चर्चा करेंगे। प्रसिद्ध मराठी आलोचक डॉ. अरुणा दुभाषी ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने इस बात की चर्चा की कि शब्द 'प्रयोग' और इसके ज्ञान के विभिन्न पक्षों का किस प्रकार उपयोग किया गया। श्रीराम वाचन मंदिर के महासचिव श्री प्रवीण बांदेकर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के एक सत्र का एक दृश्य

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. अविनाश सप्रे ने की। श्री गणेश विसुते तथा श्री गोविंद कजरेकर ने आलेख प्रस्तुत किए। श्री कजरेकर ने कहा कि 1990 के बाद से मराठी कविता 1960 के कवियों द्वारा निर्धारित विचारों को तोड़ने में विफल रही। कविता को वैश्वीकरण द्वारा तैयार की जाने वाली शब्द रेखा को समायोजित किया गया, कविता की भाषा न केवल महानगरों में लिखी कविता में बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी बदल गई थी।

श्री रवींद्र लेखे ने सत्र की अध्यक्षता की। श्री नीलकंठ कदम ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री लेखे ने कहा कि रचनात्मक कला में शब्द प्रयोग खोज करने की प्रक्रिया का एक पर्याय बन गया था और यह मानव अनुभव का हिस्सा था। उन्होंने आगे कहा कि प्रयोग अभिव्यक्ति का माध्यम था।

प्रो. वासुदेव सावंत ने अंतिम सत्र की अध्यक्षता की तथा श्री जी. के. ऐनापुरे एवं श्री दत्तात्रेय गोलप ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सिंधी साहित्य में व्यंग्य

22 जनवरी 2017, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा रंगकर्म थियेटर, अहमदाबाद के सहयोग से 'सिंधी साहित्य में व्यंग्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन 22 जनवरी 2017 को स्वामी लीलाशाह सेवा ट्रस्ट हॉल, कुबेर नगर, अहमदाबाद में किया गया। अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के सदस्य श्री हुंदराज बलवानी ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि सिंधी साहित्य में व्यंग्य पर्याप्त मात्रा में है तथा यह उपन्यास, कविता तथा नाटकों में प्रचूर मात्रा में है। प्रसिद्ध सिंधी लेखक श्री वासदेव मोही ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने श्रोताओं को सिंधी

बाएँ से : मीना शहदादपुरी, जेठो लालवाणी, भगवान अटलाणी एवं हुंदराज बलवाणी

साहित्य के व्यंग्य के कुछ रूपों के उदाहरण प्रस्तुत किए।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री वासदेव मोही ने की तथा श्री हरीश करमचंदानी एवं श्री मनोज चावला ने 'सिंधी साहित्य में व्यंग्य – कविता' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री भगवान अटलानी ने 'सिंधी साहित्य में व्यंग – कहानी' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री मनोहर निहलानी ने 'सिंधी साहित्य में व्यंग्य – उपन्यास' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री भगवान अटलानी ने की तथा श्री कोदूमल जानिब ने 'सिंधी साहित्य में व्यंग्य – गज़ल' तथा मीना शहदादपुरी ने 'सिंधी बाल साहित्य में व्यंग्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। 'सिंधी नाटकों में व्यंग्य' विषय पर श्री हुंदराज बलवानी एवं डॉ. जेठो लालवाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। परिसंवाद का समापन सिंधी साहित्य में व्यंग्य को संकलित संरक्षित करने के संकल्प से हुआ ताकि भावी पीढ़ी उनसे लाभान्वित हो सके।

पंजाबी व्याकरण : सिद्धांत ते विचार

24 जनवरी 2017, चंडीगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा पंजाब यूनिवर्सिटी के गुरुनानक सिख स्टडीज़ विभाग के सहयोग से 'पंजाबी व्याकरण : सिद्धांत ते विचार' विषयक परिसंवाद का आयोजन 24 जनवरी 2017 को सेमिनार हॉल, गुरु तेग बहादुर भवन, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ में किया गया। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से श्रोताओं को अवगत कराया। पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला के डॉ. बलदेव सिंह चीमा ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए हर किसी को अपनी मातृभाषा सीखनी चाहिए। उन्होंने किसी भी भाषा के व्याकरण को तैयार करने में होने वाली कठिनाइयों को रेखांकित किया तथा पंजाबी व्याकरण के सैद्धांतिक दृष्टिकोण की चर्चा की। पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला के डॉ. सतीश कुमार वर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। उन्होंने अपने वक्तव्य में इस तथ्य को रेखांकित किया कि पंजाबी व्याकरण का महत्त्व है और इसे मुख्य रूप से व्यावहारिक रूप में सिद्धांत द्वारा नहीं स्वीकार किया जा सकता। उन्होंने अपने वक्तव्य में साहित्य अकादेमी को इतने महत्त्वपूर्ण विषय पर इस परिसंवाद के आयोजन पर बधाई दी। डॉ. रवेल सिंह ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

परिसंवाद के दो अकादमिक सत्र थे। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. सुखविंदर सिंह सांघा ने की। प्रो. बूटा सिंह बरार ने पंजाबी व्याकरण के सैद्धांतिक दृष्टिकोण और डॉ. नक्षत्तर सिंह ने स्नातक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में निर्धारित व्याकरण के सभी पहलुओं पर चर्चा की। प्रो. सांघा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पंजाबी भाषा के ध्वन्यात्मक प्रणाली की व्याख्या की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. दर्शन सिंह ने की तथा प्रो. गुरपाल सिंह व प्रो. उमा सेठी ने भी पंजाबी व्याकरण के मानकीकरण की आवश्यकता पर बल दिया।

अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के

सदस्य प्रो. जसपाल कौर कांग ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि साहित्य अकादेमी ने पहली बार व्याकरण शास्त्रियों को एक मंच पर एकत्र किया है जिन्होंने पंजाबी व्याकरण के मानकीकरण पर विचार-विमर्श किया।

गत 25 वर्षों में मराठी बाल साहित्य में प्रयोगों का मूल्यांकन

27 जनवरी 2017, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा '25 वर्षों के मराठी बाल साहित्य में प्रयोगों का मूल्यांकन' विषयक परिसंवाद का आयोजन अकादेमी के सभागार में 27 जनवरी 2017 को किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए लेखकों को बाल लेखन करते समय सच को उजागर करने का आह्वान किया। प्रसिद्ध मराठी साहित्यकार श्री राजीव तांबे ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि बाल साहित्य मनोरंजन तक सीमित नहीं होना चाहिए, इसे शिक्षा का माध्यम भी होना चाहिए।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध मराठी लेखक श्री सूर्यकांत सर्राफ़ ने किया। सर्वश्री दयानंद आसोलकर, आबा महाहन एवं एकनाथ अवहद ने आलेख प्रस्तुत किए। आलेखों में इस

सुश्री विद्या सुर्वे बोरसे अपना आलेख प्रस्तुत करती हुई

बात पर विशेष ज़ोर दिया गया था कि बाल साहित्य में कहानी बहुत पेचीदा नहीं होनी चाहिए तथा इसे अनुभवों एवं मान्यताओं से विकसित किया जाना चाहिए।

प्रसिद्ध मराठी पत्रकार एवं लेखक श्री महावीर जोंडले ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि बाल साहित्य को बंद कमरे में नहीं रखना चाहिए, इसे आगे बढ़ाया जाना चाहिए। इस सत्र में श्री विद्या सुर्वे बोरसे एवं पृथ्वीराज तौर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। उनका मानना था कि बाल साहित्य पर सूचना प्रौद्योगिकी की कमी है, यह भी सच है कि सोशल मीडिया ने बाल साहित्यकारों को एक साथ ला दिया है। कार्यक्रम में भारी संख्या में शोध छात्र, साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

गुरु गोबिंद सिंह

29 जनवरी 2017, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा सुप्रीम कौंसिल नवीं मुंबई गुरुद्वारा के सहयोग से पंजाबी के 10वें गुरु एवं संत कवि गुरु गोबिंद सिंह जी के 350 वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक परिसंवाद का आयोजन विष्णुदास भावे नाट्य गृह, वाशी, नवीं मुंबई में 29 जनवरी 2017 को किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि गुरु गोबिंद सिंह जी एक महान कवि थे और उन्होंने एक दर्जन से ऊपर अपने काव्य लेखन से पंजाबी साहित्य को समृद्ध किया है। वे एक अध्यात्मिक गुरु, योद्धा एवं दार्शनिक थे। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने बीज वक्तव्य दिया। अपने बीज वक्तव्य में उन्होंने कहा कि अकादेमी ने इस कार्यक्रम का आयोजन मात्र इसलिए नहीं किया है कि गुरु गोबिंद सिंह जी 10वें गुरु थे बल्कि उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा पंजाबी साहित्य को समृद्ध किया है। डॉ. विजय सतबीर सिंह ने उद्घाटन वक्तव्य दिया जबकि डॉ. जगबीर सिंह ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. जसपाल कौर कांग ने की। डॉ. हरबंस कौर सग्गू, डॉ. अमरजीत कौर घुम्मन और डॉ. वंदना शुक्ल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. हरभजन सिंह गिल ने की। डॉ. गुरबचन और डॉ. देविंदर पाल कौर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम में भारी संख्या में हिंदी, पंजाबी, मराठी के लेखक, कवि उपस्थित थे।

पूर्वोत्तरी भाषाओं पर मैथिली का प्रभाव

4 फ़रवरी 2017, पटना

साहित्य अकादेमी और चेतना समिति, पटना के संयुक्त तत्त्वावधान में 'पूर्वोत्तरी भाषाओं पर मैथिली का प्रभाव' विषयक परिसंवाद का आयोजन 4 फ़रवरी 2017 को पटना में किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए चेतना समिति के अध्यक्ष श्री विजय कुमार मिश्र ने भाषायी सद्भाव बढ़ाने की दृष्टि से भाषाओं के परस्पर संबंधों पर केंद्रित अकादेमी द्वारा आयोजित इस विमर्श को अध्येताओं और साहित्य-प्रेमियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण बताया। आरंभ में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि मैथिली भाषा के साथ अन्य भाषाओं के परस्पर संबंधों पर केंद्रित पाँच परिसंवाद आयोजित किए जाने की योजना है, जिनमें पठित आलेखों को बाद में पुस्तकाकार रूप दिया जाएगा।

विषय प्रवर्तन करते हुए अकादेमी के मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. वीणा ठाकुर ने पूर्वोत्तर की भाषाओं के पारस्परिक संबंधों और उन पर मैथिली के प्रभाव को रेखांकित किया। महाकवि विद्यापति के अवदानों

को व्याख्यायित करते हुए उन्होंने मिथिला का पूर्वोत्तर के क्षेत्रों से प्राचीन काल से अद्यावधि के संपर्कों की चर्चा की। साथ ही इस संपर्क से जन्मी सर्वथा नवीन भाषा ब्रजबुलि के प्रादुर्भाव की उपस्थापना करते हुए इसे विश्व की अलौकिक और प्रायः प्रथम घटना की संज्ञा दी। बीजभाषण करते हुए डॉ. वासुकीनाथ झा ने मैथिली भाषा-साहित्य का पूर्वोत्तर की भाषाओं पर कथ्य, स्वरूप, विधा और भाषागत प्रभावों को रखते हुए इसके मूल कारकों की चर्चा की। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. लेखनाथ मिश्र ने पूर्वोत्तर से मिथिला आनेवालों के वापस लौटने पर मस्तिष्क में संस्कृत और होठों पर मैथिली होने को बंगाल, ओड़िशा तथा असम के साहित्य को प्रभावित करने का हेतु बताया। डॉ. रमानंद झा रमण के संचालन में संपन्न उद्घाटन सत्र के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन चेतना समिति के सचिव श्री उमेश मिश्र ने किया।

परिसंवाद के विचार सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के भाषा सम्मान से विभूषित प्रो. मुनीश्वर झा ने की। इस सत्र में डॉ. भैरवलाल दास, श्री तारानंद वियोगी और श्री अशोक ने क्रमशः 'पूर्वोत्तर की भाषाओं के विकास की प्रेरणास्रोत मैथिली', 'पूर्वोत्तर की भाषाओं और मैथिली में शब्द और वैयाकरणिक साम्य' तथा 'पूर्वोत्तर भाषा के साथ मैथिली के अंतःसंबंध और विद्यापति' विषयक आलेखों का पाठ किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. मुनीश्वर झा ने कहा कि मैथिली का प्रभाव पूर्वोत्तर की भाषाओं पर निर्विवाद है और मैथिली के साथ बंगाल, ओड़िशा और असम को सिद्ध-साहित्य जोड़ता है।

मैथिली-असमिया परस्पर प्रभाव

5 फ़रवरी 2017, मधुबनी

साहित्य अकादेमी और नवारंभ प्रकाशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 'मैथिली-असमिया परस्पर प्रभाव' विषयक परिसंवाद का आयोजन 5 फ़रवरी 2017 को मधुबनी में किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए प्रतिष्ठित लेखक प्रो. भैरवेश्वर झा ने कहा कि मिथिला एवं असम का संबंध प्राचीन काल से ही रहा है। प्राचीन काल में लोग रोज़ी-रोज़गार की तलाश के लिए असम जाते थे। मिथिला से असम की यात्रा लोग आध्यात्मिक उद्देश्य से भी करते थे। जबकि असम से भी लोग शिक्षा ग्रहण करने के लिए मिथिला आते थे। यही कारण है कि मिथिला का प्रभाव असम में और असम का प्रभाव मिथिला में आसानी से देखा जा सकता है।

आरंभ में औपचारिक स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादमी के क्रिया-कलापों से लोगों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि अकादमी उन क्षेत्रों में साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है, जहाँ पहले कभी अकादमी द्वारा कार्यक्रम नहीं हुए थे।

विषय प्रवर्तन करते हुए साहित्य अकादमी की मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका वीणा ठाकुर ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में मैथिली साहित्य के प्रचार-प्रसार की ज़रूरत है। उन्होंने मैथिली असमी संबंध पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सनातन धर्म की शुष्कता के कारण कई धर्मों का उदय हुआ। इन धर्मों के कारण भी मैथिली-असमी का विकास हुआ और ये दोनों भाषाएँ एक-दूसरे के क़रीब आईं। उन्होंने बताया कि शंकरदेव पर विद्यापति का काफ़ी प्रभाव था। विद्यापति ने लोक भाषा में अपनी रचना की, जिस कारण विद्यापति का प्रभाव सिर्फ़ मिथिला पर नहीं, समूचे देश पर पड़ा। उन्होंने कहा कि शंकरदेव पर विद्यापति का इतना प्रभाव पड़ा कि जो असम पहले शाक्त भूमि थी, उसे उन्होंने वैष्णव धर्म में परिवर्तित किया। विद्यापति के अनुकरण से नई भाषा का जन्म हुआ। मैथिली व ब्रजबोली देश की पहली ऐसी भाषा है जिसे शास्त्रीय सहमति मिली। उन्होंने बताया कि भाषा का विकास गद्य से होता है लेकिन यह मैथिली का दुर्भाग्य है कि मध्यकाल में मैथिली में गद्य की रचना नहीं हुई।

परिसंवाद में बीज भाषण देते हुए मैथिली के वरिठ कवि उदयचंद्र झा विनोद ने कहा कि विद्यापति ने शाक्त - वैष्णव व शैव - तीनों पंथों में अपनी रचनाएँ की। यहीं से बाङ्ला, ओड़िया व असमिया का जन्म होता है। विद्यापति के लगभग सौ साल बाद शंकरदेव हुए। उन्होंने बताया कि रोजगार, अध्यात्म व अन्य कारणों से मिथिला व असम के बीच यात्राएँ हुई। इन यात्राओं के कारण दोनों के बीच रक्त संबंध बने, जिससे मिथिला व असम के बीच संबंध और प्रगाढ़ हुए।

सत्राध्यक्ष प्रो. श्रुतिधारी सिंह ने कहा कि दोनों भाषाओं का प्रवर्तन बौद्ध धर्म से हुआ। दोनों भाषाओं के विकास मे भक्ति आंदोलन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। भक्ति आंदोलन से पूर्वोत्तर की भाषाएँ काफ़ी प्रभावित हुईं। उन्होंने शंकरदेव की रचनाओं का उदाहरण देते हुए कहा कि शंकरदेव से मैथिली भी काफ़ी प्रभावित हुई। बाङ्ला, असमिया, ओड़िया और मैथिली सिस्टर लैंग्वेज हैं। इन भाषाओं के बीच आदान प्रदान बढ़ाने की ज़रूरत है। उद्घाटन सत्र का संचालन अजित आज़ाद ने किया। उन्होंने कहा कि मैथिली शब्द गुवा का अर्थ सुपारी होता है। पान का जो संबंध सुपारी के साथ होता है, वही संबंध मिथिला का असम के साथ है। संभवतः गुवा के बाज़ार को ही गुवाहाटी कहा गया हो।

परिसंवाद के विचार सत्र में तीन विद्वानों ने मैथिली-असमिया परस्पर प्रभाव पर अपने-अपने आलेखों का पाठ किया। डॉ. फूलचंद्र झा 'प्रवीण' ने अपने आलेख मे बताया कि मिथिला के मांगलिक कार्यों मे गुवा माला का काफ़ी महत्त्व है। गुवा असम से ही आता है। दोनों की लिपि में भी काफ़ी समानताएँ हैं। कई शब्दों के समान अर्थ हैं। उच्चारण के दृष्टिकोण से भी इन शब्दों मे समानताएँ है। सामाजिक व सांस्कृतिक समानता के बारे में तो सब जानते हैं। उन्होंने कहा कि असम के लोक-गीतों में बाराती आज भी जनकपुर आती है।

डॉ. अरविंद सिंह झा ने अपने आलेख में मैथिली एवं असमिया के भाषावैज्ञानिक संबंध को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि असमिया आज मैथिली से दूर चली गई है यह चिंता का विषय है। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. फूलचंद्र मिश्र रमण ने की। उन्होंने बताया कि असमिया एवं मैथिली की विकास यात्र साथ-साथ शुरू हुई थी, लेकिन हम लोगों ने अपनी दृष्टि का विकास साथ-साथ नहीं किया। आज असमिया एवं मैथिली के तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता है। इस सत्र का संचालन वीणा ठाकुर ने किया। परिसंवाद के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन करते हुए उन्होंने कहा कि सामाजिक गतिशीलता ने दोनों भाषाओं को प्रभावित किया। असम व मिथिला का संपर्क सदियों से रहा है। शंकरदेव ने भी विद्यापति के भाव को प्रसारित किया। असम में विद्यापति को वैष्णव कवि माना गया। अंकिया नाट्य में मैथिली का अनुसरण किया गया है। वैष्णव साहित्य को व्यापक बनाने में मैथिली की अहम भूमिका है।

अन्य कार्यक्रम

युवा लेखक सम्मिलन

7-8 जनवरी 2017, आदीपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ सिंधोलॉजी के सहयोग से अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन का आयोजन 7-8 जनवरी 2017 को आदीपुर में किया गया। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ सिंधोलॉजी के निदेशक श्री कमल निहलानी ने सम्मिलन का उद्घाटन किया। उन्होंने युवा लेखकों को निरंतर प्रोत्साहित करने और गंभीर साहित्यिक गतिविधियों में शामिल करने के लिए साहित्य अकादेमी को बधाई दी। अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. हुंदराज बलवानी ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि इस सम्मिलन में युवा लेखक विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता करेंगे तथा इसके बदले में उन्हें भाषा, साहित्य और शिक्षा के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास होगा।

सम्मिलन में 'मेरी प्रिय सिंधी पुस्तक', 'सिंधी भाषा के इतर अन्य भाषा की मेरी प्रिय पुस्तक' विषयों पर सत्र का विभाजन किया गया था तथा इन सत्रों के अतिरिक्त कहानी पाठ, कविता पाठ तथा नाट्य पाठ के सत्र भी थे। युवा सिंधी लेखक सुश्री संगीता खिलवानी, सुश्री रोशनी रोहरा, श्री मनोज चावला, सुश्री कोमल दयालानी, श्री जायश शर्मा, सुश्री रेखा पोहानी, श्री महेश खिलवानी ने विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता की। ग्यारह संभावित सिंधी लेखक, कवि सुश्री चंपा चेतनानी, सुश्री रोशन गोपलानी, सुश्री हीना अगनानी, सुश्री पूनम धनवानी, श्री हार्दिक तहेलवानी, सुश्री भारती सदारंगाणी, श्री मुरली भोजवानी, सुश्री गीता गोकलानी, सुश्री कोमल चंदनानी, एवं सुश्री सीमा भंभानी ने सम्मिलन में भाग लिया।

डॉ. हुंदराज बलवानी ने समापन वक्तव्य दिया तथा धन्यवाद ज्ञापन किया।

उद्घाटन वक्तव्य देते श्री कमल निहलाणी, बाएँ से : हुंदराज बलवाणी, प्रेम प्रकाश एवं साहेब बीजाणी

आदिवासी साहित्य : विभिन्न आयाम

11-12 फ़रवरी 2017, बल्लारपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा आदिवासी उलगुलान उत्कर्ष संस्था, बल्लारपुर के सहयोग से 'आदिवासी साहित्य : विभिन्न आयाम' विषय पर 11-12 फ़रवरी 2017 को दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन भालेराव पब्लिक स्कूल, बल्लारपुर, ज़िला चंदरपुर में किया गया।

आदिवासी उलगुलान उत्कर्ष संस्था के सलाहकार श्री सुनील कुमार ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा सम्मेलन के उद्देश्य एवं रूपरेखा पर प्रकाश डाला। अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के सदस्य श्री अक्षय कुमार काले ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि आदिवासी संस्कृति को आदिम युग संस्कृति माना जाना चाहिए और इसे मानव संस्कृति की विरासत माना जाता है। उन्होंने आगे कहा कि दलित और आदिवासी दोनों अलग अलग धाराएँ हैं। अकादेमी के मराठी परामर्श

अक्षय कुमार काले उद्घाटन वक्तव्य देते हुए

मंडल के एक अन्य सदस्य श्री विनायक तुमराम ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि आदिवासियों को जंगल का राजा होना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि नागरिक संस्कृति और आदिवासी संस्कृति के मध्य निरंतर टकराव है। उन्होंने घोषणा की कि आदिवासियों ने अब अपना धर्म और संस्कृति अपना लिया है। उद्घाटन सत्र का समापन आदिवासी उलगुलान उत्कर्ष संस्था के अध्यक्ष श्री संतोष आत्माराम के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

'वैश्वीकरण और आदिवासियों का प्रकृति क्षेत्र' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध आदिवासी कवि वहरु सोनवने ने की। उन्होंने आदिवासियों की जड़ों को तलाशने पर ज़ोर दिया। उन्होंने आगे कहा कि आदिवासियों का संबंध मानवता और समानता की संस्कृति से है। इस सत्र में सर्वश्री पीतांबर कोडपे, गोविंद गायकी और वसंत कांके ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन आलेखों में जनसंख्या और गर्मी से प्रकृति को बचाए रखने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया था।

'आदिवासी साहित्य : नए संदर्भ और धारणाएँ' विषयक दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध आदिवासी साहित्यकार श्री प्रमोद मुघाटे ने की। उन्होंने कहा कि आदिवासियों को अपने सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए नई प्रौद्योगिकियों से परिचित होना चाहिए। इस सत्र में सर्वश्री ईसादास भड़के, रामचंद्र वासेकर और वैशाली तुमराम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रस्तुत आलेखों में इस बात को रेखांकित किया गया था कि आदिवासी साहित्य मराठी साहित्य की साहित्यिक धारा का एक स्वतंत्र साहित्य है।

तीसरे सत्र का विषय था 'आदिवासियों की समस्याएँ – चुनौतियाँ : चिंता और चिंतन' तथा सत्र की अध्यक्षता श्री विद्याधर बंसोड ने की। उनका कहना था कि आदिवासी स्वदेशी लोग हैं और ब्रांडेड नहीं हैं। उन्हें जनजातियों के रूप में रेखांकित नहीं किया जाना चाहिए। इस सत्र में सर्वश्री नरेंद्र विट्ठल आटरम एवं प्रशांत सोनोने ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रस्तुत आलेख में आदिवसियों को शिक्षित करने पर ज़ोर दिया गया था।

चौथा और अंतिम सत्र काव्यगोष्ठी को समर्पित था तथा सत्र की अध्यक्षता श्री विनायक तुमराम ने की। सर्वश्री सुनील कुमरे, विजय सोरटे, बी.डी. आडे, विनोद मेश्राम, विजय मेश्राम, भीमसिंह पवार, खुशालदास कामदी, पांडुरंग कांबले, वेहरु सोनवने और रामकुमार मुसाने ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

श्री विनायक तुमराम ने समापन वक्तव्य दिया तथा श्री सुनील कुमरे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

युवा साहिति

5 फ़रवरी 2017, मधुबनी

साहित्य अकादेमी और नवारंभ प्रकाशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 5 फ़रवरी 2017 को मधुबनी में 'युवा साहिती' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें मैथिली के सात युवा कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया। इस सत्र की अध्यक्षता सतीश साजन ने की जबकि संचालन अजित आजाद ने किया। कवि दीप नारायण विद्यार्थी, नारायण झा, आनंद मोहन झा, प्रजापति ठाकुर, दयाशंकर मिथिलांचली, गोपाल झा अभिषेक, मैथिल प्रशांत ने अपनी कविताओं का पाठ किया। युवा कवियों की कविताओं में समय एवं समाज की विद्रूपता को प्रभावशाली ढंग से रखा गया। इन कविताओं में समय व समाज को बदलने की चाहत भी दिखी। कार्यक्रम में श्रोता के रूप में नेपाल से भी लोग आए हुए थे। इसमे कमल मोहन चुन्नू, प्रवीण नारायण चौधरी, डॉ. रानी झा, विनय विश्वबंधु, मलयनाथ मंडन, ऋषि वशिष्ठ आदि ने भी हिस्सा लिया।

बाल साहिति : 'बाल साहित्य की वर्तमान चुनौतियाँ' पर परिचर्चा

11 जनवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा नेशनल बुक ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के दौरान 11 जनवरी 2017 को 'बाल साहिती' कार्यक्रम के अंतर्गत 'बाल साहित्य की वर्तमान चुनौतियाँ' विषयक परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रतिष्ठित हिंदी बाल साहित्यकार और कार्टूनिस्ट श्री आबिद सुरती ने की। कार्यक्रम के आरंभ में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी द्वारा बाल साहित्य के क्षेत्र में की जा रही गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया और

बाएँ से : प्रकाश मनु एवं रश्मि नार्ज़री

कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में डॉ. प्रकाश मनु और डॉ. नागेश पांडेय संजय ने हिंदी बाल साहित्य के परिदृश्य को रेखांकित करते हुए वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में बच्चों को संवेदनशील बनाने पर ज़ोर दिया और बच्चों तक विभिन्न माध्यमों से साहित्य पहुँचाने की आवश्यकता बताई। अंग्रेज़ी की बाल साहित्य लेखिका श्रीमती रश्मि नार्ज़री और श्री अमरेंद्र चक्रवर्ती ने किशोरों के लिए अनुकूल बाल साहित्य रचे जाने की चुनौतियों पर अपने विचार व्यक्त किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री आबिद सुरती ने मनभावन चित्रों से बच्चों को लुभाकर साहित्य से उन्हें जोड़ने के अपने अनुभव साझा किए। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा एक ही जिल्द में प्रकाशित आबिद सुरती की चार कहानियों की चित्रमयी पुस्तक *मेरा नाम है* का लोकार्पण भी किया गया। इस दौरान अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव भी उपस्थित थे।

पूर्वोत्तरी

9 जनवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा नेशनल बुक ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के दौरान 9 जनवरी 2017 को 'पूर्वोत्तरी' कार्यक्रम के अंतर्गत बहुभाषी कविता-पाठ का आयोजन बोडो भाषा के प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री मंगलसिंह हाजोवारी की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम में लेइशङथेम रघु सिंह (मणिपुरी) और राहुल राई (नेपाली) ने अपनी कविताओं का पाठ पहले मणिपुरी भाषा में और फिर क्रमशः अंग्रेज़ी एवं हिंदी अनुवाद में प्रस्तुत की। चर्चित हिंदी कवि हेमंत कुकरेती ने भी अपनी कविताओं का पाठ किया। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री मंगल सिंह हाजोवारी ने पुस्तक मेले के दौरान इस तरह के बहुभाषी आयोजन के लिए अकादेमी का आभार प्रकट किया तथा कहा कि ऐसे अवसर भाषायी सद्भाव को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने अपनी लोकधुन पर आधारित अपने कुछ बोडो गीतों के साथ कविताओं का पाठ हिंदी अनुवाद में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

ग्रामालोक

11 फ़रवरी 2017, ममालदे, जलगाँव

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा ग्राम विकास संस्था ममालदे के सहयोग से ग्रामालोक कार्यक्रम का आयोजन 11 फ़रवरी 2017 को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. भालचंद्र नेमाड़े ने की।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि अकादेमी द्वारा अपने कार्यक्रमों की शृंखला में ग्रामोलोक कार्यक्रम का शुभारंभ 2 अक्टूबर 2016 को किया गया है जिसका उद्देश्य साहित्य को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाना है।

कार्यक्रम में उभरते हुए मराठी रचनाकार श्री गोपीचंद ढागर, श्री नामदेव कोली, श्रीमती सीमा भारंबे, श्रीमती पुष्पलता ज्वाले, श्री असीम तड़वे एवं श्रीमती योगिता पाटिल ने कार्यक्रम में भाग लिया। सम्मिलित प्रतिभागियों ने अपनी कविताओं एवं कहानियों का पाठ किया।

प्रो. नेमाड़े ने साहित्य अकादेमी द्वारा आरंभ किए गए नए कार्यक्रम ग्रामालोक की सराहना करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के उभरती हुई प्रतिभाओं को एक मंच मिलेगा। श्री नेमाड़े ने प्रस्तुत रचनाओं की प्रशंसा की। ग्राम विकास संस्था की सचिव श्रीमती पाटिल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यशाला – हिंदी-अंग्रेज़ी कहानी अनुवाद

9-11 फ़रवरी 2017, चंडीगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा एक तीन दिवसीय हिंदी-अंग्रेज़ी कहानी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन 9-11 फ़रवरी 2017 को चंडीगढ़ में किया गया। कार्यशाला में श्री माधव कौशिक (हिंदी) और श्री अनिल रैना (अंग्रेज़ी) विशेषज्ञ के रूप में तथा प्रो. मंजू जैदका कार्यशाला की निदेशक थीं।

अनुवाद कार्यशाला में कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, राजी सेठ, मंजुल भगत, मृदुला गर्ग, मधु कांकरिया, जया जादवानी, ममता कालिया, ज्योत्स्ना मिलन, सूर्यबाला, चित्रा मुद्गल, सुधा अरोड़ा, नासिरा शर्मा, और सारा राय की कहानियों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया गया। प्रतिभा नागपाल, चंद्रकिरण, रोशन शर्मा, पूजा राव, सुनीता पटनायक, कीर्ति कालिया, परमिंदर सिंह और सनैना जैन अनुवादक के रूप में सम्मिलित हुए।

पुस्तक समीक्षा

4 फ़रवरी 2017, पटना

साहित्य अकादेमी और चेतना समिति, पटना के संयुक्त तत्त्वावधान में पुस्तक चर्चा को लेकर शुरू की गई नई कार्यक्रम शृंखला 'पुस्तक समीक्षा' की

पहली कड़ी का आयोजन 4 फ़रवरी 2017 को पटना में किया गया। इस कार्यक्रम में मैथिली के प्रतिष्ठित आलोचक डॉ. मोहन भारद्वाज ने अकादेमी द्वारा सद्यः प्रकाशित आलोचना पुस्तक 'मैथिली उपन्यासक विकास' की समीक्षा प्रस्तुत की। यह पुस्तक अकादेमी द्वारा आयोजित संगोष्ठी में पठित आलेखों का पुस्तक रूप है। जिसका संपादन डॉ. अशोक अविचल ने किया डॉ. भारद्वाज ने मैथिली उपन्यास के विकास क्रम पर दृष्टिपात करते हुए पुस्तक की समीक्षा की। पुस्तक में मैथिली उपन्यास की विकास-यात्रा के विविध आयामों को समेटने तथा समीक्षात्मक विमर्श को उन्होंने पाठकों तथा अध्येताओं के लिए काफ़ी उपादेय माना। इस मौक़े पर उपस्थित साहित्यकारों ने पुस्तक से संबंधित कतिपय जिज्ञासाएँ भी कीं, जिनका यथोचित समाधान उन्होंने किए।

मेरे झरोखे से

5 फ़रवरी 2017, मधुबनी

साहित्य अकादेमी और नवारंभ प्रकाशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम के अंतर्गत चर्चित मैथिली कवि-पत्रकार श्री अमलेंदु शेखर पाठक ने 5 फ़रवरी 2017 को मधुबनी में प्रख्यात मैथिली आंदोलनकर्मी और साहित्यकार प्रो. सुरेश्वर झा के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बचपन से मृत्युपर्यंत के अपने लंबे संबंधों को संदर्भित करते हुए बताया कि स्व. झा के अंदर काम के प्रति जुनून हमेशा रहता था। उन्होंने साहित्य के अंदर कई परंपराओं को ध्वस्त किया। शुरू में लोग उनकी काफ़ी आलोचना करते थे लेकिन उन आलोचनाओं की उन्होंने कभी परवाह नहीं की, बल्कि इससे उनकी साहित्यिक जड़ें काफ़ी गहरी होती गईं। उनकी रचनाओं में अंतर्मन की पीड़ा है। उन्होंने अपनी रचनाओं में मिथिला मैथिली को विस्तार देने की कोशिश की।

व्यक्ति एवं कृति - श्री नरेंद्र झा

4 फ़रवरी 2017, पटना

साहित्य अकादेमी और चेतना समिति, पटना के संयुक्त तत्त्वावधान में आर्थिक मामलों के प्रतिष्ठित विशेषज्ञ और मैथिली लेखक श्री नरेंद्र झा के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन 4 फ़रवरी 2017 को पटना में किया गया। श्री झा ने विभिन्न महापुरुषों तथा मैथिली के लेखकों की उन पुस्तकों पर प्रकाश डाला, जिनसे वे सर्वाधिक प्रेरित-प्रभावित हुए। उन्होंने महापुरुषों की जीवनी तथा हरिमोहन झा सहित कतिपय अन्य मैथिली साहित्यकारों की पुस्तकों तथा मिथिला के विद्वानों की सेवा को अपने लेखन का आधा बताया। मातृभूमि और मातृभषा के प्रति महापुरुषों के समर्पण ने उन्हें विशेष प्रेरणा दी, जिसके कारण उनका व्यक्तित्व विकसित हुआ और मिथिला क्षेत्र के आर्थिक विकास और जल प्रबंधन जैसे मुद्दों पर वे पुस्तकें लिख पाए।

लेखक से भेंट - चंपा शर्मा

16 जनवरी 2017, जम्मू

साहित्य अकादेमी द्वारा जम्मू एंड कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के सहयोग से लेखक से भेंट कार्यक्रम के अंतर्गत प्रसिद्ध डोगरी

श्रीमती चंपा शर्मा

लेखिका सुश्री चंपा शर्मा के साथ कार्यक्रम का आयोजन 16 जनवरी 2017 को अभिनव थियेटर में किया गया।

साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. ललित मगोत्रा ने आमंत्रित लेखिका और अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रो. शर्मा ने पचास वर्ष से अधिक समय से डोगरी भाषा और साहित्य के विकास और उत्थान में महत्त्वपूर्ण ढंग से योगदान दिया है। प्रो. शर्मा ने रचनात्मक लेखन के अपने अनुभवों को उपस्थित श्रोताओं के साथ साझा किया। उन्होंने अपनी कुछ नवीनतम कविताओं का पाठ भी किया। जम्मू-कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट् एंड कल्चर के अतिरिक्त सचिव डॉ. अरविंदर सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

लेखक से भेंट - मालचंद तिवाड़ी

20 जनवरी 2017, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रसिद्ध राजस्थानी लेखक मालचंद तिवाड़ी के साथ लेखक से भेंट कार्यक्रम का आयोजन 20 जनवरी 2017 को कोलकाता में

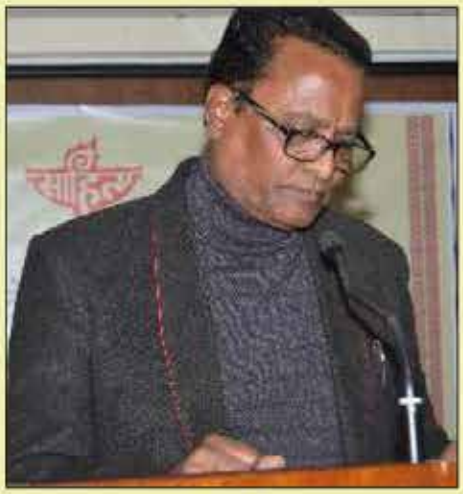

श्री मालचंद तिवाड़ी

किया गया। साहित्य अकादेमी की उपसचिव सुश्री गीतांजलि चटर्जी ने आमंत्रित लेखक एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री तिवाड़ी का परिचय दिया। श्री तिवाड़ी ने मुखर ढंग से अपने

बचपन की यादों से जुड़ी किताबों से जुड़ी कई बातों को साझा किया। उन्होंने बताया कि उनका साहित्यिक जीवन 1980 में श्री डुंगरगढ़ आने के बाद आरंभ हुआ। उनकी पहली कहानी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा मुद्रित पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इस अवसर पर श्री तिवाड़ी ने अपनी कुछ कविताओं का पाठ भी किया। कार्यक्रम में भारी संख्या में लेखक, कवि एवं साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

लेखक से भेंट - बलदेव सिंह

27 जनवरी 2017, चंडीगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा पंजाब यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ़ ओपन लर्निंग, पंजाबी विभाग के सहयोग से 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम के अंतर्गत वरिष्ठ पंजाबी लेखक श्री बलदेव सिंह के साथ 27 जनवरी 2017 को यूनिवर्सिटी के सेमिनार हॉल में आयोजित किया गया। अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. जसपाल कौंग ने आमंत्रित लेखक और अतिथियों का स्वागत किया तथा श्री बलदेव सिंह का परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि बलदेव जी साहित्य के क्षेत्र में बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति हैं, उन्होंने 17 उपन्यास,13 कथा-संग्रह, नाटक, गद्य, आत्मकथा और यात्रा-वृत्तांत लिखे हैं।

श्री बलदेव सिंह ने उपस्थित श्रोताओं, छात्रों एवं अध्यापकों से अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में बात करते हुए कहा कि उन्होंने भारत के विभिन्न शहरों की सड़कों से अपनी यात्रा प्रारंभ की और साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त करने तक पहुँचे हैं। उन्होंने आगे कहा कि एक ड्राइवर के पेशे के अपने अनुभवों को उन्होंने अपने लेखन में चित्रित किया है। श्री सिंह ने बताया कि किस प्रकार अपनी रचनाओं में उन्होंने समाज के पिछड़े वर्ग को चित्रित किया है। कार्यक्रम में उपस्थित शोध छात्रों ने लेखक से उनके लेखन संबंधी कई प्रश्न पूछे जिनके उत्तर श्री सिंह ने सहजता से दिए।

कार्यक्रम में भारी संख्या में लेखक, कवि, शोध छात्र तथा मीडिया के लोग उपस्थित थे।

लेखक से भेंट - भीमनाथ झा

4 फ़रवरी 2017, पटना

साहित्य अकादेमी और चेतना समिति, पटना के संयुक्त तत्त्वावधान में मैथिली के प्रतिष्ठित कवि-आलोचक डॉ. भीमनाथ झा के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन 4 फ़रवरी 2017 को पटना में किया गया। अकादेमी के मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. वीणा ठाकुर ने आरंभ में भीमनाथ झा का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके अवदान को रेखांकित किया। इस अवसर पर डॉ. भीमनाथ झा ने अपनी जीवनी, परिजन-पुरजनों के स्नेह आदि विषय को रखते हुए अपने जीवन और लेखन के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने जन्म-स्थान मधुबनी ज़िला के कोइलख गाँव में जन्म लेने से लेकर साहित्य-लेखन की ओर प्रस्थान, मिथिला मिहिर पत्रिका के संपादन से संबद्ध होने और कालांतर में मैथिली प्राध्यापन से जुड़ने तक की यात्रा का बखान किया। अनेक खट्टे-मीठे संस्मरणों को साझा करते हुए उन्होंने अपनी कुछ कविताओं का पाठ भी किया। इस अवसर पर वीरेंद्र झा, कुणाल, इंद्रकांत झा, श्याम दरिहरे, अशोक, कमलमोहन ठाकुर, श्यामानंद चौधरी आदि अनेक लेखकों, साहित्यप्रेमियों ने अपने प्रिय लेखक से उनके साहित्यिक जीवन से जुड़े सवाल भी किए, जिनके प्रत्युत्तर डॉ. झा ने दिए।

कविसंधि - देवकांत मिश्र

5 फ़रवरी 2017, मधुबनी

साहित्य अकादेमी और नवारंभ प्रकाशन के संयुक्त तत्वावधान में 'कविसंधि' कार्यक्रम के अंतर्गत वरिष्ठ मैथिली कवि श्री देवकांत मिश्र के कविता-पाठ का आयोजन 5 फ़रवरी 2017 को मधुबनी में किया गया। देवकांत मिश्र ने अपनी कविताओं का पाठ किया। उन्होंने विभिन्न मूड की कविताएँ सुनाई। 'भैया जागऽ हौ', 'निज मैथिली मात भाषा', 'हे माय हमर ताक एमहर' आदि रचनाएँ काफ़ी सराही गईं। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से भारत-पाक संबंध पर भी हमला किया और चीन की छद्म नीतियों की भी जमकर आलोचना की। उनकी कविताओं में बाढ़, पलायन को भी रेखांकित किया गया था।

साहित्य मंच - सिंगरावेलर : सामाजिक दृष्टिकोण एवं रचनात्मक कार्य

4 जनवरी 2017, चेन्नै

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा मद्रास यूनिवर्सिटी के तमिळ विभाग के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम के अंतर्गत 'सिंगरावेलर : सामाजिक दृष्टिकोण एवं रचनात्मक कार्य' विषयक कार्यक्रम का आयोजन 4 जनवरी 2017 को प्लैटिनम जुबली ऑडिटोरियम में किया गया। तमिळ डेवलपमेंट विभाग के प्रो. वाय मणिकंदन ने अतिथियों का स्वागत किया। मद्रास यूनिवर्सिटी के तमिळ विभागाध्यक्ष प्रो. एल. बालू ने अतिथियों का अभिवादन किया। श्री वी. आरसू ने सिंगरावेलर के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बात की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार सिंगरावेलर ने जनता के बीच तर्कसंगतता फैलाने के लिए अज्ञानता और भ्रम को दूर करने की चुनौती दी थी। श्री एस. सेंथिलनाथन ने सिंगरावेलर की सांस्कृतिक भूमिका पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि सिंगरावेलर एक ऐसे प्रगतिशील नेता थे जो स्पष्ट छिपे हुए मानवीय बुद्धि के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने के लिए आवाज़ उठाते थे। श्री बी. वीरमणि ने सिंगरावेलर की प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनाओं के बारे में

बात की। उन्होंने उन पत्रिकाओं के बारे में बताया जिनमें सिंगारावेलर के विज्ञान, दर्शन, श्रमिक वर्ग एवं अन्य सामाजिक समस्याओं पर विचार प्रकाशित हुए थे। श्री सी. धनपाल ने सिंगारावेलर की ट्रेड यूनियन के आंदोलन की भूमिका पर लेख प्रस्तुत किया। उन्होंने सिंगारावेलर के श्रमिक वर्गों के मनोबल की रक्षा में अथक प्रयासों की चर्चा की। प्रो. वाय मणिकनंदन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच : तमिळ में आत्मकथाएँ

5 जनवरी 2017, कराइकल

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा अरिगनार अन्ना गवर्नमेंट आर्ट्स एवं साईंस कॉलेज कराइकल के सहयोग से 'तमिळ में आत्मकथाएँ' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन 5 जनवरी 2017 को कॉलेज परिसर में किया गया। साहित्य अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. सी. सेतुवती ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा आरंभिक वक्तव्य दिया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. पी. पुंगवनम ने प्रतिभागियों का अभिवादन किया। श्री के. पंचंगम ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा भारती के 'कानावू' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। अपने आत्मकथात्मक लेखन 'कानावू' में कवि ने दर्शन, प्रेम, प्रकृति और उनके समकालीनों पर विभिन्न कविताएँ लिखी थीं। डॉ. एस. माधवन ने नमक्कल कविगनार के 'एन कथा ई' पर आलेख प्रस्तुत किया। एक गाँधीवादी कवि नमक्कल कविगनार की आत्मकथा ने सामाजिक रहस्योपण का खुलासा किया, गाँधी के सिद्धांतों और भड़के देशभक्ति भावनाओं को व्यक्त किया। श्री के. सेकर ने तमिळ संत यू. वी. स्वामीनाथ अय्यर द्वारा लिखित आत्मकथात्मक लेखन 'एन. सरित रम' के बारे में बात की। प्रो. आई. सुसई ने कुंदरक्कुदी आदिगलार के 'मन्नम मनित्रग्लम' के बारे में बात की। डॉ. आर. कुरिजीवंदन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच - आदिवासी लेखक सम्मिलन

13 जनवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा नेशनल बुक ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के दौरान 13 जनवरी 2017 को 'साहित्य मंच' कार्यक्रम के अंतर्गत आदिवासी लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मीली भाषा के प्रतिष्ठित कवि-कथाकार श्री विश्राम वाल्वी ने की। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए आदिवासी भाषाओं के संवर्द्धन के लिए किए जानेवाले अकादेमी के प्रयासों का संक्षिप्त परिचय दिया। इस अवसर पर श्री श्यामचंद्र टुडु (संताली), श्रीमती जगमोहिनी बिरुली (हो), श्री उत्पल देववर्मा (काकबरोक), श्री उदय ज्योति चकमा (चकमा) तथा श्री गंगामोहन मिली (मिसिंग) ने अपनी भाषाओं में हिंदी-अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ अपनी कविताओं का पाठ किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री विश्राम वाल्वी ने आदिवासी संस्कृति के संरक्षण पर अपनी बात रखते हुए अपनी कविताओं का पाठ किया। पठित कविताओं में आदिवासी जीवन के संघर्ष और वर्तमान चुनौतियों को स्वर दिया गया था।

साहित्य मंच - परिचर्चा : साहित्य एवं स्थान

6 फ़रवरी 2017, किशनगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान के अंग्रेज़ी विभाग के सहयोग से साहित्य मंच के अंतर्गत 'साहित्य एवं स्थान' विषयक एक परिचर्चा का आयोजन 6 फ़रवरी 2017 को किशनगढ़ में किया गया। परिचर्चा का उद्देश्य लेखकों और आलोचकों को, विचारों, वास्तविकताओं, भाषा और संस्कृति के साथ

बाएँ से : गंगामोहन मिली, उत्पल देव वर्मा, उदय ज्योति चकमा, विश्राम वाल्वी, श्यामचंद्र टुडु एवं जगमोहिनी बिरुली

विचार-विमर्श और बातचीत करने के लिए एक मेज़ पर लाने के लिए था। वैश्वीकरण की प्रवृत्तियाँ, भारतीय अंग्रेज़ी में नए रुझान, साहित्य में रणनीतियों की विविधता और पाठक के रुख़ पर चर्चा इस फोरम द्वारा उपलब्ध कराया गया था।

सृजनात्मक लेखक अनुराधा मारवाह, मधु टंडन, अंजू ढड्ढा मिश्रा एवं प्रो. सुप्रिया अग्रवाल ने चर्चा में भाग लिया। साहित्य अकादेमी की अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. मालाश्री लाल ने परिचर्चा का संचालन किया।

साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। विश्वविद्यालय के कुलपति ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। परिचर्चा में भारी संख्या में छात्र, अध्यापक, लेखक, विचारक उपस्थित थे।

जनवरी-फ़रवरी 2017 के साहित्यिक आयोजन

जनवरी 2017

1 जनवरी 2017	आदीपुर	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ सिंधोलॉजी, आदीपुर के सहयोग से 'परमानंद मेवाराम जन्मशतवार्षिकी' परिसंवाद का आयोजन।
3 जनवरी 2017	गुंतूर, आंध्र प्रदेश	अमरावती साहिति मित्रुलु, गुंतूर के सहयोग से 'तेनुगुलेंका तुम्मल्ला सीता रामामूर्ति के लेखन' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
3 जनवरी 2017	गुंतूर, आंध्र प्रदेश	विख्यात तेलुगु कवि डॉ. बी. हनुमा रेड्डी के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
4 जनवरी 2017	चेन्नै	तमिळ विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय के सहयोग से 'सिंगरावेलर : समाजिक दृष्टिकोण एवं रचनात्मक कार्य' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
5 जनवरी 2017	कोलकाता	बीजन भट्टाचार्य जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन।
5 जनवरी 2017	कराइक्कल, तमिलनाडु	अरिग्नार अन्ना गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साईंस कॉलेज, कराइक्कल, तमिलनाडु के सहयोग से 'तमिळ में आत्मकथाएँ' विषय पर साहित्य मंच का आयोजन।
5 जनवरी 2017	मदुरै	थियागराजर कॉलेज, मदुरै के सहयोग से 'वेल्लै वारानानर' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
6 जनवरी 2017	गाँधीग्राम, तमिलनाडु	तमिळ विभाग, गाँधीग्राम रूरल इंस्टीट्यूट, गाँधीग्राम के सहयोग से 'तमिलनाडु के ज़िला साहित्यिक गज़ेटियर की तैयारी' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
7-8 जनवरी 2017	आदीपुर, कच्छ	इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ़ सिंधोलॉजी के सहयोग से 'अखिल भारतीय युवा सम्मिलन' का आयोजन।
7-15 जनवरी 2017	नई दिल्ली	नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के सहयोग से नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के अवसर पर अकादेमी द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन।
9 जनवरी 2017	नई दिल्ली	पूर्वोत्तर के वरिष्ठ लेखकों के साथ 'पूर्वोत्तरी - बहुभाषी लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
10 जनवरी 2017	नई दिल्ली	विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों के साथ 'युवा साहिति' कार्यक्रम का आयोजन।
11 जनवरी 2017	नई दिल्ली	बाल साहित्य लेखन में वर्तमान चुनौतियों पर 'परिचर्चा' का आयोजन।
12 जनवरी 2017	नई दिल्ली	विभिन्न भारतीय भाषाओं के मुख्य लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
13 जनवरी 2017	नई दिल्ली	विभिन्न आदिवासी भाषाओं के लेखकों के साथ 'आदिवासी लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
14 जनवरी 2017	नई दिल्ली	विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
9 जनवरी 2017	तिरुवरुर	तमिळ विभाग, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ तमिलनाडु के सहयोग से 'द्रविड़ियन काव्यशास्त्र' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
9 जनवरी 2017	मंगलोर	कन्नड विभाग, यूनिवर्सिटी कॉलेज, मंगलोर के सहयोग से 'कन्नड साहित्य में कन्नड साहित्यदा कोलु कोदुग का योगदान एवं स्वीकार्यता' विषय पर साहित्य मंच का आयोजन।
9 जनवरी 2017	भुवनेश्वर	राजधानी पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान ओड़िया के युवा लेखकों के साथ 'युवा लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
11 जनवरी 2017	नई दिल्ली	स्पेन से आए लेखक डॉ. गुलेरमो रोड्रिग्ज के साथ 'साहित्य मंच' का आयोजन।
14-15 जनवरी 2017	मुंबई	'सिंधी साहित्य में बदलता समाज' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।

15 जनवरी 2017	सावंतवाड़ी, महाराष्ट्र	श्रीराम वाचन मंदिर एवं सिंधुदुर्ग साहित्य संघ, सावंतवाड़ी के सहयोग से 'मराठी साहित्य में मूल्यांकन एवं प्रयोग' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
16 जनवरी 2017	जम्मू	जे. एंड. के. एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ डोगरी लेखिका सुश्री चंपा शर्मा के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
17 जनवरी 2017	कोलकाता	एपीजे कोलकाता लिट्रेरी फ़ेस्टिवल के सहयोग से अंग्रेज़ी लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
18-19 जनवरी 2017	कोलकाता	'भारतीय भाषाओं और साहित्य में शेक्सपीयर' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन।
19 जनवरी 2017	कोलकाता	स्पर्शदन दृष्टिहिंदर ब्रेल पत्रिका के सहयोग से 'ब्रेल पोएट्री फ़ेस्टिवल 2017' का आयोजन।
20 जनवरी 2017	कोलकाता	लब्धप्रतिष्ठ राजस्थानी लेखक श्री मालचंद तिवाड़ी के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
22 जनवरी 2017	मुंबई	लब्धप्रतिष्ठ मराठी लेखक एवं वैज्ञानिक प्रो. जयंत नार्लिकर के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
22 जनवरी 2017	अहमदाबाद	रंगाकरण थियेटर के सहयोग से 'सिंधी साहित्य में हास्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
22 जनवरी 2017	अहमदाबाद	रंगाकरण थियेटर के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ सिंधी लेखिका डॉ. कमला गोकलाणी के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
22 जनवरी 2017	हावड़ा	निक्वान के सहयोग से 'लोका : विविध स्वर' का आयोजन।
22-23 जनवरी 2017	इंफ़ाल, मणिपुर	'पैटि भाषा सम्मिलन' का आयोजन।
23 जनवरी 2017	कोलकाता	बाइला के प्रसिद्ध कवि आलोक सरकार पर 'साहित्य मंच' का आयोजन।
23 जनवरी 2017	नई दिल्ली	हिंदी, उर्दू एवं अंग्रेज़ी के लेखकों/कवियों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
24 जनवरी 2017	चंडीगढ़	गुरु नानक सिख स्टडी विभाग, पंजाब यूनिवर्सिटी के सहयोग से 'पंजाबी व्याकरण : सिद्धांत और अभ्यास' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
26-28 जनवरी 2017	गोवा	'कोंकणी-पंजाबी अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन।
27 जनवरी 2017	कोयंबटूर	अरुतचेल्वर डॉ. एन. महालिंगम ट्रांसलेशन इंस्टीट्यूट, पोलाशी के सहयोग से 'भाषांतर अनुभव' कार्यक्रम का आयोजन।
27 जनवरी 2017	मुंबई	'मराठी बाल साहित्य में प्रयोग' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
27 जनवरी 2017	पणजी, गोवा	इंस्टीट्यूट ब्रगंज़ा एवं उगतम मलाब के सहयोग से कोंकणी लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' का आयोजन।
27 जनवरी 2017	पणजी, गोवा	इंस्टीट्यूट ब्रगंज़ा एवं उगतम मलाब के सहयोग से कोंकणी के प्रसिद्ध नाट्यकर्मी श्री अरविंद काकोदकर के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन।
27 जनवरी 2017	चंडीगढ़	पंजाबी विभाग, यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ़ ओपन लर्निंग, पंजाब यूनिवर्सिटी के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ पंजाबी लेखक डॉ. बलदेव सिंह सड़कनामा के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
27 जनवरी 2017	कोलकाता	'बंगाली बाल साहित्य' पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
29 जनवरी 2017	तिरुर, केरल	थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट के सहयोग से 'भारतीय लेखन में बहुसंस्कृतिवाद' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन।
29 जनवरी 2017	मुंबई	सुप्रीम काउंसिल, नवी मुंबई के सहयोग से गुरु गोबिंद सिंह पर परिसंवाद का आयोजन।
29 जनवरी 2017	आदीपुर	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ सिंधोलॉजी, आदीपुर के सहयोग से प्रसिद्ध सिंधी लेखक हरि दरयानी दिलगीर पर संगोष्ठी का आयोजन।

31 जनवरी 2017	कत्तिलंगड़ी, केरल	अरबी विभाग, सैयद मोहम्मद अली साहिब टंगल मेमोरियल वुमन कॉलेज, कत्तिलंगड़ी के सहयोग से 'मलयाळम् साहित्य में मुस्लिम संस्कृति' विषयक साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
31 जनवरी 2017	गुरुवायूर, केरल	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, डीम्ड यूनिवर्सिटी, गुरुवायूर के सहयोग से 'अखिल भारतीय संस्कृत कवि गोष्ठी' का आयोजन।

फ़रवरी 2017

3 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	विख्यात विधिवेत्ता एवं भारत के पूर्व अटॉर्नी जेनरल श्री सोली जे. सोराबजी के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन।
3 फ़रवरी 2017	त्रिची, तमिलनाडु	बिशप हेबर कॉलेज, त्रिची के सहयोग से तमिळ के युवा लेखकों के साथ 'युवा साहिति' कार्यक्रम का आयोजन।
3-4 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	'तुलसीदास : पुनर्पाठ' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन।
4 फ़रवरी 2017	पटना	चेतना समिति, पटना के सहयोग से 'पूर्वोत्तर भाषाओं पर मैथिली साहित्य का प्रभाव' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
4 फ़रवरी 2017	पटना	चेतना समिति, पटना के सहयोग से प्रसिद्ध मैथिली लेखक डॉ. भीमनाथ झा के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
4 फ़रवरी 2017	पटना	चेतना समिति, पटना के सहयोग से वरिष्ठ ऑडिटर श्री नरेंद्र झा के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन।
4 फ़रवरी 2017	पटना	चेतना समिति, पटना के सहयोग से अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'मैथिली उपन्यास का विकास' पुस्तक के लोकार्पण का आयोजन।
4 फ़रवरी 2017	मुंबई	कन्नड विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
5 फ़रवरी 2017	रामानाथपुरम	रामानाथपुरम तमिळ संगम के सहयोग से 'समकालीन तमिळ उपन्यास में मिथकों का प्रभाव' विषय पर साहित्य मंच का आयोजन।
5 फ़रवरी 2017	मधुबनी, बिहार	नवरंभ मधुबनिक, मधुबनी, बिहार के सहयोग से 'मैथिली-असमिया साहित्य के एक दूसरे पर परस्पर प्रभाव' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
5 फ़रवरी 2017	मधुबनी, बिहार	नवरंभ मधुबनिक, मधुबनी, बिहार के सहयोग से वरिष्ठ मैथिली कवि डॉ. देवकांत मिश्र के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
5 फ़रवरी 2017	मधुबनी, बिहार	नवरंभ मधुबनिक, मधुबनी, बिहार के सहयोग से डॉ. अमलेंदु शेखर पाठक का प्रसिद्ध मैथिली साहित्यकार डॉ. सुरेश्वर झा पर 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम के अंतर्गत व्याख्यान।
5 फ़रवरी 2017	मधुबनी, बिहार	नवरंभ मधुबनिक, मधुबनी, बिहार के सहयोग से युवा मैथिली लेखकों के साथ 'युवा साहिति' कार्यक्रम का आयोजन।
6 फ़रवरी 2017	अजमेर, राजस्थान	सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ राजस्थान के सहयोग से 'साहित्य एवं स्थान' विषयक साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
6-7 फ़रवरी 2017	चेन्नै	तमिळ पेरेयम (तमिझ एकेडमी), एसआरएम यूनिवर्सिटी के सहयोग से 'दक्षिणी भारतीय साहित्य में नई प्रवृत्तियाँ' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
7 फ़रवरी 2017	जयपुर	यूनिवर्सिटी ऑफ़ राजस्थान, जयपुर के सहयोग से प्रख्यात विद्वान डॉ. जसबीर जैन का प्रसिद्ध अंग्रेज़ी

		लेखिका डॉ. अनिता देसाई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम के अंतर्गत व्याख्यान।
8 फ़रवरी 2017	पुणे	भाषा सम्मान कार्यक्रम का आयोजन।
9-11 फ़रवरी 2017	चंडीगढ़	'हिंदी-अंग्रेज़ी अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन।
10 फ़रवरी 2017	मंगलोर	कन्नड संघ, सेंट एग्नेस कॉलेज, मंगलोर के सहयोग से 'आधुनिक कन्नड महिला साहित्य : वर्तमान पक्ष' विषयक साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
10-11 फ़रवरी 2017	पोर्टब्लेयर	जवाहर लाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय, पोर्टब्लेयर के सहयोग से 'भारत में आदिवासी साहित्य और मौखिक अभिव्यक्तियाँ' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
11 फ़रवरी 2017	त्रिची	तमिळ विभाग, सेंट जोसेफ़ कॉलेज, त्रिची के सहयोग से 'युवा लेखकों का समकालीन लेखन एवं चुनौतियाँ' विषयक साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
11 फ़रवरी 2017	जलगाँव, महाराष्ट्र	ग्राम विकास शिक्षण संस्थान, ममलाड के सहयोग से 'ग्रामालोक' कार्यक्रम का आयोजन।
11-12 फ़रवरी 2017	बलारपुर, महाराष्ट्र	आदिवासी उर्गलान उत्कर्ष संस्था के सहयोग से 'आदिवासी साहित्य : विभिन्न आयाम' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
12 फ़रवरी 2017	कडपा, आं.प्र.	गदियारम साहिति पीठम, जवलमड्डुगु, कडपा के सहयोग से 'प्रमुख तेलुगु क्लासिक प्रबंध : एक पुनर्मूल्यांकन' विषयक साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
14 फ़रवरी 2017	करईकुडी, तमिलनाडु	अलगप्पा यूनिवर्सिटी, करईकुडी के सहयोग से ए.चंद्रबोस पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
14-16 फ़रवरी 2017		लंदन पुस्तक मेला में साहित्य अकादेमी की सहभागिता जिसमें चार वरिष्ठ भारतीय लेखकों प्रो. एस.एल. भैरप्पा, डॉ. वाई.डी. थोङ्ची, श्री कुलाधर सैकिया एवं सुश्री अरुंधती सुब्रह्मण्यम ने भाग लिया सचिव साहित्य अकादेमी एवं उपसचिव (प्रशासन) ने फ्रैंक्फर्ट, जर्मनी के पुस्तक मेले में आयोजित साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लिया।
15 फ़रवरी 2017	तिरुपति	ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, एस.वी. यूनिवर्सिटी के सहयोग से 'तेलुगु में क्षेत्री साहित्य' विषयक साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
15 फ़रवरी 2017	अहमदाबाद	गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के सहयोग से प्रसिद्ध गुजराती कवि डॉ. चंद्रकांत टोपीवाला के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
15 फ़रवरी 2017	अहमदाबाद	गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के सहयोग से प्रसिद्ध गुजराती कवि श्री बिपिन पटेल के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
16 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	मराठवाड़ा मित्रमंडल कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स, पुणे के मास कम्यूनिकेशन एवं जर्नलिज़्म विभाग के 35 छात्रों का एक प्रतिनिधिमंडल का सचिव, साहित्य अकादेमी के साथ अकादेमी की गतिविधियों से संबंधित संवाद।
17 फ़रवरी 2017	मुंबई	प्रसिद्ध मराठी कवयित्री डॉ. नीरजा के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
17 फ़रवरी 2017	न्यू विलापुरम	'ग्रामालोक' कार्यक्रम का आयोजन।
17-18 फ़रवरी 2017	संबलपुर, ओड़िशा	ओड़िया विभाग, संबलपुर विश्वविद्यालय के सहयोग से 'भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में जीवन कथाएँ' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
18 फ़रवरी 2017	नेल्लोर, आं.प्र.	एसपीएसआर नेल्लोर डिस्ट्रिक्ट राइटर्स एसोसिएशन के सहयोग से साहित्य मंच का आयोजन।
18 फ़रवरी 2017	नित्ते, कर्नाटक	डिपार्टमेंट ऑफ़ लैंग्वेजेज़, डॉ. नित्ते शंकर मेमोरियल फ़र्स्ट ग्रेड कॉलेज के सहयोग से साहित्य मंच का आयोजन।

20 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	मिज़ोरम यूनिवर्सिटी, आइज़ोल के छात्रों के एक दल का सचिव, साहित्य अकादेमी के साथ अकादेमी की गतिविधियों से संबंधित संवाद।
21-26 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	अकादेमी का वार्षिक साहित्योत्सव 2017 का आयोजन जिसमें निम्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।
21 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन।
21-22 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	मातृभाषा दिवस पर 'मातृभाषा संरक्षण' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
21 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	भाषा सम्मान कार्यक्रम का आयोजन।
21 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	कला वारसो ट्रस्ट, भुज, कच्छ द्वारा कच्छी संगीत की प्रस्तुति।
22 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	प्रसिद्ध भारतीय अंग्रेज़ी लेखिका सुश्री रूपा बाजवा के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
22 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 अर्पण समारोह का आयोजन।
22 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	प्रसिद्ध नृत्यांगना सुश्री संध्या पुरेचा द्वारा भरतनाट्यम की प्रस्तुति।
23 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	लेखक सम्मिलन जिसमें पुरस्कार प्राप्त लेखकों ने अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए।
23 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	'युवा साहिति : नई फ़सल' युवा रचनाकारों का युवा साहिति सम्मेलन।
23 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. रामचंद्र गुहा का 'ऐतिहासिक जीवनी का शिल्प' विषय पर संवत्सर व्याख्यान।
23 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस एकेडमी, इंफ़ाल द्वारा 'लाई हारोबा, माव और काबुई नृत्य की प्रस्तुति।
24 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	'आमने सामने' कार्यक्रम का आयोजन।
24 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	पूर्वोत्तर एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन का आयोजन।
24 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	राजा हसन, अगरतला, त्रिपुरा द्वारा बाउल गान की प्रस्तुति।
24-26 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	'लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन।
25 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	'आदिवासी लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
25 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	'आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ' कार्यक्रम का आयोजन।
25 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	बादोली संताली कल्चरल टीम, दुमका द्वारा संताली नृत्य की प्रस्तुति।
26 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	'भारत की अलिखित भाषाएँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
26 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली	'अनुवाद : पुनर्कथन के रूप में' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
24-25 फ़रवरी 2017	शिलांग	नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी (नेहु) के सहयोग से 'अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन।
24-26 फ़रवरी 2017	शांतिनिकेतन एवं कोलकाता	अब्रितिलोक, कोलकाता एवं विश्वभारती यूनिवर्सिटी के सहयोग से 'कविता उत्सव' का आयोजन।
27 फ़रवरी 2017	गुवाहाटी	गुवाहाटी यूनिवर्सिटी के असमिया विभाग के सहयोग से प्रसिद्ध असमिया कथाकार डॉ. देवव्रत दास के साथ 'कथासंधि' का आयोजन।
28 फ़रवरी 2017	इंफ़ाल	मणिपुरी स्टेट कला एकेडमी के सहयोग से 'एल. समरेंद्र सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पर परिसंवाद का आयोजन।
28 फ़रवरी 2017 - 1 मार्च 2017	तुरा, शिलांग	ए. शिक लिट्रेरी सोसायटी एवं गैरो व अंग्रेज़ी विभाग, तुरा के सहयोग से 'पूर्वोत्तर भारत में आदिवासी साहित्य के रूझान' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।

नए प्रकाशन

डोगरी

बेदी दब्बी
ले.: रवींद्रनाथ टैगोर, अनु.: छत्रपाल
पृ. 258 रु. 350/-
ISBN: 978-81-260-5257-8

रामनाथ शास्त्री (विनिबंध)
ले.: वीना गुप्ता
पृ. 128 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5120-5

यश शर्मा (विनिबंध)
ले.: बिशन सिंह दर्दी
पृ. 84 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5121-2

अंग्रेज़ी

अर्धनारीश्वर (अ.पु. हिंदी उपन्यास)
ले.: विष्णु प्रभाकर अनु.: श्रीकांत खरे
पृ. 516 रु. 500/-
ISBN: 978-81-260-4565-5

के. अयप्पा पाणिकर (चयनित निबंध)
सं.: के. सच्चिदानंदन
पृ. 270 रु. 250/-
ISBN: 978-81-260-4755-0

किरत बबाणी (विनिबंध)
ले.: मोहन गेहाणी
पृ. 80 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5256-1

नेशनल बिब्लोग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन लिट्रेचर (1954-2000 (अंक XI, खंड I - संस्कृत)
प्र.सं.: ज़ेड. ए. बर्नी
पृ. 426 रु. 700/-
ISBN: 978-81-260-5230-1

रिफ़्लेक्शन (अ.पु. डोगरी निबंध)
ले.: ललित मगोत्रा
अनु.: सुमन के. शर्मा
पृ. 168 रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-5234-9

अन-रिट्टेन लैंग्वेजेज़ ऑफ़ इंडिया (आदिवासी साहित्य)
सं.: अन्विता अब्बी
पृ. 232 रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-5266-0

गुजराती

हूँ आम घड़यो
ले.: भालचंद्र मुंगेरकर
अनु.: अश्विनी एस. बापट
पृ. 228 रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-4921-6

हिंदी

भोजपुरी (सहभाषा श्रृंखला)
ले.: नागेंद्र प्रसाद सिंह
पृ. 110 रु. 80/-
ISBN: 978-81-260-5179-3

गवाएँ कजरी मल्हार नैहरवाँ
च. एवं सं.: अर्जुनदास केसरी
पृ. 394 रु. 350/-
ISBN: 978-81-260-5274-5

कश्मीरी की प्रतिनिधि कहानियाँ
सं.: गौरीशंकर रैना
पृ. 184 रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-5075-8

लालन शाह फ़क़ीर के गीत
च. एवं अनु.: मुचकुंद दूबे
पृ. 376 रु. 500/-
ISBN: 978-81-260-5273-8

मन्नन द्विवेदी गजपुरी (विनिबंध)
ले.: बृजराज सिंह
पृ. 128 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5276-9

मीराबाई (विनिबंध)
ले.: ब्रजेंद्र कुमार सिंहल
पृ. 120 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5058-1

मेरा नाम है (सचित्र बच्चों की कहानी)
ले.: आबिद सुरती
पृ. 84 रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-5077-2

पितांबरदत्त बड़थ्वाल रचना संचयन
सं.: विष्णुदत्त राकेश
पृ. 424 रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-5279-0

रामपंजवानी (विनिबंध)
ले.: जगदीश लक्षाणी
पृ. 88 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5270-7

साहित्य सिद्धांत विमर्श (भाग-1)
सं.: रीतारानी पालीवाल
पृ. 576 रु. 500/-
ISBN: 978-81-260-5081-9

साहित्य सिद्धांत विमर्श (भाग-2)
सं.: रीतारानी पालीवाल
पृ. 608 रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-5082-6

सेनापति (विनिबंध)
ले.: सुर्यप्रसाद दीक्षित
पृ. 117 रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5265-3

वायकम मोहम्मद बशीर (विनिबंध)
ले.: एम.एन. कर्शेरी
अनु.: के.एम. मालती
पृ. 120 रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5238-7

कश्मीरी

गोरा (उपन्यास)
ले.: रवींद्रनाथ टैगोर अनु.: रतनलाल जौहर
पृ. 584 रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-5245-5

मीर गुलाम रसूल नाज़की (विनिबंध)
ले.: अज़ीज़ हाजिनी
पृ. 106 रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5231-8

पीर गुलाम हसन शाह खोयहामी (विनिबंध)
ले.: अब्दुल अहद हाजिनी
पृ. 104 रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5232-5

कोंकणी

आगंतुक (गुजराती उपन्यास)
ले.: धीरुबेन पटेल, अनु.: ज्योति कुनकोलिंकर
पृ. 128 रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5131-1

चोननियाँ कोंकणी कहानियाँ
सं. वीना गुप्ता
पृ. 203 रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-5123-6

कल्क न्हिधुंक दिवचोना
(अ.पु. तेलुगु कविता संग्रह)
ले.: एन. गोपी, अनु.: रमेश बी. वेलुस्कर
पृ. 88 रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5263-9

कितने पाकिस्तान (अ.पु. हिंदी उपन्यास)
ले.: कमलेश्वर, अनु. हेमा नायक
पृ. 400 रु. 225/-
ISBN : 978-81-260-5124-3

मनिषखयारो
ले.: नानक सिंह, अनु.: पांडुरंग के. गवडे
पृ. 392 रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4924-0

मराठी

मरथर्नी (विनिबंध)
ले.: श्रीमन नारायणमूर्ति
अनु.: श्रीप्रसाद बवडेकर
पृ. 84 रु. 50/-
ISBN : 81-260-1772-4 (पुनर्मुद्रण)

गहन पड़लेला रग्घू (अ.पु. उपन्यास)
ले.: काशीनाथ सिंह
अनु.: कविता महाजन
पृ. 164 रु. 185/-
ISBN : 978-81-260-5268-4

महात्मा ज्योतिराव फुले (विनिबंध)
ले.: भास्कर भोले, अनु.: रमेश बी. वेलुस्कर
पृ. 112 रु. 50/-
ISBN : 81-7201-728-6 (पुनर्मुद्रण)

मैथिली

आधुनिक भारतीय कविता संचयन - हिंदी
सं.: विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
सहायक सं.: रेवती रमन अनु.: वीना ठाकुर
पृ. 248 रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5116-8

आधुनिक भारतीय कविता संचयन - सिंधी
सं.: वासदेव मोही अनु. : फूलचंद्र झा 'प्रवीण'
पृ. 208 रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5115-1

मैथिली प्रबंध काव्यक उद्भव वो विकास
सं.: वीना ठाकुर
पृ. 192 रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-5258-5

उमानाथ झा (विनिबंध)
ले.: विजय मिश्रा
पृ. 78 रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5117-5

नेपाली

नेपाली कविता यात्रा
सं.: मोहन ठाकुरी
पृ. 304 रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-5269-1

तिमी गयादेखि त्यो गाओ (नवोदय श्रृंखला)
ले.: प्रेमराज मंगराती
पृ. 86 रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5118-2

पंजाबी

धुआँ (अ.पु. उर्दू लघु कथाएँ)
ले.: गुलज़ार अनु.: जोगिंदर अमर
पृ. 190 रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5236-3

गाथा तिस्ता पार दी (अ.पु. बाङ्ला उपन्यास)
ले.: देवेस रे अनु.: नीलम शर्मा अंशु
पृ. 964 रु. 1100/-
ISBN: 978-81-260-5240-0

गुरु गोविंद सिंह (विनिबंध)
ले.: महीप सिंह अनु.: चंद्रमोहन सुनेजा
पृ. 116 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5244-8

इक सी गुथुनिया (बाल उपन्यास)
ले.: प्रकाश मनु अनु.: सरबजीत कौर सोहल
पृ. 108 रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-5246-2

कथा एक प्रांत दी (मलयाळम उपन्यास)
ले.: एस.के. पोट्टेकट अनु.: देवेंद्र संधु
पृ. 576 रु. 700/-
ISBN: 978-81-260-5239-4

मिलजुल मन (अ.पु. हिंदी उपन्यास)
ले.: मृदुला गर्ग अनु.: नछत्तर
पृ. 340 रु. 310/-
ISBN: 978-81-260-5221-9

सुब्रह्मण्य भारतीय दिया कवितावाँ
सं.: प्रेमा नंदकुमार अनु.: मोहनजीत
पृ. 244 रु. 350/-
ISBN: 978-81-260-5233-2

राजस्थानी

मेहा बीथु काव्य संचयी
(राजस्थानी दिंगल कविता)
सं. एवं सं.: गिरधर रत्नु 'दसोरी'
पृ. 228 रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-5108-3

तमिळ

कु. अज्ञागिरी सामी (विनिबंध)
ले.: वेली रंगराजन
पृ. 128 रु. 50/-
ISBN: 81-260-2207-8 (पुनर्मुद्रण)

नकूलन (विनिबंध)
ले.: ए. भूमिसेलवम
पृ. 128 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5262-2

मस्ती विरुकथइगल (अ.पु. कन्नड कहानी संग्रह)
ले.: मस्ती वेंकटेश अय्यंगर
अनु.: शेष नारायण
पृ. 144 रु. 120/-
ISBN: 81-260-1939-4 (पुनर्मुद्रण)

आर. चुडामणि (विनिबंध)
ले.: के. भारती
पृ. 128 रु. 50/-
ISBN: 81-260-5261-5

सूफ़ी मेगनानी गुननगुडी मस्तान साहिब (विनिबंध) ले.: यू. अली बावा
पृ. 144 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-3160-0 (पुनर्मुद्रण)

थर्नथे दुकाप्ता अनंदरंग पिल्लै नटकृप्पू
सं.: सुबाशु
पृ. 256 रु. 180/-
ISBN: 978-81-260-4195-4 (पुनर्मुद्रण)

तमिळ हाईकू आयीरम
सं.: ईरा मोहन
पृ. 144 रु. 120/-
ISBN: 978-81-260-2975-4 (पुनर्मुद्रण)

वा. वू. षी (विनिबंध)
ले.: मा. रा. आरसू
पृ. 128 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1713-2 (पुनर्मुद्रण)

वा. वे. सु. अय्यर (विनिबंध)
ले.: को. सेलवम
पृ. 143 रु. 50/-
ISBN: 81-260-0827-X (पुनर्मुद्रण)

उर्दू

बातों की फुलवारी (अ.पु. राजस्थानी लोककथाएँ)
ले.: विजयदान देथा अनु.: शीन काफ़ निज़ाम
पृ. 232 रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-5243-1

देवेंद्र सत्यार्थी (विनिबंध)
ले.: प्रकाश मनु अनु.: हसन मुसन्ना
पृ. 164 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5224-0

ग़यास अहमद गद्दी (विनिबंध)
ले.: नसीम अहमद नसीम
पृ. 124 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5229-5

इलियास अहमद गद्दी (विनिबंध)
ले.: हुमायूँ अशरफ़
पृ. 148 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5223-3

ख़्वाजा ग़ुलामुस्सैयदैन (विनिबंध)
ले.: रेयाज़ अहमद
पृ. 112 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5228-8

मिलजुल मन (अ.पु. हिंदी उपन्यास)
ले.: मृदुला गर्ग अनु.: हैदर जाफ़री सैयद
पृ. 324 रु. 350/-
ISBN: 978-81-260-5241-7

ख़ुतुत-ए शिब्ली (क्लासिक का पुनर्मुद्रण)
सं.: मोहम्मद अमीन ज़ुबेरी
पृ. 240 रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-5242-4

क़ुर्तुल ऐन हैदर (विनिबंध)
ले.: जमील अख़्तर
पृ. 148 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5222-6

सुदर्शन (विनिबंध)
ले.: नंदकिशोर विक्रम
पृ. 136 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5272-1

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386626/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

विक्रय कार्यालय
स्वाति, मंदिर मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23745297, 23364204
फ़ैक्स : 091-11-23364207
ई-मेल : sales@sahitya-akademi.gov.in

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400 014
दूरभाष : 022-24135744, 24131948
फ़ैक्स : 091-22-24147650
ई-मेल : rs.rom@sahitya-akademi.gov.in

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
4, डी.एल. खान मार्ग
कोलकाता 700 025
दूरभाष : 033-24191683, 24191705/06
फ़ैक्स : 091-33-24191684
ई-मेल : rs.rok@sahitya-akademi.gov.in

बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय
सेंट्रल कॉलेज परिसर
डॉ बी.आर.अम्बेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001
दूरभाष : 080-22245152
फ़ैक्स : 091-80-22121932
ई-मेल : rs.rob@sahitya-akademi.gov.in

चेन्नै कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443 (304)
अन्नासलाई, तेनामपेट, चेन्नै 600 018
दूरभाष : 044-24311741, 24354815
फ़ैक्स : 091-44-24311741
ई-मेल : chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

खुर्शीद आलम द्वारा संपादित तथा के.श्रीनिवासराव, सचिव द्वारा
साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001 के लिए प्रकाशित
एवं विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित